काराच्छन्न दीख रहा हो; पर यदि हम मन, वचन और
से उनको प्रत्यक्ष करने के लिए जुट जावेंगे, तो धीरे धीरे
ही हम उनकी सिद्धि कर सकेंगे। पर यहाँ हम यह कह
भूलेंगे कि केवल हम अभिलाषा ही करते रहेंगे और
सिद्धि के अर्थ कुछ भी प्रयत्न-परिश्रम—न करेंगे तो जल-
की तरह उनका उत्थान और पतन मन का मन ही में हो जाय

अभिलाषा तब ही फलोत्पादक होती है, जब वह दृढ़ नि
में परिणित कर दी जाती है। अभिलाषा का दृढ़ निश्चय के
सम्मेलन होने से उत्पादक शक्ति का प्रादुर्भाव होता है। फल
प्राप्ति तभी होती है जब अभिलाषा और दृढ़ निश्चय दोनों जु
काम करें।

हम हमेशा अपने विचारों के, मनोभावों के, और आ
के गुण प्रकृति के अनुसार अपनी कार्योत्पादक शक्ति को घ
घटाते रहते हैं। *यदि हम हमेशा पूर्णता का आदर्श अपने सा*
रक्खें, यदि हम हमेशा समझते रहें कि सर्व-शक्तिमान परम
के अंश होने से हम पूर्ण हैं, तो हमें वह स्वास्थ्यकर शक्ति
होगी जो हमारी रोग सम्बन्धी भावनाओं को एक दम कम
कर देगी।

बुरे विचारों से जीवन का नाश

तुम उसी बात को सोचो, उसी बात को अपनी ज़बान
निकालो जिसे तुम चाहते हो कि वह सत्य हो। बहुत से मनु
कहा करते हैं कि—"भाई! अब थक गये। बेकाम हो गये
अब परमात्मा हमें संभाल ले तो अच्छा हो।" वे इस रोने
रोते ... हैं कि हम बड़े अभागे हैं—कमनसीब हैं—हमा

ग्य फूट गया है-दैव हमारे विरुद्ध है, हम दीन हैं—गरीब हैं।
नने सिरतोड़ परिश्रम किया, उन्नत होना चाहा, पर भाग्य ने
में सहायता न दी। पर वे बेचारे इस बात को क्या जानें कि
स तरह के अन्धकारमय, निराशाजनक विचार रखने से—इस
ह का रोना रोने से—हम अपने हाथों अपने भाग्य को फोड़ते
-उन्नति रूपी कौमुदी को काले बादलों में ढँक देते हैं। वे यह
हीं जानते कि इस तरह के कुविचार हमारी शान्ति, सुख और
जय के घोर शत्रु हैं। वे यह बात भूले हुए हैं कि इस तरह के
चारों को मन से देश-निकाला देने ही में मंगल है। इसी से
विचारों को आत्मा में बैठाकर वे अपने हाथ अपने पैरों पर
ठाराघात कर रहे हैं। कभी एक क्षण के लिए भी अपने मन
इस विचार को स्थान मत दो कि हम बीमार हैं—कमजोर
(हाँ यदि आप बीमारी का तथा कमजोरी का अनुभव करना
हें तो भले ही ऐसे विचारों को अपने मन में स्थान दीजिए।)
योंकि इस तरह का विचार शरीर पर इनके आक्रमण होने में
हायता देता है। हम सब अपने विचारों ही के फल हैं। उच्च
हानता और पवित्रता के विचारों से हमें आत्म-विश्वास प्राप्त
ता है—ऊँची उठाने वाली शक्ति मिलती है और ऊँचे दर्जे
। साहस प्राप्त होता है।

यदि आप किसी खास विषय में अपनी अपूर्वता प्रकट करना
हते हैं तो आप अपने अभिलषित विषय में प्रथम आसनों को
प्रविष्ट हो जाइए और तब तक आप अपने अन्तःकरण
विचार भी मत हटाइए, जब तक आपको पद न
...हुए भी सन्देह नहीं है।

प्रत्येक जीव अपने आदर्श का अनुकरण करता है
के रंग में वह रंगा जाता है—आदर्श के अनुसार उसका
बन जाता है। यदि आप किसी मनुष्य के आदर्श को
चाहते हों तो उसके चरित्र को—स्वभाव को—देखिए, उ
आदर्श का आपको फौरन पता लग जायगा।

हमारे आदर्श ही हमारे चरित्र के संगठन-कर्ता हैं, इ
उन्हीं में वह प्रभाव है जो जीवन को वास्तविक जीवन में प
रात करता है। देखो! क्या ही आश्चर्य है कि जैसे हम
आदर्श होते हैं, जैसे हमारी मानसिक अभिलाषाएँ होती हैं, जै
हमारे हार्दिक भाव होते हैं, ठीक उन्हीं की झलक हमारे मु
मण्डल पर दिखाई देने लगती है। हो नहीं सकता कि इन
भाव हमारे चेहरे पर न झलके—इनका प्रतिबिम्ब हमारी आँखों
न दीखे। अतएव हमें अपने आदर्श को—अपने मनोभाव को
अपने विचार-प्रवाह को श्रेष्ठता और दिव्यता की ओर झुका हु
रखना चाहिए। हमें पूर्ण निश्चय और विश्वास कर लेना चाहि
कि निकृष्टता, दीनता, निर्बलता, आधिव्याधि, दरिद्रता औ
अज्ञान से हमारा कोई सरोकार नहीं। हमें इस बात का द
विश्वास होना चाहिए कि हमारे हाथ से हमेशा उत्तम ही कार्य
होगा कभी बुरा न होगा।

अहा! वह कौन सी दैवी वस्तु है—दिव्य पदार्थ है—जो
हमारी आत्मा को वास्तव में ऊँचा उठाता है—उसे आध्यात्मिकता
के आनन्दमय उच्च प्रदेश पर पहुँचाता है। आत्म बन्धुओ! यह
वह प्रभाव है जो हमारे दिव्य आदर्श से उत्पन्न होता है—

को लगा देने से संसार में बड़ी बड़ी सफलतायें हो
पड़ती हैं। आप उन पदार्थों की आशा कीजिए जो
आप यह आत्म-विश्वास कर लीजिए कि हमारे प्र
पूर्वक होने से हमें कोई उच्च, दिव्य और महान
होने वाला है और हम अपने जीवनोद्देश पर पहुँच रहे
इस विचार में मस्त हो जाइए कि हमारी शाश्वत उन्
है, और हमारी आत्मा का एक एक परमाणु दिव्यत
जा रहा है।

अभिलाषा और सफलता

बहुत से मनुष्य कहा करते हैं कि इस तरह के स्
जाने से-कल्पना ही कल्पना में रहने से-हम वास्तव
काम न कर सकेंगे। केवल हम मन ही के लड्डू खा
पर यह उनकी भूल है। हमारे कहने का यह आशय
आप हमेशा कल्पना स्रोत ही में घूमा करें, विचार ही
रह जावें, केवल मन ही के लड्डू खाया करें। किन्तु ह
का आशय यह है कि किसी काम को करने के पहले
को करने की दृढ़ इच्छा मन में करलें और सारी विच
को उस ओर झुका दें जिससे आपको बहुत ही अधिक
प्राप्त हो। मन के विचार को मन ही में लय न कर
दृश्य रूप में रखना अत्यन्त आवश्यक है, यह हम पहले
चुके हैं। पर हम इतना अब भी अवश्य कहेंगे कि ये
बड़ी ही कार्य सम्पादिकायें हैं-पवित्र हैं—ईश्वर ने दै
सिद्धि के लिए हमें ये शक्तियाँ दी हैं, जिससे कि हम
झलक देख सकें। इन्हीं की बदौलत - समय

पर कायम रह सकते हैं. जब कि हम असुविधा-ज
री परिस्थिति में कार्य करने को बाध्य किये गये हों।
वाई किले बनना नि सार नहीं है। हम पहले अपने
हें बनाते हैं—अभिलाषा में उन्हें चित्रित करते हैं—
बाहर उनकी नींव रखते हैं। कारीगर मकान बनाने के प
के नक्शे को अपने मन में स्थिर कर लेता है और फिर
अनुसार उस मकान को बनाता है। सुन्दर और भव्य म
ने के पहले वह अपने मानसिक क्षेत्र में उसकी सुन्दर
व्य इमारत खड़ी कर लेता है।

इसी तरह जो कुछ हम कार्य करते हैं, पहले उसकी
हमारे मन में होती है, और फिर वह दृश्य रूप में आता
हमारी कल्पनायें हमारी जीवन रूपी इमारत के मानचित्र हैं।
यदि हम उन कल्पनाओं को सत्य करने के लिए जी आ
प्रयत्न न करेंगे तो उनका मानचित्र मात्र ही रह जायगा।
यदि कारीगर मकान का केवल नकशा ही बनावे और उसे
रूप में प्रकट न करे अर्थात् उसके अनुसार मकान न बना
तो उसकी स्कीम उस नक्शे ही में पूरी हो जायगी।

सब बड़े आदमी जिन्होंने महत्ता प्राप्त की है—बड़े
पदार्थों की प्राप्ति की है—वे सब पहले उन सब अभिलषित प
के स्वप्न ही देखा करते थे। जितनी स्पष्टता से, जितने आग्र
जितने उत्साह से, उन्होंने अपने सुख स्वप्न की—आदर्श
सिद्धि में प्रयत्न किया उतनी उन्हें उसकी सिद्धि प्राप्त हुई।

तुम अपने आदर्शों को इसलिए मत छोड़ दो कि
प्रत्यक्ष रूप में सिद्ध होना तुम्हें नहीं दीखता है। तुम अपनी

शक्तियों का प्रवाह अपने आदर्श पर लगाकर उस पर मजबूती से जमे रहो। तुम उसे हमेशा प्रकाशित रक्खो। कभी उसे अन्धकारमय तथा मन्द मत होने दो। हमेशा तुम आनन्दप्रद नई अभिलाषा उत्पन्न हुए वायुमण्डल में रहो। वे ही पुस्तकें पढ़ो जो तुम्हारी अभिलाषा को प्रोत्साहन देती रहें; उन्हीं पुरुषों के पास उठो बैठो जिन्होंने वह काम किया है जिसकी तुम कोशिश कर रहे हो और जो सफलता के रहस्य को प्रत्यक्ष करना चाह रहे हों।

रात को सोने से पहले आप कुछ देर के लिए शान्तिपूर्वक बैठकर एकचित्त हो अपने आदर्श का विचार करो—विचार-सृष्टि में उसकी मूर्ति देखो और आनन्द में मग्न हो जाओ। तुम अपनी मनोकल्पना से स्वप्न में भी मत डरो क्योंकि वह मनुष्य उन्नति नहीं कर सकता—उसका पतन हो जाता है—जो अपने आदर्श के सुखमय स्वप्न नहीं देखता। स्वप्न की शक्ति तुम्हें इस वास्ते नहीं दी गई है कि तुम्हारे अन्दर डर पैदा करे। उसके पीछे सत्य छिपा हुआ है। यह एक अपूर्व देन है, जो दैवी खजाने से दैवी धन देती है और साधारण पुरुषों की श्रेणी से उठाकर असाधारण पुरुषों की श्रेणी में रखती है—बुरी दशा से निकालकर दिव्य आदर्शों पर ला बैठाती है।

हम अपने हृदय के आनन्दमय भवन में आदर्श के जिस आभास को देखा करते हैं वह हमें असफलता और आशाभंग के कारण हत-धैर्य होने से रोकता है।

यहाँ स्वप्नों से मेरा मतलब उन स्वप्नों से नहीं है जो केवल तरंगों के समान क्षणिक हैं, पर हमारा मतलब उस सच्ची और

श्री जुबिली नागरी भण्डार
बीकानेर

प्रकृत अभिलाषा, एवं उस पवित्र आत्मिक आकांक्षा से है जो हमें हमेशा इस बात का स्मरण कराती रहती है कि हम अपने जीवन को दिव्य और महान बनावें। जो हमें इस बात की सूचना करती है कि तुम अप्रासंगिक एवं बुरी परिस्थिति से उठकर उन आदर्शों को साक्षात्कार कर सकते हो, जिन्हें तुम अपने कल्पना-राज्य में देखा करते थे।

हमारी प्रकृत अभिलाषाओं के पीछे ऐश्वर्य—ईश्वरत्व छिपा हुआ है।

दैवी और फलप्रद अभिलाषाओं के लिए हम यह नहीं कहते कि आप अपनी इन अभिलाषाओं का उन पदार्थों के लिए उपयोग करें जिनको आप चाहते हैं, पर वास्तव में जिनकी आप को आवश्यकता नहीं। मैं उन अभिलाषाओं का ज़िक्र नहीं करता जो मरु देश के उस फल के सदृश हैं जो दीखने में सुंदर है, पर मुँह पर लाते ही जिसकी जघन्यता प्रकट होती है; पर हमारा आशय आत्मा की उन प्रकृत अभिलाषाओं से है जो हमारे आदर्शों की सिद्धि में सहायक होती हैं। मेरा आशय उन अमल आकांक्षाओं से है जो हमें पूर्णता पर पहुँचाने में—आत्म-विकास करने में मददगार होती हैं।

हमारी मानसिक वृत्तियाँ—हमारी हार्दिक अभिलाषायें—हमारी नित्य की प्रार्थनायें हैं। इन प्रार्थनाओं को प्रकृति देवी सुनती है और उनका यथोचित उत्तर देती है। वह इस बात को मान लेती है कि हम वही पदार्थ चाहते हैं जिसकी सूचना हमारी अन्तरात्मा करती है और वह हमें सहायता करने लगती है। लोग इस बात को बहुत कम जानते हैं कि हमारी अभिलाषायें।

१२६७

पर यदि हम देखें कि जाड़ा आने पर भी सब फल हरे
रे हैं—फूल पल्लवों में हैं और विकसित होने के बदले वे ठंड
शिकार बन गये हैं तो हमें समझ लेना चाहिए कि उनमें कहीं
ो भी किसी तरह की भूल हुई होगी।

इसी तरह जब हम देखते हैं कि करोड़ों मनुष्यों में कोई
ारले ही ऐसे होते हैं जो अपनी पूर्ण अवस्था तक पहुँचते और
हुत से मनुष्य अर्द्धविकसित होने के पहले ही काल की खुराक
न जाते हैं, तो हमें मानना होगा कि यहाँ भी कुछ भूलें
अवश्य हुई हैं।

क्यों हमारा जीवन-वृक्ष अपने समय से पहले ही मुर्झा जाता
है? हममें ईश्वर सदृश गुण और अनन्त शक्ति की योग्यता होने
र भी क्यों हमारा जीवन फल अर्द्धविकसित होने के पहले ही
ृक्ष से गिर जाता है। इससे तो हमें मानना होगा कि इसमें कहीं
न कहीं हमारी भूल अवश्य है।

जब हम अन्य जीवधारियों से मानव जीवन की तुलना
है कि मानव जीवन के लिए पूर्णतः

हम यह बात देखते हैं कि हर मनुष्य में कुछ ऐसी स
मौजूद है जो उसे पूर्ण और आदर्श मनुष्य बना सकती है ।
हम अपने आदर्श को मजबूती से पकड़ लें, मन, वचन अ
काया से सांसारिक कष्टों से न घबराकर अपने जीवनोद्देश्य
पीछे चलें तो अवश्य ही हम में मानवी शक्तियों का आविर्भाव
होकर हमारी सफलता पर प्रकाश पड़ेगा ।

ईश्वर की यह आज्ञा कि पूर्ण बनो, जैसा कि मैं हूँ, कुछ
निःसार नहीं है । उसके सदृश विकास करने की हममें भी शक्ति
है यह बात अक्षरशः सत्य है ।

डाक्टर ओरिसन स्विट मार्डेन महोदय कहते हैं कि यदि आप अमेरिका के किसी धनिक से-लक्ष्मीपति से पूछेंगे तो वह कहेगा-'वे दिन मेरे लिए सबसे ज्यादा संतोषपूर्ण और आनन्दमय थे जब मैं दरिद्रता के पंजे से निकल कर समृद्धि के आनन्द-भवन में प्रवेश कर रहा था; जब मैं अपूर्णता और लाचारी से निकल कर पूर्णता के द्वार में प्रवेश कर रहा था, जब मुझे ऐसा मालूम होने लगा था कि कमतरता से निकल कर समृद्धि के विशाल प्रवाह की ओर मैं जा रहा हूँ और उस मार्ग में बाधा डालनेवाला कोई नहीं है'। वह गद्‌गद् हृदय होकर कहेगा वह समय मेरे लिए बड़ा सुखकर-बड़ा आनन्दप्रद—बड़ा संतोषदायक और बड़ा प्रोत्साहनदायक था। उस समय मुझे मालूम होने लगा था कि मेरा आत्म-विकास—आत्म सुधार हो रहा है। उस समय मैं सोच रहा था कि अब मुझे दिव्यानन्द पूर्वक मनोहर जंगलों में घूम कर प्रकृति देवी के स्वाभाविक सौंदर्य्य से अपने हृदय को गद्‌गद् कर सकूँगा और उसकी हरी भरी पोशाक और मनोहर छटा देखकर एकदम ही आनन्द और आनन्द के मीठे समुद्र में मग्न होकर अपने मित्रों को दरिद्रता के दुःखद पञ्जों से मुक्त करके उन्हें ऊँचा उठाऊँगा। सच है ऐसे मनुष्य को स्वयमेव मालूम होने लगता है कि मुझ में ऊँचे उठने की शक्ति है। मुझ में वह शक्ति है कि संसार में मैं अपना वजन पैदा कर सकता हूँ।' उसे इस बात का विश्वास हो जाता है कि "मेरे लड़कों को शिक्षा प्राप्त करने में अब मुझको कष्ट न सहना पड़ेगा।" मतलब यह कि इस वक्त उसका कार्यक्षेत्र संकुचित परिधि से बहुत बड़े मैदान में परिणत होने लगता है।

इस बात के सैकड़ों प्रमाण हैं कि हम महान् और दिव्य वस्तुओं के लिए बनाए गए हैं न कि दरिद्रता के पंजे में फँसने के लिए। कमी और दरिद्रता मनुष्य की दैवी प्रकृति के अनुकूल नहीं हैं पर कठिनाई इस बात की है कि हमें उस दैवी खजाने पर आधा विश्वास भी नहीं। हमे यह हिम्मत नहीं होती कि अपनी दैवी क्षुधा को तृप्त करने के लिए अपनी आत्मिक इच्छा को मुक्त हृदय से प्रकाशित करें और बिना हिचकिचाये उस पूर्णता की याचना करें जिस पर हमारा स्वाभाविक अधिकार है। हम क्षुद्र वस्तुओं की आकांक्षा करते हैं और उन्हें ही पाते हैं। इस तरह हम अपनी इच्छाओं को छिन्न-भिन्न कर देते हैं और उस दैवी खजाने को संकुचित कर देते हैं, जो हमारे लिए रक्षित रखा गया था। अपनी आत्मिक अभिलाषाओं की याचना न कर मानो हम अपने मनो-मन्दिर के उस द्वार को बन्द कर लेते हैं, जो महान् दिव्य और उपयोगी वस्तुओं का प्रवेश-द्वार है इस तरह हमार मानसिक क्षेत्र इतना संकुचित हो जाता है, हमारा आत्म-विकास इतना [illegible] कि हमें क्षुद्रता और संकीर्णता के सिवा और

[illegible]

[illegible] की विवेचना नहीं करते जिसके [illegible] है कि वह हमारी प्रार्थनाओं को [illegible] शक्ति-हीन हो जाता है। हमार [illegible] ही है कि वह प्रदान करे और [illegible] परिपूर्ण करे। हम यदि उसके [illegible] समझे कि उसके खजाने मे [illegible] फूल सूर्य के पास प्रकार

मांगने के लिए नहीं जाता। सूर्य्य का स्वभाव ही ऐसा है कि अपना प्रकाश खुले तोर से उसे तथा अन्य सब पदार्थों को देता है। एक मोमबत्ती के जलते हुए यदि दूसरी मोमबत्ती दी जाय, तो उस पहली मोमबत्ती को कुछ हानि न होगी। भाव रखने से हम अपने मैत्री भाव को एवं तत्संबंधी योग्यता बढ़ाते हैं पर खोते कुछ नहीं।

यह जान लेना कि हम दैवी शक्ति के प्रबल प्रवाह को तरह अपनी ओर ला सकते हैं और उसका ठीक उपयोग सकते है, हमारे जीवन के एक अलौकिक रहस्य का ज्ञान लेना है। यदि मनुष्य को इस दैवी तत्व का ज्ञान हो जाय वह अपनी कार्य्य-संपादन शक्ति को हजारों गुना ज्यादा लेगा, क्योंकि फिर तो वह ऐश्वर्य्य-विभूति का सहयोगी हिस्सेदार हो जायगा।

जब हम अनन्त से एकता करने लगते हैं, अपनी आत्मा संस्कृत करने लगते हैं, जब हम अप्रामाणिकता, स्वार्थ और विम्रता को कूड़े-करकट की तरह अपने हृदय से निकाल कर फें देते हैं उस समय हमें इन दोषों से रहित शुद्ध परमात्मा के दर्श होते हैं और हमें ईश्वर की श्रेष्ठता दीखने लगती है। हम श्रेष्ठ को जानने लगते हैं; पवित्रता के उपासक हो जाते हैं।

वही मनुष्य ईश्वर के दर्शन कर सकता है जिसका अन्तःकरण शुद्ध निर्मल और पवित्र है।

अपने बंधु-भगिनियों से स्वार्थपूर्ण और नीच लाभ उठाने का विचार जब हमारी आत्मा में निकल जायगा, तब हम ईश्वर के इतने निकट पहुँच , विश्व की समा[illegible] सम्बन्धी चीजों

हमारी ओर बढ़ने लगेंगी, पर कठिनाई इस बात की है कि हम अपने कुकृत्यों और कुविचारों से उस दैवी प्रवाह के मार्ग में बाधा डाल रहे हैं, जो हमारी आत्मा की ओर आ रही है। अपनी आँखों के सामने आनेवाला कोई भी दुष्ट कार्य्य काले स्याह परदे के समान है, अथवा यों कहिए कि वह हमारी आँखों का जाला है, जिससे हम ईश्वर को नहीं देख सकते, उसकी श्रेष्ठता का भास नहीं कर सकते। दुष्ट कार्य्य ईश्वर से हमें सदा अलग रखता है।

जब हम विशाल दृष्टि से देखना सीखेंगे, जब हम संकीर्णता का विचार करना छोड़ देंगे, जब हम अपने संकीर्ण विचारों से अपने ही पैर पर कुल्हाड़ी मारना छोड़ देंगे, तब हमें मालूम होगा कि वह पदार्थ जिसकी हम खोज कर रहे थे, वही हमारी खोज कर रहा है और वह हमें आधे रास्ते ही में मिल जायगा।

कभी इन बातों का रोना मत रोओ कि हमें अमुक चीज की कमी है, हमारे पास वे वस्तुएँ नहीं हैं, जो दूसरों के पास हैं, हम वह काम नहीं कर सकते जो दूसरे करते हैं। ऐसा करने से तुम अपने भविष्य को अन्धकार मय कर लोगे। जहाँतक तुम अपने दुर्दैव के विचारों में लगे रहोगे, जहाँतक तुम अपने निष्फल अनुभव पर आश्रित रहोगे वहाँ तक तुम्हारे अंदर में रही हुई आत्मशक्ति मुरझाई हुई रहेगी और वह तुम्हारे अभिलाषित पदार्थों को आकर्षित करने में नितान्त असमर्थ रहेगी। वह तुम्हारी कठिन दशा का कुछ भी उपाय न कर सकेगी।

हमारा मानसिक भाव—हमारा आदर्श—उस सत्य के समान होना चाहिए, जिसकी हम खोज कर रहे हैं।

समृद्धि के अंकुर पहले हमारे मन ही में फूटते हैं
इधर उधर फैलते हैं। दरिद्रता का भाव रख कर हम
अपने मानसिक क्षेत्र की ओर कैसे आकर्षित कर स
क्योंकि इस दुर्भाव के कारण वह वस्तु, जिसकी हम चाह
एक पैर भी हमारी ओर आगे नहीं बढ़ाती। कार्य्य करना
एक चीज के लिए और आशा करना किसी दूसरी की—यह
बहुत ही शोचनीय है। मनुष्य समृद्धि की चाहे जितनी इच्छा
पर दुर्दैव के विचार समृद्धि के आने के द्वारों को बन्द कर दे
है। सौभाग्य और समृद्धि, दरिद्रता एवं निरुत्साही विचारों के
प्रवाह द्वारा नहीं आ सकते। उन्हे पहले मानसिक क्षेत्र में उ
करना चाहिए। यदि हम समृद्धिशाली होना चाहे तो पहले ह
उसके अनुसार अपने विचारो को बना लेना चाहिए।

क्यों आप एक विभिन्न श्रेणी में हैं? इसका कारण केवल
यही है न कि आप अपने को ऐसा मानते हैं। यदि आप अपनी
ात्मा में संकीर्णता देखते तो आप अपने आपको बेशक क्षुद्र
र याद रखिए ऐसा करने से आप अपने और समृद्धि के
ाड़हा खोदते हैं! यदि समृद्धि की ओर से निराश होकर
ने विचार प्रवाह को उसकी ओर नहीं प्रवाहित कर रहे
मझ लीजिए कि वह हमेशा आपसे दूर बचाती रहेगी—
आपके पास न आयेगी।
हत नियम से आप उस चीज की आशा कर सकते
के लिए आपको विश्वास नहीं है कि वह प्राप्त होगी।
निराशा से आप यह बात लि- र सकते हैं कि

उन चीजों को प्राप्त कर सकेंगे, जिनके लिए आपका यह विश्वास है कि वे आपकी नहीं हैं ?

संकीर्णता—सीमाबन्धन हम ही में है, जगत् पिता परमात्मा [illegible]हीं। वह चाहता है कि उसके पुत्रों को विश्व की सब अच्छी [illegible] प्राप्त हों क्योंकि उसने इन पदार्थों की सृष्टि अपने पुत्रों ही [illegible]लए की है। यदि हम उन्हें लेने में असमर्थ हो रहे हैं तो यह हमारा है। इसका केवल मात्र कारण यही है कि हम अपनी [illegible]मा को संकुचित कर रहे हैं।

दरिद्रता में विश्वास करना ही संसार में सब से बड़ा पाप है

कुछ मनुष्यों का दृढ़ विश्वास है कि कुछ लोगों को तो अवश्य गरीब [illegible]। वे गरीबी ही के लिए बनाये गए हैं। [illegible] ने मनुष्य के लिए जो [illegible] नता किसी भी जगह [illegible] नहीं होना चाहिए। [illegible] उसे हमने शायद ही [illegible] के अन्दर में [illegible] कारण यह है कि हम [illegible] विचार [illegible] यदि हम [illegible] हैं—यदि

हम दरिद्रतासे डरते रहे—यदि आवश्यकता के भय से को
तो दरिद्रता और भय के विचार हमारे जीवन-प्रदेश मे
जमालेंगे और उसके प्रभाव से हम एक ऐसे चुम्बक बन ज
कि दरिद्रता और लाचारी अधिकाधिक परिमाण में हमारी
आकर्षित होकर आती रहेगी।

दयानिधि परमात्मा की इच्छा कदापि नहीं है कि हमें
उदर निर्वाह के लिए भी कठिन समस्या का सामना करन
हमारा अमूल्य समय केवल इसी झगड़े मे लगा रहे, जीवन
का हमें समय ही न मिले ! जीवन हमें इस वास्ते दिया
हम उसकी पूर्णता का, सौंदर्य का विकास करें। हमारी सब से
अभिलाषा यह होनी चाहिए कि हम अपने मनुष्यत्व का विका
है—हम अपने जीवन को सुन्दर और ऐश्वर्यशाली बनावें। केवल
जड़ द्रव्य ही मे अपना सारा जीवन खोने के बजाय मानवी
को सङ्गठित करने मे हम अपने समय का अधिक उपयोग

निश्चय कर लो कि दरिद्रता के विचार से हम अपने मुँह
मोड़ लेंगे। हम केवल हठाग्रह से समृद्धि ही की आशा रक्खें
हम केवल पूर्णता ही के विचार को अपने पास फटकने देंगे—ऐश्व
र्यशाली आदर्श ही को अपनी आत्मा में जगह देंगे, जो
हमारी स्वाभाविक प्रकृति के अनुकूल है निश्चय कर लो कि ह
अनुसार समृद्धि प्राप्त करने में जरूर सफलता होगी। इस तरह
निश्चय, आशा और अभिलाषा तुम्हें वह पदार्थ प्राप्त करायेंगी
जिसकी तुम्हें बड़ी लालसा है। हार्दिक अभिलाषा में उत्पादक
शक्ति भरी हुई है।

सब बात यह है कि हम अपने ही संसार में रहते हैं। हम

अपने ही विचारों के फल हैं। हर एक मनुष्य अपने विचारानुसा
अपने संसार को बनाता रहता है। वह अपने आसपास के वायु
मण्डल को या तो समृद्धि, ऐश्वर्य और पूर्णता से सुवासित रखता
या दरिद्रता, कमी और अभाव के विचारों से उसे गंदा औ
नादर पूर्ण कर देता है।

ईश्वर के पुत्र—मानवगण इसलिए नहीं बनाये गये कि इ
धर उधर व्यर्थ ही मारे मारे फिरें—पर वे इस वास्ते बनाये गये
कि आकांक्षा करें। ऊपर की ओर देखें न कि नीचे की ओर।
इस वास्ते नहीं बनाये गये हैं कि पड़े पड़े दरिद्रता-गाथा ही
गाया करें। पर वे इस वास्ते बनाये गये हैं कि महान और श्रेष्ठ
पदार्थों को प्राप्त करें। शांति अधिराज परमात्मा के पुत्रों के
लिए पूर्ण श्रेष्ठता, पूर्ण सौंदर्य, पूर्ण महत्ता और पूर्ण ऐश्वर्य
मौजूद है। पर दरिद्रता के भाव ने—विचारों की संकीर्णता ने—हमें
कंगाल बना रक्खा है। यदि हम जीवन के आदर्श को ऊँचा
उठाये रक्खें—यदि हम अपने ऐश्वर्य के लिए बराबर दावा करते रहें
तो अवश्य ही हमारा जीवन परिपूर्ण और ऐश्वर्यशाली हो
जायगा। परमात्मा की यह इच्छा नहीं है कि हम गरीब रहें, पर
हमारे भावों की संकीर्णता के कारण—हमारे दरिद्रतामय आदर्श
की पकड़ जमाने के कारण—हमारी ऐसी शोचनीय दशा हुई है।
सृष्टि की रचना और परिस्थिति का विचार करने से हम कई
बातों प्रमाण मिलते हैं कि हर प्रत्येक रूप से एक महान
उपभोग के लिए बनाया गया है, जिसे हैं
कोई बिरला ही भाग्यशाली प्राप्त करता

खजाने पर यथेष्ट विश्वास नहीं। हमें चाहिए कि हम उस खजाने के साथ वही सम्बन्ध रक्खें जैसे बच्चा अपने पिता के साथ रखता है। बच्चा रोटी खाते समय यह नहीं कहता, "मैं डर के मारे कि फिर मुझे खाने को न मिलेगा, यह रोटी नहीं खाता।" पर वह इस विश्वास और भरोसे पर कि, 'मुझे रोटी की कमी नहीं है' सब कुछ खा लेता है।

हमें अपने सम्भाव्य पर आधा भी विश्वास नहीं रहता। यही कारण है कि जो कुछ हमें प्राप्त होता है वह बहुत ही थोड़े परिमाण में होता है। हम उस ऐश्वर्य पर अपना दावा नहीं करते जिस पर हमारा अधिकार है। यही कारण है कि अपूर्णता, संकीर्णता अथच कृशता हमारे जीवन को प्राप्त होती है। हम उदारतापूर्वक किसी वस्तु की माँग नहीं करते। हम क्षुद्र वस्तुएँ पाकर ही सन्तुष्ट हो जाते हैं। ईश्वर की इच्छा है कि हम सुख-समृद्धि युक्त जीवन व्यतीत करें—जो वस्तु हमारे लिए है वह विपुलता से हमारे पास रहे। कोई मनुष्य दुःखी और दरिद्री न रहे। आवश्यक वस्तुओं का अभाव मानव-स्वभाव के अनुकूल नहीं है।

विचारों की एकता और सफलता

दृढ़तापूर्वक विचार कर लो कि तुम्हारी उस वस्तु के साथ एकता है, जिसकी तुम्हें जरूरत है। तुम अपने मन, वचन और काया को उस वस्तु की ओर लगादो। उसकी प्राप्ति में तिल मात्र भी सन्देह मत रक्खो। तुम्हें उसके प्राप्त करने में सफलता अवश्य होगी—तुम उसे अवश्य आकर्षित कर सकोगे।

गरीबी हमारा मानसिक रोग है। यदि तुम इससे पीड़ित हो

तुम इस रोग के शिकार हो तो अपने मानसिक भाव को
ल दो और दुःख दरिद्रता और लाचारी के विचार मन में
ने के बजाय सुख, समृद्धि ऐश्वर्य, स्वाधीनता और आनन्द के
चारों से अपने मानसिक क्षेत्र को सुशोभित करो। फिर यह
कर तुम्हारे आश्चर्य का पार न रहेगा कि तुम्हारा सुधार—
हारी उन्नति—कितनी जोरों से हो रही है।

हमें विजय—सफलता—पूर्णतया मन की वैज्ञानिक क्रिया
प्राप्त होता है। जो मनुष्य समृद्धिशाली—सौभाग्यशाली होता
उसका पूर्णतया यह विश्वास रहता है कि मैं समृद्धिशाली एवं
भाग्यशाली हो रहा हूँ। उसे अपनी पैसा कमाने की योग्यता
विश्वास रहता है। वह अपने व्यवसाय को सन्देहान्वित और
शाशील मन से शुरू नहीं करता। वह अपने समय को गरीबी
बातें तथा विचारों में नहीं गँवाता। वह दरिद्रता से लड़खड़ाता
आ नहीं चलता और न वह गरीब सी पोशाक ही पहनता है।
ह अपने मुख को उस वस्तु की ओर फेरता है जिसके लिए वह
कोशिश कर रहा है, तथा जिसकी प्राप्ति में उसका पूरा विश्वास
और दृढ़ निश्चय है।

देश में ऐसे हजारों गरीब लोग हैं जो अपनी गरीबी से
ई सन्तुष्ट हो गये हैं और जिन्होंने उसके विकराल पंजों से
निकलने का प्रयत्न ही छोड़ दिया है। अब चाहे वे कितना ही
ठिन परिश्रम करें, उन्होंने तो अपनी आशा खो दी है—स्वाधी-
ता प्राप्त करने की प्रत्याशा नष्ट कर दी है।

से मनुष्य ऐसे होते हैं जो गरीबी के डर से अपने

बना

देखा जाता है कि बहुत से बच्चों का मन गरीबी के
से भर दिया जाता है—सुबह से शाम तक वे गरीबी ही
के विचारों को सुनते रहते है। उनकी दृष्टि जिधर पड़ती है
ही दरिद्रता के चित्र उनकी नजर पड़ते हैं। वे हर मनुष्य के
से ऐसे ही आत्म-घातक विचारों को सुनते हैं। मतलब
उनमें चहुँ ओर से दरिद्रता ही दरिद्रता की प्रेरणा हुआ करती है

इस बात में क्या आश्चर्य है कि जो बच्चे इस तरह के वा
मण्डल में बड़े होते हैं वे अपने मा-बाप की दैन्य-ग्रस्त स्थिति
फिर ताजी कर देते हैं अर्थात् वे जले पर फिर नमक
छिड़क देते हैं।

क्या आपने कभी इस बात का विचार किया है कि गरीबी
से जो आप भय खाते हैं, सफलता में जो आपकी खिन्नता है,
दिन से जो आपका कलेजा काँपता है, ये बातें आपको केवल
ली ही नहीं करती हैं परन्तु आपको अपनी आर्थिक दशा
सुधारने के योग्य भी नहीं रखतीं? इस तरह आप उस दु
भार को और भी भारी कर रहे हैं जो पहले ही आपसे न
उठाता था।

कोई परवाह नहीं कि आपके आसपास का दृश्य भयङ्कर
हो, कोई परवाह नहीं कि आपकी परिस्थिति कठोर हो। आप
उस पदार्थ से आप अपने मन को हटा लीजिए जो आपको
अरुचिकर मालूम होता हो, उस स्थिति से अपने मुख को आप
फेर लीजिए जो आपको गुलाम बनाता हो और आपको सर्वो-
ष्ट विकास होने में बाधा देती हो।

दुःख और दरिद्रता के विचार आत्मघातक हैं

दुःख दरिद्रता के विचार रख कर कौन से तत्व से आप समृद्धि को उत्पन्न कर सकते हैं? आप की दशा आपके मानसिक भावों के-आपके आदर्शों के-अनुकूल रहेगी। क्या हमारे आदर्श और क्या हमारे मानसिक भाव-ये हमारी आत्मा मे पैठ जाते हैं यदि ये दरिद्रता के विचारों मे मस्त होंगे तो हमारी दशा भी वैसी ही होगी।

मान लीजिए कि एक लड़का है जो वकीली के लिए प्रयत्न कर रहा है; पर उसे आशा नहीं है कि इसमें उसे पूरी सफलता मिलेगी तो जरूर वह अपने प्रयत्न में असफल होगा। हम वही पाते हैं जिसकी हम आशा करते हैं। यदि हम किसी की आशा न करें तो हमें कुछ भी न मिलेगा। नदी अपने उद्गमस्थान से ज्यादा ऊँची नहीं उठ सकती। जो मनुष्य गरीब होने की पूरी अथवा आधी आशा रखता है वह धनवान् कभी नहीं हो सकता।

इसलिए प्रत्येक मनुष्य को चाहिए कि वह अपने सौभाग्य-सूर्य की ओर मुँह करके सीधा खड़ा रहे। विजय और सुख पर प्रत्येक मानव प्राणी के स्थायी स्वत्व हैं।

कुछ लोग पैसा कमाना चाहते हैं पर वे अपने मन को इतना संकुचित रखते हैं कि वे उसे विपुलता से नहीं पा सकते।

वह मनुष्य जो समृद्धि की आशा रखता है, हमेशा अपने मनोमन्दिर में समृद्धि को उत्पन्न करता रहता है और उसकी भौतिक इमारत को बनाया करता है।

हमें चाहिए कि अब से हम सुख समृद्धि की नई मूर्ति-नया आदर्श बनावें। क्या हमने बहुत दिनों तक दरिद्रता, दुःख और

की इमारत को खड़ी करते हैं। वे कार्य्य कर स्वप्नों को देखते रहते हैं, वे अपने मानसिक प्रवाह को अनन्त शक्ति के महासागर की ओर प्रवाहित करते रहते हैं और अपने आदर्श-अपनी अभिलषा के अनुकूल फलों को उसमें से निकालते रहते हैं।

समृद्धि के नियमों को यथोचित रीति से पालन करने से जैसा प्रत्यक्ष लाभ होता है, वैसा कंजूसी करके एक-एक कौड़ी जोड़ने से नहीं होता। कंजूसी से हमारी आत्मा मलीन, सकीर्ण एवं अनुदार हो जाती है और इससे हमें विशेष लाभ भी नहीं होता। हम अपने मनोयोग की ओर जाते हैं। यदि हम अपने मन को दुःख, दरिद्रता और लाचारी की ओर लगावेंगे तो हमें इन्हीं सी दशा प्राप्त होगी।

सौभाग्य और समृद्धि को प्रायः हम इसी मतलब से लेते हैं कि हर चीज जो हमारे लिए लाभदायक है हमें मिलती रहे आत्मा को प्रकाशित करने वाली प्रत्येक वस्तु हमें विपुलता से प्राप्त होती रहे। उन चीजों का हमारे पास भण्डार रहे जो श्रेष्ठ और अनुपम हैं। सौभाग्य—समृद्धि—उस हर पदार्थ का नाम है जो हमारे व्यक्तित्व हमारे अनुभव को वैभवशाली बनाता रहे।

सच्चा सौभाग्य—सच्ची समृद्धि—तो आत्मिक वैभव—आत्मिक पूर्णता का—आन्तरिक ज्ञान ही है।

इसका मतलब और कुछ नहीं केवल अपनी धन कमाने
योग्यता को कम करना है। ऐसे मनुष्यों के लिए यह कह
अनुचित न होगा कि वे जाना चाहते हैं तो पूर्व की ओर
पश्चिम की ओर अपने पैरों को आगे बढ़ा रहे हैं।

ऐसा कोई पदार्थ नहीं है जो मनुष्य को उस दशा में स
लता लाभ करने में सहायता करे, जब वह अपनी सम्ब
न्धिनी योग्यता-शक्ति पर सन्देह कर रहा हो और यों असफल
के तत्त्वों को अपनी ओर आकर्षित कर रहा हो।

वे मनुष्य जो सफलता-विजय—प्राप्त करना चाहते हैं उ
विचार भी इन्हीं बातों के करने चाहिएँ। उन्हें सुख, समृ
उन्नति और सफलता के ही विचार करना चाहिए।

जिस ओर तुम अपना मुँह करोगे उसी दिशा को मु
जाओगे। यदि तुम दरिद्रता—कायरता की ओर मुँह करोगे
तुम्हारी गति इन्हीं की ओर होगी। इसके विपरीत यदि इन
ओर से अपना मुँह मोड़ लोगे—इन्हें बिसरोगे-इनका विच
करना छोड़ दोगे-इनकी बात को मुँह पर न लाओगे तो तुम्हा
उन्नति होने लगेगी-समृद्धि के आनन्द-प्रद भवन में तुम्हारा प्र
होने लगेगा।

बहुत से मनुष्य विपरीत अवस्था में-उल्टे प्रवाह में का
करते हैं, क्योंकि उन्हें [illegible]
[illegible]

कार्य और आशा

समृद्धि का आरम्भ पहले मन में होता है और जब तक मानसिक भाव उनके अनुकूल नहीं हो लेते तब तक उसकी प्रत्यक्ष सिद्धि होना असम्भव है। यह बात बहुत बुरी है कि काम करना किसी एक पदार्थ के लिए और आशा रखना किसी दूसरे की। जब तुम्हें पद पद पर असफलता दीखती है, तब बताओ कि विजयद्वार में तुम्हारा प्रवेश कैसे हो सकेगा?

बहुत से लोग जीवन को ठीक मार्ग पर नहीं लगाते। वे अपने प्रयत्न के अधिकांश भाग को निर्बल और शक्तिहीन बना देते हैं, क्योंकि वे अपने मानसिक भाव को अपने प्रयत्न के अनुकूल नहीं बनाते अर्थात् वे काम तो किसी एक पदार्थ के लिए करते हैं और चाहते हैं किसी दूसरे को। हाथ में लिये हुए कार्य के विपरीत मानसिक भाव रखने से, वे उस कार्य में सफलता प्राप्त नहीं कर सकते। वे इस कार्य को इस निश्चय से हाथ में नहीं लेते कि इसमें हमें अवश्य सफलता और विजय प्राप्त होगी। यही कारण है कि उन्हें सफलता और विजय का आनन्द नहीं मिलता; क्योंकि सफलता और विजय के लिए दृढ़ निश्चय हो जाना ही मानो उसके लिए क्षेत्र तैयार करना है।

एक ओर तो हम धन की आकांक्षा करते रहते हैं और दूसरी ओर यह कहते रहते हैं कि क्या करें गरीब हैं, दरिद्र हैं।

इसका मतलब और कुछ नहीं केवल अपनी धन कमाने की योग्यता को कम करना है। ऐसे मनुष्यों के लिए यह कहना अनुचित न होगा कि ये जाना चाहते हैं तो पूर्व की ओर पर पश्चिम की ओर अपने पैरों को आगे बढ़ा रहे हैं।

ऐसा कोई पदार्थ नहीं है जो मनुष्य को उस दशा में सफलता लाभ करने में सहायता करे, जब वह अपनी तत्सम्बन्धिनी योग्यता-शक्ति पर सन्देह कर रहा हो और यों असफलता के तत्वों को अपनी ओर आकर्षित कर रहा हो।

वे मनुष्य जो सफलता-विजय—प्राप्त करना चाहते हैं उन्हें विचार भी इन्हीं बातों के करने चाहिएँ। उन्हें सुख, समृद्धि, उन्नति और सफलता के ही विचार करना चाहिए।

जिस ओर तुम अपना मुँह करोगे उसी दिशा को तुम जाओगे। यदि तुम दरिद्रता—कायरता की ओर मुँह करोगे तो तुम्हारी गति इन्हीं की ओर होगी। इसके विपरीत यदि इनकी ओर से अपना मुँह मोड़ लोगे—इन्हें धिक्कारोगे—इनका विचार करना छोड़ दोगे—इनकी बात को मुँह पर न लाओगे तो तुम्हारी उन्नति होने लगेगी—समृद्धि के आनन्द-प्रद भवन में तुम्हारा प्रवेश होने लगेगा।

बहुत से मनुष्य विपरीत भावना से—उल्टे इरादे से कार्य करते हैं, अर्थात उन्हें महर्द्धिशाली होना जँचता है, पर उनके हृदय में यह विश्वास नहीं होता कि हम ऐसे कैसे हो जावेंगे। यही कारण है कि सफलता उनके लिए असम्भव-सी हो जाती है। सच है, हमारी दरिद्रता और पराधीनता के भाव ही ने—हमारे संशय और भय ही ने—हमारे आत्म-विश्वास की कमी ने—सफलता

परीत हों; क्योंकि तुम्हारा मानसिक भाव ही उस इमारत का
मूना है, जो तुम्हारे जीवन मे बनती है, तुम्हारी कार्य्यनिपुणता
 आरम्भ पहले तुम्हारे अपने मन ही में होता है।

यदि तुम हमेशा क्षुद्र व्यवसाय—तुच्छ व्यापार ही का—
चार करते रहोगे, उसी के लिए तैयारी करते रहोगे, उसी की
शा लगाए रहोगे, और हमेशा भीखा करोगे कि क्या करें
क बड़ा नाजुक आ गया है, व्यापार मंदा होता जा रहा है
 समझ लो कि इसका परिणाम तुम्हारे लिए बड़ा ही घातक
गा, व्यापार की उन्नति के सब द्वार तुम्हारे लिए बन्द हो जावेंगे।
फलता—कामयाबी—प्राप्त करने के लिए तुम चाहे जितना
रतोड़ परिश्रम करो, पर यदि तुम्हारा विचार असफलता के
य से ग्रस्त होगया है तो समझ लो कि यह विचार तुम्हारे परि-
म को ये काम कर देगा—तुम्हारे प्रयत्न को पंगु बना देगा।
समें विजय-सफलता पाना तुम्हारे लिए असम्भव हो जायगा।

इस बात का डर रखने से कि कहीं हम असफल—नाकाम-
ब—न हो जावें—हम तंगी में न आ जावें—हम लाचार न हो
ावें, हजारों मनुष्य अपनी इष्ट सिद्धि से अर्थात उन पदार्थों से
नकी वे चाह करते हैं बिल्कुल कोरे हाथ रह जाते हैं। क्योंकि
 तरह के डर से वे अपनी शक्ति को पंगु बना देते हैं। फिर
न्हें सफलता कैसे प्राप्त हो सकती है?

आशावाद और निराशावाद

हमें चाहिए कि हरएक पदार्थ को ऐसे पहलू में देखें जो
ोजनक और निश्चयात्मक हो। हमें विश्वास कर
 जो कुछ होगा अच्छा ही होगा। सत्य की

हमेशा विजय होगी। हमें निश्चय कर लेना चाहिए कि असत्य पर विजयी होगा। हमें जान लेना चाहिए कि एकता स्वास्थ्य ही सत्य है और विरोध और व्याधि असत्य है—मा स्वभाव के प्रतिकूल है। ऐसे दिव्य विचार रखने से हम आशा की शुभ श्रेणी में आ जावेंगे। क्योंकि आशावादियों के ऐसे विचार होते हैं। इन्हीं विचारों से संसार में एक प्रकार अलौकिक सुधार हो जाता है।

आशावाद मानव प्राणियों के लिए अमृत है। जैसे सूर्य वनस्पति को लाभ होता है अथवा यों कहिए कि जीवन प्रा होता है वैसे ही आशावाद से मनुष्यों में जीवन शक्ति का संचार होता है। यह एक मनोसूर्य का प्रकाश है जो हमारे जीवन को जाता है—सौंदर्य की अलौकिक छटा से उसे विभूषित करता है र उसका विकास करता है। मानसिक शक्तियाँ इस प्रकाश से वैसे ही फलती फूलती हैं जैसे सूर्य के प्रकाश से वनस्पतियाँ।

निराशावाद का परिणाम ठीक इसके उल्टा होता है। य भयंकर राक्षस है जो हमारे नाश की ताक में बैठा रहता है—जो हमारी बढ़ती नहीं होने देता।

जो मनुष्य हर पदार्थ की अन्धकारमय बाजू को देखता है—जो हमेशा बुराई और असफलता ही के वचन मुँह से निकालता रहता है—जो केवल जीवन के अन्धकारमय एवं अप्रीतिकर अंश ही को देखता रहता है, उसकी राह दुःख और दारिद्र हमेशा देखते रहते हैं।

किसी पदार्थ में यह शक्ति नहीं है कि वह उस पदार्थ को खींचे जो कि उसके विपरीत गुणवाला है। हर पदार्थ अपने गुण

को प्रकाशित करता है, और उन्हीं चीजों को अपनी
कर्षित करता है जो कि उसके समान गुण धर्म वाले होते
है कोई चाहे कि मैं सुखी और समृद्धिशाली होऊँ तो
हिए कि वह सुख समृद्धि ही के विचार किया करे—इफरा
ाल से अपने मन को हरा भरा करता रहे—अपनी आत्म
ार बनाता जावे। जिसे गरीबी का भय है, उसके पीछे ग
हाथ धोकर पड़ती है।

यदि तुम सुख प्राप्त करना चाहते हो, तो दु:ख के वि
हटा दो; यदि तुम धन प्राप्त करना चाहते हो तो गरीब
ाल को तिलांजलि दे दो। जिन पदार्थों से आप भय रखते
से किसी तरह का अपना सम्बन्ध मत रखो। वे तुम
ति के—तुम्हारे विकास के—घोर शत्रु हैं। उनका समूल न
दो। अपने मन से उन्हें निकाल दो। उन्हें भूल जाये
प अपने मनोमन्दिर में उन पदार्थों के विचारों को जगह
नको आप चाहते हों, जिनकी प्राप्ति से आपकी आत्मा मग
र आनन्दित होती हो, फिर यह देखकर आपके आश्चर्य
न रहेगा कि वे पदार्थ जिनकी आप बाट जोह रहे थे आप
र खिंचे हुए आ रहे हैं।

हम अपने कार्य के लिए—उद्देश के लिए—जैसा अपना म
र बनाते हैं उसका उनके साथ अर्थात उस कार्य और उद्दे
ाथ गहरा सम्बन्ध हो जाता है। यदि आप यों सोचते !
ी बात पर जाते हो कि 'क्या करें मजबूरन ऐसा तुच्छ क
ना पड़ता है, इसमें बड़ी ही परेशानी है, इससे हम कैसे छुट
सकेंगे ? क्या भगवान ने ऐसा काम हमारे सिर रखकर उन

ने की योग्यता पर पूरा भरोसा होने पर भी—अपने उद्देश
ओर निरन्तर अपनी आँख रखते रहने पर भी—उसकी प्राप्ति
लिए उचित प्रयत्न करने पर भी—सफलता—विजय प्राप्त न
हो। उच्चाभिलाषा पहले आत्म-प्रेरणा के रूप में परिणत होती
और फिर सिद्धि के रूप में।

हमेशा इस बात का यत्न करते रहो कि तुम्हारे विचार उम
महान् बने रहें। जो कुछ तुम करना चाहते हो उसके लिए
संशय मत करो।

संशय बड़े घातक हैं। ये हमारी उत्पादक-शक्ति को नष्ट कर
हैं—हमारी अभिलाषा को पंगु और शक्ति-हीन कर देते हैं।
अपने हृदय पर हाथ रख कर अपने आपको यह सूचना
ते रहो कि जिसकी जरूरत मुझे है वह मुझे अवश्य ही मिलेगा,
मेरा अधिकार है और उसे प्राप्त करने में चला हूँ।

हमेशा अपने मन में ये विचार रक्खो कि हम सफलता के
—विजय के लिए—स्वास्थ्य एवं सुख के लिए—और परो-
के लिए बनाये गये हैं और हमें इनसे कोई विहीन नहीं रख
ता। इस तरह के आशामय उद्गारों को बार बार दोहराने
अपनी आदत डाल दो। अपनी अन्तिम विजय पर विश्वास-
विचार प्रकट करने की अपनी आदत बनाओ, और इसका
वरिक फल देखो कि आपका मनोवांछित पदार्थ किस
आपकी ओर खिंचा हुआ चला आ रहा है पर यहाँ एक
... कि तुम्हारे ... में—तुम्हारे में—निरन्तर
।

... यह इच्छा नहीं है कि ...

अपनी परिस्थिति के हाथ का कठपुतला बना रहे—अपनी इ
पास की दशा का गुलाम बना रहे—पर उसकी यह इच्छा है
मनुष्य अपनी परिस्थिति को आप बनावें—अपनी स्थिति
आप उत्पन्न करे।

हमारी मानसिक शक्तियाँ हमारी सेविकाएँ हैं। जो
हम उनसे चाहते हैं, वे हमें वही देती हैं। यदि हम उन
विश्वास रक्खें, इनपर अवलंबित रहें, तो वे अपनी उमदा
उमदा चीजें हमें देंगी।

जिन लोगों की प्रकृतियाँ निषेधात्मक रहती हैं वे इस ब
की राह देखा करते हैं कि देखें क्या होता है? ऊँट किस करव
बैठता है। उनमें यह शक्ति नहीं रहती है कि वे हर पदार्थ
अपने अनुकूल बना लें।

वह निश्चयात्मक प्रकृति ही है कि जिससे दुनिया के बड़े ब
काम हुए हैं। इससे मनुष्य अपना मन-चाहा काम क
सकता है।

प्राय: ऐसा भी देखा जाता है कि बहुत से मनुष्य बाहरी
प्रभाव से अपनी निश्चयात्मक प्रकृति निषेधार्थक प्रकृति में बदल
देते हैं। वे अपने आत्म-विश्वास को खो देते हैं। उनका स्वत
से विश्वास उठता जाता है क्यों कि वे लोगों के निराशाजन
वचनों से प्रभावित हो जाते हैं, लोगों से वे हमेशा अपूर्णता के
विचार सुना करते हैं। लोग उन्हें कहा करते हैं कि तुम्हें अपने
व्यवसाय का ज्ञान नहीं। तुम उस व्यवसाय के योग्य नहीं हो
जिसे अभी तुम कर रहे हो। इससे उनकी प्राथमिक शक्ति
मारी जाती है और फिर वे किसी कार्य को पहले जैसे उत्साह से

हीं करते । वे अपनी निर्णय करने की शक्ति को खो देते हैं, किसी महत्वपूर्ण कार्य का निर्णय करने से डरते हैं । उनका मन ठिकाने नहीं रहता । इस तरह वे नेता होने के बदले अनुयायी बन जाते हैं ।

आत्मा की अलौकिक शक्ति

हमारी आत्मा में एक बड़ी अलौकिक शक्ति भरी हुई है, जिसका विवेचन हम नहीं कर सकते, पर जिसका अनुभव हमें होता है । यह हमारी आज्ञाओं को मानती है, हमारे निश्चय को परिपुष्ट करती है ।

मान लीजिए कि यदि हम यह विचार करें—यह मान बैठें कि हम नाचीज हैं—तुच्छ हैं—क्षुद्र हैं—हीन कीड़े हैं, "हम दूसरों के समान नहीं हैं" तो हमारी आत्मा के रजिस्टर में ये सब बातें लिख ली जायँगी और उसका परिणाम यह होगा कि हम सच-मुच वैसे ही बन जावेंगे । यदि हम तंगी के कमजोरी के—अयोग्यता के—अकर्मण्यता के विचारों ही को प्रकट करते रहेंगे तो इनका प्रतिबिम्ब हमारी आत्मा में पड़ेगा, जो बड़ा ही अशुभ है।

इसके विपरीत यदि हम निश्चयपूर्वक यह मानें कि विश्व की तमाम अच्छी चीजों के हम अधिकारी हैं—उन पर हमारा स्वाभाविक हक है और यदि हमें अपने ऐश्वर्य पर दृढ़ विश्वास है, हम दृढ़ता से इस बात की श्रद्धा रखते हैं कि हम अपने जीवनोद्देश को भली भाँति पूरा कर रहे हैं—यदि हमारा यह निश्चय है कि शक्ति मेरी है, स्वास्थ्य मेरा है आधि व्याधि, निर्बलता और निरोध से मेरा कोई सम्बन्ध नहीं है तो मानो हम अपने मन में ऐसी उत्पादक और निश्चयात्मक शक्ति को उत्पन्न कर रहे हैं जो हमारी

नके शब्दों से संसार के बड़े-बड़े कार्य हो जाते हैं । क्योंकि
लोगों में एक स्वाभाविक गुण रहता है कि वे उच्च आत्मा की
आज्ञा पालन करने में अपका अहोभाग्य मानते हैं।

जब हम किसी सच्चे महात्मा से—दिव्य पुरुष से—मिलते हैं, चाहे
उसकी और हमारी पहले जान पहचान न रही हो तो भी उसके
दर्शनमात्र से हमें ऐसा मालूम होने लगता है मानो यह हमारे
शरीर में एक प्रकार की अलौकिक भावना का—दिव्य जीवन
का संचार कर रहा है। उस समय हमारे हृदय पर एक अद्भुत
प्रभाव पड़ने लगता है। उनके विषय में हमें यह तत्काल मालूम
होने लगता है कि इनमें नेता होने की शक्ति मौजूद है। इनमें वह
शक्ति विद्यमान है जो सृष्टि का संचालन कर सकती है। ऐसे
पुरुष के लिए हमें विश्वास होने लगता है कि इसकी कार्यसफलता
में कोई भी बाधा उपस्थित नहीं कर सकता। इसके विपरीत जब
हम किसी संकीर्ण हृदय वाले मनुष्य से मिलते हैं तो उसके
हृदय का हम पर निर्बल और निषेधात्मक प्रभाव पड़ता है।
उसको देखते ही हमें मालूम होने लगता है कि इसका अधःपतन
हो चुका—यह अपने पथ पर प्रकाश नहीं डाल सकता। यदि
तुम चाहते हो कि लोगों को हमारी शक्ति का परिचय मिले तो
तुम अपनी शक्तियों का विकास करो ।

सब विद्याओं में यह शिरोमणि विद्या है कि हम अपने
जीवन को स्थायी सफलता और विजय से विभूषित करें और यह
कार्य कठिन नहीं है, यदि हमारा जीवन ठीक तरह संस्कृत किया
जाय।

यदि कोई मेजुएट उक्त विद्या का ज्ञान प्राप्त किये बिना ही

यदि आप में किसी कार्य के आरम्भ करने की शक्ति का अभाव है और आप चाहते हों कि हममें निर्माण-निर्मित शक्ति का विकास हो तो इसका अच्छा उपाय यही है कि आप अपने मन को उपरोक्त दुष्प्रकृति से हटाकर हर वस्तु की ओर निश्चयात्मक दृष्टि से देखिए—अपने मन को उत्पादक शक्ति की ओर झुकाइए। यह बात उस दशा में भी हो सकती है, जब आप बाह्य कार्य से निवृत्त होकर आराम कर रहे हैं। निषेधात्मक विचार हमेशा कमजोरी को पैदा करने वाले हैं। सचमुच यह बहुत अच्छी बात है कि हम अपने मन को कुछ समय तक बाह्य प्रपञ्चों से निवृत्त रक्खा करें—समय-समय पर उसे आराम लेने दें। निषेधात्मक मन और निवृत्त मन में बड़ा फरक है। जहाँ निषेधात्मक मन दोषपूर्ण है, वहाँ निवृत्त मन निर्दोष है।

हम अपने मनोक्षेत्र में जैसे बीज बोते हैं, वैसे ही वृक्ष उगते हैं। यदि हम उसमें दुःख, दरिद्रता, द्रोह, वैर, विरोध के बीज बोवेंगे तो फल भी इन्हीं के निकलेंगे। और यदि हम उसमें सुख, सन्तोष, समृद्धि, ऐक्य, प्रेम, दया और सहानुभूति के विचार बोएँगे तो फल भी इन्हीं से मीठे और सुमधुर निकलेंगे।

विचार कर लें-मन, वचन और काया से इस बात को मान लें-कि अब भी हम वैसे ही मनुष्य हैं जैसे कि हम होना चाहते हैं; जैसा कि हमारा आदर्श है। हम कमजोर नहीं, निर्बल नहीं, दरिद्र नहीं, पर शक्तियुक्त समृद्धियुक्त और महान आत्मा हैं। ऐसा करने से थोड़े ही दिनों में आपको मालूम होगा कि अपने आदर्शों की सिद्धि बड़ी तीव्रता के साथ आपकी आत्मा में हो रही है—उन आदर्शों से आपका चरित्र दीप्तियुक्त हो रहा है।

हमें आवश्यकता है उन गुणों की जो हमें ऊंचा चढ़ावें और हमें आवश्यकता है उन गुणों की जो हमारी आत्मा में दिव्यता लावें। हमें आवश्यकता है उन गुणों की जो विकास पर दिव्य प्रकाश डालें। हमें आवश्यकता है उन गुणों की जो हमारी निर्माण-शक्ति को तेज करें और हमारी अकर्मण्यता और दुःख दारिद्र्य का नाश करें।

जिस समय भूमि की, वायुमण्डल की, सूर्य के प्रकाश की, और वर्षा की रासायनिक शक्ति पौधों और पेड़ों पर अपना रासायनिक प्रभाव डालना छोड़ देती है, तभी से उनके नाश का सूत्रपात होता है। उनमें वे नाशकारी कीटाणु घुसने लगते हैं जो उनके नाश के कारण होते हैं। इसी तरह मनुष्य में जब उत्पादक शक्ति का—उस शक्ति का जो उसके आत्मा मन और शरीर को सुसंगठित करती है—आविर्भाव होना बन्द हो जाता है, तब उसकी दशा भी ठीक इन्हीं पौधों जैसी होने लगती है—नाशक तत्व उसको खाने लगते हैं।

जब मनुष्य अपने मन के भाव को सुनिश्चित कर लेता है, तब उसमें दूसरे लोगों की बुरी विचार-प्रेरणा से बचने की शक्ति आ जाती है। जैसे तुम किसी ऐसी स्थिति में रखे गये, जहाँ तुम्हें बुरे विचार सुनने को मिलते हैं—चहुँ ओर से बुरे ही बुरे दृश्य तुम्हारी नजर में पड़ रहे हैं, ऐसी दशा में यदि तुमने अपने मन को उस शक्ति से सम्पन्न कर रक्खा हो जो तुम्हें इनके कु-[illegible] से बचाती रहे, तो तुम इनके विघातक पंजों से रक्षा पा

सफल बनावें, यदि हम उसे बुराई का ग्राहक बनावें, यदि हम अपने मन में उसको प्रोत्साहन दें, उसका आदर करें, तो यह हम पर अपना जबरदस्त प्रभाव जमाना शुरू कर देगा।

यदि हम अपने मन को अपने उद्देश्य की ओर झुकाए रखें, यदि हम अपने जीवन-प्रवाह को और अपनी आत्मिक शक्तियों के स्रोत को अपने परमोद्देश्य की ओर बहावें—तो हमें वह अलौकिक साधन प्राप्त होगा, जिससे हम अपने इष्ट की सिद्धि कर सकेंगे।

विरोध को उत्पन्न करने वाला विचार हमारे परिश्रम को पंगु कर देता है। यदि हम कार्य-सम्पादन-शक्ति को उत्पन्न करना चाहते हैं, तो हमें तल्लीनता, एकता, मानसिक-शान्ति और विचार स्वातन्त्र्य को उत्पन्न करना चाहिए। इसी बात को हम दूसरे शब्दों में यों कह सकते हैं कि हमारा विचार-प्रवाह जीवन नाशक होने के बजाय जीवनप्रद होना चाहिए। वह मानसिक प्रवाह जो धैर्य से भरा हुआ है आत्म-विश्वास से पूर्ण है, मानो विद्युत शक्ति युक्त मानसिक बल है जो सफलता और विजय को हमारी ओर आकर्षित करता है।

बहुत से मनुष्य जो असफलता और पराजय के पंजे में फंसे हुए हैं, वे आसानी से उससे अपने आपको मुक्त कर सकते हैं, यदि वे अपने मन से इस तरह के विचारों को हटा लें। अपने मन को भय, चिन्ता, दारिद्र, आधिव्याधि से साफ करना और उसे प्रबल, आशाजनक और उन्नति विचारों से भरना—यह भी एक स्पष्ट दिशा है।

हमारे मानसिक भावों का—हमारी आशाओं का—हमारी

व्यक्ति का, हमारी सफलता से, घनिष्ठ सम्बन्ध है। दूसरे हमें कैसे गिनते हैं, इस बात से भी हमारी सफलता का सम्बन्ध है। यदि दूसरे मनुष्य हमारा विश्वास न करते हों—यदि वे हमें निर्बल और भीरु मानते हों—तो समझ लेना चाहिए कि हमारा मानसिक प्रकाश मन्द है—हमारी मानसिक शक्ति कमज़ोर है—निर्बल है और हम महत्व के पद पर न पहुँच सकेंगे।

जो मनुष्य विजयी जीवन व्यतीत करता है—संसार में विजयी होकर घूमता है—उसमें और उस मनुष्य में जो दास होकर—परतन्त्र होकर—संसार में रहता है, बड़ा फर्क है।

अमेरिका के भूतपूर्व प्रेसिडेन्ट थियेडर रुजवेल्ट जैसे महत् भावों की, जो चहुँ ओर अपनी शक्ति का प्रकाश फैलाते हैं, आप उन लोगों से तुलना करेंगे जो डरपोक हैं, निर्बल हैं, दासत्व भाव रखने वाले हैं, जिनका प्रभाव दुनिया पर बहुत कम पड़ता है, तो आपको दोनों का फर्क मालूम हो जायगा। संसार उस मनुष्य का—उस वीर का—सम्मान करता है—आदर करता है—पूजा करता है जो दास नहीं पर विजयी होकर निकलता है, जो दुनिया को इस बात का विश्वास करा देता है कि विजय अवश्यम्भावी है।

अपनी शक्ति पर विश्वास लाना ही संसार में उसका प्रकाश करना है। यदि तुम्हारे मानसिक भाव में शक्ति की स्फूर्ति नहीं होती है तो दुनिया तुम्हें शक्तिशाली के पद से सम्मानित नहीं करती है।

कुछ लोगों को इस बात का आश्चर्य होता है कि समाज में वे इतने तुच्छ क्यों गिने जा रहे हैं; क्यों उनका महत्व नहीं बढ़ता?

सका कारण यही है कि वे अपने आप को विजयी नहीं मानते, विजयी सा आचरण ही करते हैं।

वे अपने मन में विजय के उत्साही विचारों का प्रवाह नहीं हाते। वे हमेशा निर्बलता ही के भाव को उत्पन्न करते हैं। वहाँ क कोई मनुष्य प्रभावशाली नहीं हो सकता जहाँ तक कि शक्ति रहस्य का वह ज्ञान प्राप्त न कर ले। निश्चयात्मक प्रकृतियुक्त नुष्य ही प्रभावशाली हो सकते हैं। वीरों ने पहले मानसिक वजय प्राप्त की है और फिर सांसारिक।

हमें चाहिए कि हम अपने बच्चों के मन को विजय क चारों से भर दें। उन्हें समझा दें कि तुम्हारा जीवन ही विजय के लिए है—जीवन सफलता प्राप्त करने के लिए है। हमें उन्हें समझा देना चाहिए कि विजयी को ही संसार में स्थान मिलता है। विजयी ही की धाक से संसार में बड़े बड़े परिवर्तन हो जाते हैं। इसके विपरीत निर्बल को संसार में स्थान नहीं मिलता अत्याचारों से बचने की शक्ति न होने के कारण उस पर बड़े बड़े अत्याचार होते हैं। जगह जगह वह ठोकरें खाता है, घोर अप-मान सहता है। अथवा दूसरे शब्दों में यों कह सकते हैं कि विजय ही जीवन है और पराजय मृत्यु।

युवा पुरुष को संसार में प्रवेश करते समय यों नहीं कहना चाहिए कि "मैं विजय–सफलता–प्राप्त करना चाहता हूँ। पर मुझे अभी यह विश्वास नहीं है कि मैं उसके लिए कहाँ तक योग्य हूँ। जिस व्यवसाय में लगा हुआ हूँ, उस में पहले ही इतने लोग . . . हैं कि उन्हें . . . खाने को नहीं मिलता। बहुत से . . . समझा हूँ कि मैंने सख्त गलती की

है। पर मैं शक्तिभर अपने कार्य्य को अच्छा करने की को करूँगा; कुछ तो अच्छा बुरा फल निकलेहीगा"।

सच बात यह है कि लोग, जो कुछ हम हैं, उसी से हमारा वज़न गिनते हैं न कि जो कुछ हम कहते हैं उससे। हमें अपने सत्य पर प्रकाश डालना चाहिए। हम मन चाही बातें बना सकते हैं, पर जो कुछ हमारे मानसिक प्रकाश की प्रभा उन पर गिरेगी, उसी से वे हमारे प्रभाव की कीमत करेंगे क्योंकि यही हमारा सत्य है। चाहे तुम कितनी ही चिकनी चुपड़ी बातें बनाओ, पर इससे तुम अपने विषय में दूसरे मनुष्य के विचारों में परिवर्तन नहीं कर सकते। यदि तुम्हारे हृदय में द्वेष और प्रतिहिंसा के विचार गूँज रहे हैं—यदि तुम्हारा अन्तःकरण पर-जलन से जल रहा है; यदि तुम्हारे मन में निर्बलता घुसी हुई है तो दूसरे मनुष्य को तुम्हारे मन के ये सब कुभाव फौरन मालूम हो जावेंगे। हम अपने शब्दों में दूसरों को धोखा दे सकते हैं, पर तब तक हम अपनी मानसिक प्रभा को नहीं बदल सकते जब तक कि हम अपना सारा ही मानसिक प्रभाव न बदल डालें।

ज़रा उस मनुष्य की शोचनीय दशा की ओर आंख उठाकर देखिए जो यों कहता रहता है "हे समृद्धि! तू मुझसे दूर रह! मेरे पास मत आ। अवश्य ही मैं तुझे प्राप्त करना चाहता हूँ, पर ईश्वर ने तुझे मेरे लिए नहीं सृजा। मेरा जीवन बहुत ही लाचार है। यद्यपि मैं चाहता हूँ कि मुझे वे सब अच्छी वस्तुएँ प्राप्त हों, जो भाग्यवान को प्राप्त हैं, पर मैं आशा नहीं करता कि वे मुझे प्राप्त होंगी।"

जिस मनुष्य के इस तरह विचार होते हैं, समृद्धि और सौभा-

र्य उसके पास फटकने तक नहीं। जिनके मन मे भय और सं
रहता है वहां ऐश्वर्य का प्रवेश नहीं हो सकता।

पर समय आ रहा है जब कि हम लोग उत्पादक शक्ति
अपने मन को भर देंगे और तब हमारा जीवन ऐश्वर्य से
पूर्ण हो जायगा।

---

(४)

आत्म-विश्वास

वह पशुपालक सफलता मिलने की कैसे आशा कर सकता है, जो भयङ्कर और जंगली जानवर के पींजरे में शुरू ही में भय और संदिग्ध मन से प्रवेश करता है। कोई यों सोचता हुआ पिंजरे में घुसता है कि "मैं जंगली जानवरों को वश में लाने की कोशिश करूँगा, पर निश्चय रूप से यह विश्वास नहीं करता कि वास्तव में मैं ऐसा कर सकूँगा। अफ्रिका के जंगलों से जंगली शेर को पकड़ लाने की कोशिश करना, मनुष्य के लिए घातक कहा जाय तो अतिशयोक्ति न होगी। हाँ, ऐसे मनुष्य हैं जो ऐसे भयङ्कर कार्य्य को कर सकते हैं, पर मुझे सन्देह है कि शायद ही मैं ऐसे काम में सफलता करूँ।

यदि मनुष्य इस प्रकार के निर्बल, संदिग्ध और भयपूर्ण विचारों से जंगली जानवर का सामना करे तो इसमें तनिक मात्र भी सन्देह नहीं कि वह जानवर उसकी हड्डी हड्डी को चबा जायगा। ऐसे समय तो अविचल साहस और धैर्य ही उसकी रक्षा कर सकते हैं। ऐसे मनुष्य को चाहिए कि पहले उसे अपनी आँख से वश में लावे। आँख में उसके वह भाव झलकना चाहिए जो चित्ताकर्षक, हृदयग्राही, निडर और निश्चयात्मक हो, क्योंकि जहाँ उसकी आँख में ज़रा भी भय का, भीरुता का भाव झलका कि समझ लीजिए उसकी जान गई।

इसी प्रकार जीवन-संसार में मनुष्य तब तक सफलता-विजय
। नहीं कर सकता, जब कि उसके मनमें यह विश्वास न हो
जिसके लिए मैं काम कर रहा हूँ उसे मैं प्राप्त करता जा
।

म व्यापार में प्रवेश करने की इच्छा रखनेवाले उस नव-
सफलता की किस प्रकार आशा रख सकते हैं जिसका
। में ऐसा संदिग्ध मन होता है कि "मैं व्यापार में सफ-
ता प्राप्त कर सकूँगा या नहीं"। कभी किसी तरह किसी को
ता प्राप्त नहीं हो सकती, जब तक कि सफलता पर उसका
विश्वास न हो ले—जब तक कि उसका यह दृढ़ निश्चय
ले कि एक दिन मैं बहुत बड़ा व्यापारी हो जाऊँगा।
उसी काम को ठीक तरह कर सकता है—उसी में सफल-
प्राप्त कर सकता है जिसकी सिद्धि में उसका हार्दिक विश्वास है।
ह नवयुवक कैसे धनवान हो सकता है, जिसका विश्वास
कि मैं धन पैदा कर सकूँगा, जो ऐसा मानता है कि थोड़े
प्यों के भाग्य में धन बदा है अधिकांश आदमी गरीब रहने
मैं उनमें से एक हूँ।

ह मनुष्य कैसे विद्या प्राप्त कर सकता है, जिसकी दृष्टि में
का भाव छाया हुआ है—जो हमेशा यों सोचा करता है
य! क्या करूँ? मैं चाहता हूँ कि मैं लिखूँ पढ़ूँ। पर
ना ने मुझे निस्सहाय उत्पन्न किया है, मुझे किसी तरह का
नहीं है, न मेरे पास पैसा है और न मेरा कोई सहायक
ऐसी बुरी स्थिति के कारण मैं लाचार हो रहा हूँ। इसी

यह पूछा कि किस तरह ऊँचे पद पर पहुँच सकता है, ऐसा ख्याल है कि मैं उस पद के योग्य नहीं हूँ।

मैंने बहुत से ऐसे नवयुवकों को देखा है, जिनमें कोई वैद्य और कोई व्यापारी होना चाहता था। पर उनकी शक्ति इतनी निर्बल थी, उनका निश्चय इतना ढीला था कि कठिनाई ही ने उन्हें अपने उद्देश्य से चल-विचल कर उनके पैर फिसला दिये। वे अपने काम को ठीक तरह भी करने पाये थे कि निर्बल निश्चय ने उन्हें उससे दिया। मैं कहता हूँ कि उनको दिशा बदलने में एक चीज ने कमाल किया।

मैं ऐसे भी बहुत से नवयुवकों को जानता हूँ कि अपने व्यवसाय को निश्चित करने में इतने उत्साह और काम लिया था कि कोई उन्हें अपने उद्देश्य से हटा क्योंकि उन्होंने मन, वचन और काया से इस बात लिया था कि हमारा उद्देश्य हम से अलग नहीं। वह का एक विशेष और महत्वपूर्ण अंग है। यदि हम साहस द्वारा सम्पादित किये हुए उन बड़े-बड़े कार्यों कर्त्ताओं से विश्लेषण करें, तो आत्म-विश्वास ही सब गुण निकलेगा। वह मनुष्य अवश्य ही सफलता प्राप्त आगे बढ़ेगा—ऊँचा उठेगा—उन्नति-पथ पर अग्र जिसको अपनी कार्य-सम्पादन शक्ति पर विश्वास है— है कि मुझ में यह योग्यता है, जिससे मैं उस कार्य ही पूरा कर सकूँगा; जिसको मैंने हाथ में उठाया है। के विश्वास का कार्य कर और मानसिक परिणाम

हैं और कोई इसी बात की प्रतीक्षा करते रहते हैं कि कोई मनुष्य हमारे लिए मार्ग ढूँढ दे। आप जानते हैं कि दुनि इस बात की फुरसत नहीं है कि वह आपकी योग्यता की ताका करे, वह देखेगी इस बात को कि आप अपने उद्दे ओर किस गति से जा रहे हैं।

जितना आप अपनी योग्यता पर अविश्वास करेंगे, आप भय और शंका को अपने हृदय में स्थान देंगे, उ आप विजय से—सफलता से दूर रहेंगे। चाहे हमारा पथ ही कंटकाकीर्ण और अन्धकारमय क्यों न हो पर हमें कि हम कभी अपने आत्म-विश्वास को—मानसिक धैर्य तिलांजली न दें। हमारी शंकाएँ और भय जैसे दूसरों के को नष्ट करते हैं, वैसे अन्य कोई पदार्थ नहीं। बहुत से की असफलता का कारण यह है कि वे अपने निराशाजनि ही को प्रोत्साहन देते रहते हैं और अपने पास उठने बैठने लोगों में ऐसी ही निराशामय प्रेरणा किया करते हैं।

यदि तुम अपने आपको पतित समझोगे—यदि तुम म कि हम सामर्थ्य हीन मनुष्य हैं—हमारा कोई महत्व न दुनिया तुम्हें ऐसा ही समझेगी। वह तुम्हारा कोई महत्व समझेगी। वह तुम्हारी आवाज की कुछ कीमत न गिनेगी।

मैंने कोई ऐसा आदमी नहीं देखा जिसने अपने अ तुच्छ, हीन और बेकाम समझते हुए कोई महान् कार्य किया जितनी योग्यता का हम अपने आपको समझेंगे उतना ही म काम कर सकेंगे।

यदि आप बड़े-बड़े पदार्थों की आशा करते हैं—उनकी

ते हैं—और अपने मनोभाव को विशाल बनाये हुए हैं तो
पको बड़ी ही ऊँचे दर्जे की सफलता प्राप्त होगी ।

जैसे तुम अपने आप को गिनोगे, जैसे तुम्हें अपनी योग्यता
विश्वास होगा, जैसे तुम्हें अपनी उन्नति का महत्व मालूम हो
होगा—तुम संसार के लिए अपने आपको जैसे उपयोगी और
नदार गिनोगे, वैसा ही भाव तुम्हारे चेहरे पर और तुम्हारे
चार-विचार पर दीखने लगेगा ।

यदि तुम अपने को मामूली आदमी मानोगे तो तुम्हारे चेहरे
भी ऐसा ही भाव दीखने लगेगा । यदि तुम अपने आपका
मान करोगे तो तुम्हारा चेहरा इस बात की गवाही दे देगा ।
तुम अपने आपको गरीब और नाचीज समझोगे तो खूब
म लो तुम्हारे चेहरे पर कभी भाग्यशाली की प्रभा न चम-
—गरीबी ही की झलक तुम पर झलका करेगी । जो कुछ
तुम अपने आप में प्रकट करते हो उनका असर उस प्रभाव
ी रहता है जो तुम दूसरों पर डालते हो ।

जिन गुणों को आप प्राप्त करना चाहते हो उन्हीं गुणों को
आप अपने मानसिक भवन में पैदा करते रहेंगे तो धीरे-धीरे
ए आपके होने लगेंगे और इनका प्रकाश आपके चेहरे पर
ने लगेगा । यदि आप चाहते हैं कि हमारे कुल-परिवार पर
ता का भाव झलके तो पहले आप अपने हृदय में वैसे भाव
त्पन्न कीजिए । यदि आप चाहते हो कि हमारे कुल-परिवार
आचार-व्यवहार में सज्जनता का भाव झलके तो इसके लिए
रत है कि आप अपने विचारों में सज्जनता लावें ।
हमारे चारों ओर की हमारे आचार-विचार पर छाप हुई है ।

ं को तोड़ डाला है उस विश्वास में कितनी अद्भुत शक्ति भरी , इसका अनुमान कौन लगा सकता है ?

विश्वास ही से हम अपनी शक्ति को दूना कर लेते हैं और ी योग्यता को बढ़ा लेते हैं ।

एक हट्टे कट्टे और मजबूत मनुष्य में से जब आत्म-विश्वास लगता है तभी से उसके पैर फिसलने शुरू हो जाते हैं स ही वड़ी चीज है, जो हमें उस दिव्यता का दर्शन कराता हमारे भीतर भरी हुई है । विश्वास ही वह पदार्थ है जो से हमारा ऐक्य सम्बन्ध कराता है । विश्वास ही वह पदार्थ हमारे हृदय-कपाटों को खोल देता है, और विश्वास ही वह है कि अनन्त से मिला देता है जिससे अनन्त शक्ति, अनंत , अनन्त दर्शनों का हमें अनुभव होने लगता है । हमारा न महान है या साधारण, उच्च है या क्षुद्र, यह बात हमारी दृष्टि और विश्वास की शक्ति पर निर्भर है । बहुत से मनु, अपने विश्वास और श्रद्धा पर विश्वास नहीं लाते, क्योंकि वे बात को नहीं जानते कि यह क्या वस्तु है । वह यह नहीं ते कि विश्वास ही हमारी आत्मरक्षा की ध्वनि है । यह एक त्मिक कार्य्य-शक्ति है । यह एक ज्ञान है जो उतना ही महा तना इन्द्रियों द्वारा प्राप्त किया हुआ ज्ञान । विश्वास व श्रद्धा रे चित्त को ऊँचा उठानेवाले हैं । इन्हीं का अद्भुत प्रभाव रे आदर्शों पर गिरता है । ये हमें ऊँचा उठाते हैं । और उस पता—सफलता के दर्शन कराते हैं, जिनके लिए वे हमारी न-दर्शक हैं . . । ये ही सत्य और बुद्धि के प्रकाश हैं । में ात्म-विश्वास से हटाना और उन्हें वह

कहना कि तुम्हारा कोई महत्व नहीं—तुम नाचीज हो—
नहीं कर सकते यह भी एक अपराध है।

माता पिता और अध्यापकगण इस बात को बहुत
जानते हैं कि बच्चों का मन कितना कोमल होता है और
सामने इस तरह के साहसहीन वचनों के कहने से उन पर
बुरा प्रभाव पड़ता है। मैं निश्चयपूर्वक कहता हूँ कि संसार में
दुःख, दरिद्रता और असफलता दीख रही है वह अधिकां
हीन प्रेरणाओं ही का फल है। डाक्टर स्यूथी जो न्यूयार्क
पाठशालाओं के फिजिकल डाइरेक्टर हैं, कहते हैं कि
पब्लिक पाठशालाओं के बहुत से विद्यार्थी परीक्षा में अनुत्
हो जाने के सदमे से अकाल ही में काल के ग्रास बन जाते
परीक्षा में अनुत्तीर्ण होने का कारण आखों की कमजोरी,
दांत,पौष्टिक भोजन न मिलना बताया जाता है। बच्चे हमारे
हुए मार्ग पर नहीं चलते। वे यह नहीं जानते कि हम क्यों
अपूर्ण हैं? वे तो अपनी सफलता से दुःखी व उदास हो जा
उनका साहस टूट जाता है, उनका मन बेतौल हो जाता है।
साल में इसी कारण बहुत से विद्यार्थी आत्म-हत्या कर लेते हैं
लड़के ही क्यों! विश्वास-पतन का बुरा फल जानवरों तक
गिरता है। वह घोड़ा जो दौड़ की शर्त में सबसे आगे निक
वाला है कभी शर्त का इनाम न पायगा यदि उसका विश्वास
कर दिया जायगा—शाबाशी के शब्दों से उसे आश्वासन न
जायगा। जो लोग घोड़े आदि जानवरों को पालते हैं स
... उन्हें यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि वे हमेशा उ
...ास को बढ़ाते रहें। विश्वास ही से हमारी शक्ति का वि

है। विश्वास ही से हमें वह क्षमता प्राप्त होती है, जिससे
अपनी योग्यता को बढ़ा सकें। इसी से समय पर बड़े बड़े
ारिक कार्य्य हुए हैं। जो कोई तुम्हारे आत्म-विश्वास को
ा है वही मानो तुम्हारी शक्ति को बढ़ाता है।
संसार में जो मनुष्य बड़े बड़े काम करते हैं, उन सब में
दर्जे का आत्म-विश्वास होता है। अपनी शक्ति पर, अपनी
ता पर, अपने कार्य्य पर, बल पर, उनका पूरा पूरा विश्वास
है।
हमें चाहिए कि हम निरन्तर अपने आत्मविश्वास पर जमे
उसे किसी तरह ढीला और कमज़ोर न होने दें। हमें इस
का पूरा पूरा विश्वास होना चाहिए कि जो जो कार्य्य
हाथ में लिये हैं, उन्हें हम अवश्य ही पूरा करेंगे—उन्हें
य ही हम अन्त तक पहुँचावेंगे। संसार में जिन लोगों
ड़े बड़े अद्भुत कार्य किये हैं, आत्म-विश्वास ही के बल को
र कर वे चले हैं। यदि आप संसार के उन महान पुरुषों की
नी का अवलोकन करेंगे, जिन्होंने संसार की सभ्यता को
बढ़ाया है; तो आपको मालूम होगा कि उन्होंने जिस
य अपने कार्य का आरम्भ किया था, उस समय वे बहुत
व थे और बहुत वर्ष उनके लिए इतने अन्धकारमय गुजरे
उनमें उन्हें अपनी सफलता का कोई भी चिन्ह न दीख पड़ा।
वे इस दृढ़ विश्वास के साथ काम करते रहे कि कभी न कभी
अवश्य सफलता प्राप्त होगी—हमारे मार्ग पर प्रकाश गिरेगा।
ो तरह के आशामय और विश्वासपूर्ण विचार से कैसे कैसे
द्भुत आविष्कार हुए हैं? क्या आप जानते हैं कि पहले इन

आविष्कारों के कर्ताओं को कैसी कैसी मुसीबतों का सामना करना पड़ा है? क्या आपको यह मालूम है, कि बहुत वर्ष तक उन्हें सफलता का कोई चिन्ह ही न दीख पड़ा, बहुत वर्ष उनके लिए अन्धकारमय गुजरे, पर उन्होंने अपनी आशा को नहीं छोड़ा, विश्वास को तिलांजलि न दी और अपने मनादेश पर दृढ़तापूर्वक जमे रहे। अन्त में उन्हें प्रकाश मिला। वे सफल हुए। वर्षों का परिश्रम सफल हुआ। यदि वे अपनी आशा को छोड़ देते तो उन्हें यह प्रकाश कभी नहीं मिलता। कभी वे अद्भुत आविष्कार कर संसार को अचम्भे में न डाल पाते।

यह उन्हीं महान् आत्माओं का प्रताप है कि आज हम तरह तरह के आराम भोग रहे हैं, बिना तकलीफ के घंटों में सैकड़ों मील चले जाते हैं, आकाश की हवा खा लेते हैं, अपने इष्ट मित्रों के पास मिनटों में सुख या दुख का संदेशा भेज सकते हैं। इस महान् आत्माओं के पथ में विपत्ति के पहाड़ के पहाड़ आये, पर उन्होंने धीरता पूर्वक उन्हें तोड़ा। उन्हें निरुत्साह करने में—अपने पथ से च्युत करने में—लोगों ने कोई बात उठा न रखी, पर उन्होंने किसी की बात पर कान न दिया वे अपने मार्ग पर आगे बढ़ते ही गये, और बिना किसी की सहायता और सहानुभूति के उन्होंने वह अद्भुत काम किया जिसे देख कर दुनिया दंग रह गई।

हर काम उसी दशा में अच्छा होता है, जब कि विश्वास का प्राधान्य रहता है। विश्वास ही हमें ठीक मार्ग को बताता है और हमें अपने गंतव्य तक पहुँचा देता है। विश्वास ही कुंजी का रूप है। यह हमें हाथ में बो...

क्योंकि इस में वह शक्ति का एक ऐसा झरना देखता है, जिसके द्वारा सब कुछ कार्य हो सकता है।

आज तक कोई मनुष्य विश्वास के तत्व को ठीक तरह समझ न सका। यह क्या वस्तु है जो मनुष्य को अपने कार्य्य पर दृढ़ता पूर्वक जमा लेती है? यह क्या पदार्थ है जिससे मनुष्य निराशामय अन्धकार में रहते हुए भी आशा के प्रकाश की झलक देखा करता है? वह क्या पदार्थ है जो मनुष्य को विपत्ति सहने में धैर्य्य देता है? वह क्या पदार्थ है, जो दुःख में भी मनुष्य को आनन्द के सुख-स्वप्न दिखाता है? वह क्या पदार्थ है जो दरिद्रता के पंजे में फँसे हुए मनुष्य को आश्वासन देता रहता है? वह क्या पदार्थ है जो मनुष्य के हृदय को उस समय छिन्नभिन्न होने से बचाता है जब कि वह कौड़ी कौड़ी से मुहताज हो जाता है, और उसके इष्ट मित्र तक उसकी ओर से मुँह मोड़ लेते हैं? वह क्या पदार्थ है जो लाखों विपत्तियों के गिरने पर भी धीरता-पूर्वक खड़ा रहने का उसे बल देता है? दुनिया उन वीरों की ओर देखकर दंग रह जाती है, जिन्होंने दुनिया में सब कुछ खो दिया है, पर उस विश्वास को मजबूती से पकड़े हुए हैं कि हम उस कार्य्य को अवश्यमेव पूर्ण करेंगे, जिस पर हमने अपना अन्तःकरण लगाया है।

विश्वास ही वह चीज है, जो हमें जोर से कहती है कि अपने कार्य्य की ओर पैर उठा दो। वही हमारी आत्मा है, वही हमारी आध्यात्मिक अन्तर्दृष्टि है, वही हमारे मार्ग का पथ प्रदर्शक है, वही हमारी विघ्न-बाधाओं पर जय प्राप्त कर हमारे पथ को साफ करती है।

दुनिया में जो बड़े बड़े आविष्कार हुए हैं—नई नई बातें निकली हैं—अद्भुत कार्य हो रहे हैं—सब विश्वास ही के फल हैं

उस नवयुवक के भविष्य की कुछ चिंता नहीं जिसके हृदय में विश्वास ने जड़ पकड़ ली है। आत्म-विश्वास में वह ताकत है जो हजार विपत्तियों का सामना कर उन पर पूरा पूरा विजय प्राप्त कर सकती है। यही गरीब मनुष्य का मित्र है और यही उसकी सबसे अच्छी पूँजी है। हमने देखा है कि द्रव्यहीन पर आत्म-विश्वासी मनुष्यों ने दुनिया में गजब के काम किये हैं, जब कि बहुत से धनवान मनुष्य विश्वासहीनता के कारण बड़ी बुरी तरह असफल हुए हैं, वे कोई मार्के का काम नहीं कर सके हैं। यदि हमें विश्वास है कि हम बड़े बड़े कार्य्य कर सकेंगे दुनिया को फेर देंगे; हम बहुत कुछ कर सकेंगे—यदि हमे इस बात का विश्वास होगा कि हम में एक दैवी तत्व मौजूद है—ईश्वर ने हम में कोई नीच तत्व नहीं रक्खा है—हम में पूर्णता भरी हुई है-तो हमारे हाथ से दुनिया के बड़े बड़े कार्य होंगे।

जब कि मनुष्य राजकुमार है अर्थात् राजराजेश्वर ईश्वर का पुत्र है; जब कि दैवी रक्त उसके नस नस में बह रहा है; जब कि वह दैवी सम्पत्ति का उत्तराधिकारी है; तो क्यों न उसे अपने इस जन्मसिद्ध अधिकार पर धैर्य और विश्वास पूर्वक दावा करना चाहिए ?

बात यह है कि हम लोग अपने सद्गुणों को पूरी तरह नजर में नहीं रखते। इसी से हम उसका ठीक विकास नहीं कर सकते। इसी से दैवी भाव हमारे चेहरे पर नहीं झलकता।

हम देखते हैं कि बहुत से मनुष्य सदा ही गरीब बने रहते हैं

समाज में सम्मान प्राप्त नहीं कर सकते। इसका कारण यही
क वे अपने आपको हीन समझते हैं—उन्हें इन सद्गुणों
हिचान नहीं होती—जो उनकी आत्मा में रहे हुए हैं। य
आप भारत की नीच जातियों पर दृष्टि डालेंगे तो आपको मालू
होगा कि शताब्दियों से नीच वातावरण में पलने कारण वे इ
बात को साफ भूले हुए हैं कि हम भी मनुष्य हैं—हम में भी
ही दिव्य गुण मौजूद हैं, जो अन्य मनुष्यों में हैं। हम में
ही शक्ति है जो दुनिया के बड़े बड़े काम कर सकती है—ह
भी मनुष्य होने के कारण वे ही अधिकार रखते हैं जो अन
नुष्य भोग रहे हैं और आत्म-गौरव—आत्म-सम्मान—के ह
भी वैसे ही पात्र हैं जैसे अन्य मनुष्य।

वे समझे हुए हैं कि ईश्वर ने हमें जन्म से ही ऐसा ही
नाया है। हमारी योनी नीच रखी है, पर वे इस बात
हीं जानते कि ईश्वर की नजर में मनुष्य मात्र एकसा है
नुष्य जैसा कर्म करता है वैसा ही वह बन जाता है। ह
नुष्य को अच्छे कर्म कर ऊँचा उठने का अधिकार है। पर
चारे शताब्दियों से अत्याचार सहते आये हैं। अतएव वे मनु
ोचित अधिकार को भूल गये हैं। वे ईश्वर ही को दोष देक
ठ जाते हैं। ऊँचा उठने का प्रयत्न नहीं करते, अतएव हमेशा
न दशा में ही पड़े रहते हैं। इन पंक्तियों के लेखक ने बहुतों
अपनी आंखों देखा है कि बहुत से ढेढ़, चमार, भंगी, ड
नुष्यों से भी बदतर समझे जाते थे, शिक्षित होकर अप
त्म-गौरव को समझने लगे हैं। वे अब इस बात को मानने
हैं कि हमें भी ऊँचा उठने का हर हालत में हक है।

इसी से बड़े बड़े ओहदों पर काम कर रहे हैं। इन्होंने अपने आप को नीच समझना छोड़ दिया। कई लोगों ने अपनी अद्भुत प्रतिभा का परिचय देकर डंके की चोट इस बात को सिद्ध कर दिया है कि बुद्धि और प्रतिभा के ठेकेदार केवल ब्राह्मणादि उच्च जाति वाले ही नहीं हैं अन्य में भी वह वैसे ही विकसित हो सकती है जैसे ब्राह्मणों में। शीघ्र ही वह दिन आने वाला है—शीघ्र ही वह प्रभात होने वाला है, जब इन हीन माने जाने वाले अत्याचार-पीड़ित मनुष्यों के अलौकिक प्रकाश की ओर सारा जगत् टकटकी लगाकर देखेगा और अपने किये हुए अत्याचार पर पश्चात्ताप करेगा। देर केवल इस बात की है कि वे अपने को मनुष्य ख्याल करने लगें।

आत्मविश्वास और सफलता

चाहे हम इस बात को मानें या न मानें, पर यह बात सच है कि हम अपने आत्मविश्वास से पृथक नहीं हो सकते। जैसा हमारा आत्म-विश्वास है उससे बढ़कर हम कोई कार्य्य नहीं कर सकते।

यदि हम अपने आत्म-विश्वास को दृढ़ करते रहें—यानी हम इस बात को मानते रहें कि हम में ऊँची शक्ति और योग्यता मौजूद है, तो इससे हमारी मानसिक शक्तियों पर बड़ा ही उदार और दिव्य प्रभाव पड़ेगा।

यदि मनुष्यों में सबसे ज्यादा किसी बात की कमी है तो वह आत्म-विश्वास ही की है।

बहुत से मनुष्य ऐसे पाये जाते हैं कि जहाँ उनमें दूसरी

क्तियाँ बहुतायत से मिलती हैं, वहाँ आत्म-विश्वास की उनमें हो ही कमी रहती है। बहुत से मनुष्य जो असफल हो रहे हैं, फिर सफलता प्राप्त कर सकते हैं यदि वे अपनी इस शक्ति को ठीक तरह संस्कृत और प्रबल करें।

आप किसी डरपोक, शङ्काशील मनुष्य पास बैठा कर सिर्फ यह पाठ पढ़ाइए कि "तुम अपनी आत्मा में विश्वास करना सीखो। तुम में वह शक्ति मौजूद है जो दुनिया के बड़े बड़े काम कर सकती है। तुममें वह योग्यता मौजूद है जिससे समाज में तुम अपना वजन उत्पन्न कर सकते हो।" आप उसके आत्म विश्वास को इस तरह पुष्ट करते रहें फिर आपको यह बात मालूम होने लगेगी कि उसका साहस किस तेजी से बढ़ रहा है—उसकी मानसिक शक्तियों में किस तरह नया जीवन आ रहा है।

जैसे हम अपने आपको मानेंगे वैसा ही आदर्श हमारी आत्मा का बनेगा। हो नहीं सकता कि जैसा हम अपने आपको मानते हैं उससे हम ज्यादा बड़े आदमी बन जायें। यदि किसी प्रतिभाशाली मनुष्य को भी यह विश्वास करा दिया जाय कि वह अति [illegible] उसकी गति भी शीघ्रता—शुद्रता की [illegible] वह गिरता ही जायगा, जबतक कि [illegible], जबतक कि वह [illegible] की योग्यता चाहे [illegible] उन्नत ही मिलेगा, [illegible] होगा। अन्य मनुष्य के

अधिक कार्य्य कर सकता है जिसे अपनी श
नहीं है ।

मेरी समझ में हीन और क्षुद्र प्रकृति से रक्षा
और कोई दूसरा उत्तम उपाय नहीं है कि हम
महत्व को बढ़ाते रहें—हम मानते रहें कि संसार
कुछ महत्व है । इससे हमारे आत्मा की सब श
होकर हमारे आदर्श को पूरा करने में लग ज
हमारे जीवन का यह एक नियम है कि वह हम
अनुकरण करता है ।

आप अपना और दैवी सम्भावनाओं का उ
अत्युच्च आदर्श खड़ा कीजिए और इस आदर्श क
के लिए जी-जान से लग जाइए, जरूर आप
प्राप्त होगी ।

हमारी बहुतसी मानसिक शक्तियाँ चाहे जितन
न हों, पर यदि उनका संचालन अविचल आत्म-वि
न किया जायगा, तो उनका विशेष उपयोग नहीं
सिक शक्तियों पर आत्म-विश्वास का बहुत गहरा
है । संसार में ऐसा कोई पदार्थ नहीं है, जो मनुष
उठावे, जो मनुष्यों की हीन प्रकृति से रक्षा करे, ज
आत्म-विश्वास है । मानवी सभ्यता में आत्म-विश्वा
ऊँची शक्ति मानी गई है । मानवी कार्य्यों में इ
गणना सब से पहले की गई है । अधिक क्या कहें,
शक्ति के द्वारा मनुष्य जगदात्मा के ऐक्य का सुख

बड़ा प्रोत्साहन देता रहता है। आत्म-विश्वास की जितनी अधिक
मात्रा हम में होगी, उतना ही हमारा सम्बन्ध अनन्त जीवन औ
अनंत शक्ति से गहरा होता जायगा।

संशय ही हमारी कार्य्य-सम्पादन-शक्ति को पंगु करनेवाल
है। कार्य्य करने के पहले मनुष्य का यह विश्वास होना ह
चाहिए कि मैं इस कार्य्य को अवश्य कर सकूँगा। जहाँ तक
संशय का लेश भी उसमें बना रहेगा, वहाँ तक वह अपने कार्य
में पूरी सफलता न पा सकेगा। वह मनुष्य जिसका उद्देश्य
आत्म विश्वास और अभिलाषा से भरा हुआ है, तब तक चैन
नहीं पा सकता, संतोष प्राप्त नहीं कर सकता, जब तक कि वह
उसे पूरा न कर ले। अवश्य ही ऐसा मनुष्य अद्भुत सफलता
प्राप्त करेगा, चाहे कितनी ही कठिनाइयाँ उसके मार्ग में बाधा
क्यों न डालती रहें।

मैं जानता हूँ कि जिन लोगों ने संसार में अद्भुत सफलता
प्राप्त की है, वे हमेशा इसी बात को मानते रहे हैं कि हमारा
पासा हमेशा सीधा ही पड़ेगा; कभी उलटा न पड़ेगा। अपने
उद्देश्य का मार्ग चाहे जितना कंटकाकीर्ण और अन्धकारमय
उन्हें दीखता हो, पर वे इस बात की दृढ़ आशा और विश्वास
रखते हैं कि हमें अपने उद्देश्य पर पहुँचने में जरूर सफलता
प्राप्त होगी। इसी तरह आशामय मनोभाव रखने से वे सफलता
के तत्वों को अपनी ओर खींचते रहते हैं।

हमारी शक्तियाँ वैसाही काम करेंगी, जैसा कि हम उन्हें
हुक्म देंगे। वे स्वभावतया उन्हीं पदार्थों को उत्पन्न करेंगी,
जिनकी चाह हम उनसे करेंगे। यदि हम उनसे बहुत कुछ माँगा

साथियों ने कहा कि अपनी सेना इस दुर्भेद्य पर्वत को कैसे लांघ
सकेगी। इस पर नेपोलियन ने हँस कर कहा कि इसमें मा
बना दिया जायगा। बस फिर क्या देर थी! काम शुरू क
दिया गया। आल्पस में मार्ग बना दिया गया। फौज के जा
का रास्ता खुल गया। क्या कोई मनुष्य यह कहते में हिच
सकता है कि यह सब उस वीर के साहस और आत्म-विश्वा
ही का परिणाम था।

हमारी समझ में मनुष्य कहलाने का अधिकारी वही है
जो अपने आदर्श को पूरा करने के लिए, तन, मन, और धन,
लग जाता है—मन, वचन, काया को एक कर डालता है—
दावे के साथ कह सकता है कि असफलता—पराजय कोई ची
ही नहीं है उसे, विजय—सफलता पर पूरा आत्म-विश्व
होता है।

यदि हमें यह विश्वास है कि हम बड़े बड़े कार्य्य कर सकें
क्योंकि हम में यह योग्यता है जिससे महान् कार्य्य सम्पा
किये जा सकते हैं, तो हमें अवश्य ही सफलता प्राप्त होगी

परम पिता परमात्मा ने श्रद्धा और विश्वास को इसलि
उत्पन्न किया है कि वे हमें गिरने से बचाने के लिए हमारा ह
पकड़ें, हमें मुसीबत के समय धैर्य और आश्वासन देते र

उनकी दृष्टि में सफलता ही की झलक पड़ा करती है। उनकी आदत ही होती है कि वे विजय—सफलता के विश्वास ही से किसी कार्य को शुरू करते हैं और वे उसमें अद्भुत सफलता पा जाते हैं।

विघ्न बाधाओं का ख्याल और सफलता

बहुत से मनुष्यों के नाकामयाब होने तथा अच्छे अवसरों के रहते भी मध्यम स्थिति में पड़े रहने का कारण यह है कि वे अपने मार्ग की विघ्न-बाधाओं ही का ख्याल करते रहते हैं।

इससे उनका दिल टूट जाता है। साहसिक कार्य करने के वे योग्य नहीं रहते। उनकी उपज शक्ति नष्ट हो जाती है। उनका मन निषेधात्मक होजाता है। आशा और आत्म-विश्वास ही वे पदार्थ हैं जो हमारी शक्तियों को जागृत करते हैं और हमारी उपज-शक्ति को दुगुना तिगुना बढ़ा देते हैं।

जिस मनुष्य को चहुँ ओर विघ्न-बाधाएँ ही दीखा करती हैं उसका आत्म-बल कमजोर हो जाता है। वह किसी महान् कार्य्य को नहीं कर सकता। उसके मस्तिष्क में किसी नये आविष्कार की सृष्टि नहीं हो सकती। क्योंकि उसकी उपज-शक्ति पर निराशामय काला पर्दा पड़ा रहता है। वह इस मनुष्य की संकीर्ण दृष्टि के कारण अलग नहीं हो सकता। यदि हम किसी ऐसे मनुष्य को देखें जो महान कार्य कर रहा है, तो हमें समझ लेना चाहिए कि वह अपने मार्ग पर आने वाली विघ्न-बाधाओं का बड़ी वीरता के साथ सामना कर रहा है।

की जीवनी मालूम होगा कि उस
के मार्ग का पर्वत पड़ा हुआ उसके

करें और यह आशा रखें कि वे हमें अवश्य सहायता देंगी तो जरूर ये हमारे मनोरथों के सफल होने में सहायक होंगी।

हमारी मानसिक शक्तियाँ, हमारे आत्म-विश्वास और धैर्य पर; निर्भर करती हैं। वे हमारी कार्य-कर इच्छा-शक्ति के पूर्ण तया आधीन हैं। अतएव यदि हमारी इच्छा-शक्ति पोची और कमजोर होगी तो हमारी मानसिक शक्तियों का कार्य भी वैसा ही होगा। जहाँ हमारे आत्म-विश्वास और धैर्य में कमजोरी आई कि हमारी कार्य्य-सम्पादन-शक्ति में भी कमजोरी आ जायगी।

मेरा विश्वास है कि मनुष्य के जीवन के लिए इससे और कोई अच्छी बात नहीं है कि वह हमेशा यह मानता रहे कि मेरे लिए सब कुछ अच्छा होगा। जो कुछ कार्य्य मैं हाथ में लूँगा उसमें अवश्य ही मुझे सफलता प्राप्त होगी।

बहुत से मनुष्य यह दुराशा धर कर कि हमें कभी सफलता प्राप्त न होगी, दैव हमारे विपरीत है, अपने मुँह सफलता को जवाब दे देते हैं। उनका मानसिक भाव सफलता-विजय के अनुकूल नहीं होता। वे सफलता के परमाणुओं को अपनी ओर आकर्पित करते हैं। असफलता और विजय के भाव पहले मन ही में उत्पन्न होते हैं। यदि हमारा मन शंकाओं से भरा हुआ होगा, तो इसका परिणाम भी वैसा ही निराशा-जनक निकलेगा। विजय को प्राप्त करने के लिए अविचलित श्रद्धा की अत्यंत आवश्यकता है।

बहुत से मनुष्यों की स्वाभाविक प्रवृत्ति ही विजय की ओर झुकी हुई रहती है—वे विजय ही विजय के स्वप्न देखा करते हैं।

उनकी दृष्टि में सफलता की ही झलक पड़ा करती है। उनकी आदत ही होती है कि वे विजय-सफलता के विश्वास ही से किसी कार्य को शुरू करते हैं और वे उसमें अद्भुत सफलता पा जाते हैं।

विघ्न बाधाओं का ख्याल और सफलता

बहुत से मनुष्यों के नाकामयाब होने तथा अच्छे अवसरों के रहते भी मध्यम स्थिति में पड़े रहने का कारण यह है कि वे अपने मार्ग की विघ्न-बाधाओं ही का ख्याल करते रहते हैं।

इससे उनका दिल टूट जाता है। साहसिक कार्य करने के वे योग्य नहीं रहते। उनकी उपज शक्ति नष्ट हो जाती है। उनका मन निषेधात्मक होजाता है। आशा और आत्म-विश्वास ही वे पदार्थ हैं जो हमारी शक्तियों को जागृत करते हैं और हमारी उपज-शक्ति को दुगुना तिगुना बढ़ा देते हैं।

जिस मनुष्य को चहुँ ओर विघ्न-बाधाएँ ही दीखा करती हैं उसका आत्म-बल कमज़ोर हो जाता है। वह किसी महान कार्य्य को नहीं कर सकता। उसके मस्तिष्क से किसी नये आवि-ष्कार की सृष्टि नहीं हो सकती। क्योंकि उसकी उपज-शक्ति पर निराशामय काला पर्दा पड़ा रहता है। वह इस मनुष्य की संकीर्ण दृष्टि के कारण अलग नहीं हो सकता। यदि हम किसी ऐसे मनुष्य को देखें जो महान कार्य कर रहा है, तो हमें समझ लेना चाहिए कि वह अपने मार्ग पर आने वाली विघ्न-बाधाओं का बड़ी वीरता के साथ सामना कर रहा है।

नेपोलियन की जीवनी से आपको मालूम होगा कि जब इस महावीर के मार्ग में आल्पस् का पर्वत पड़ा तब उसके

साथियों ने कहा कि अपनी सेना इस दुर्भेद्य पर्वत को कैसे लांघ सकेगी। इस पर नेपोलियन ने हँस कर कहा कि इसमें मार्ग बना दिया जायगा। बस फिर क्या देर थी ! काम शुरू कर दिया गया। आल्पस में मार्ग बना दिया गया। फौज के जाने का रास्ता खुल गया। क्या कोई मनुष्य यह कहते में हिचक सकता है कि यह सब उस वीर के साहस और आत्म-विश्वास ही का परिणाम था।

हमारी समझ में मनुष्य कहलाने का अधिकारी वही है, जो अपने आदर्श को पूरा करने के लिए तन, मन, और धन, से लग जाता है—मन, वचन, काया को एक कर डालता है—जो दावे के साथ कह सकता है कि असफलता—पराजय कोई चीज ही नहीं है उसे विजय—सफलता पर पूरा आत्म-विश्वास होता है।

यदि हमें यह विश्वास है कि हम बड़े बड़े कार्य्य कर सकेंगे क्योंकि हम में यह योग्यता है जिससे महान् कार्य्य सम्पादन किये जा सकते हैं, तो हमें अवश्य ही सफलता प्राप्त होगी।

परम पिता परमात्मा ने श्रद्धा और विश्वास को इसलिए उत्पन्न किया है कि वे हमें गिरने से बचाने के लिए हमारा बाहु पकड़ें, हमें मुसीबत के समय धैर्य और आश्वासन देते रहें। मनुष्य के लिए ये उतने ही काम के हैं, जितने तूफान के वक्त नाविक के लिए दिग्दर्शन यन्त्र। जिस तरह घोर तूफान के समय भी नाविक को इस यन्त्र के कारण इस बात का आश्वासन रहता है कि चाहे जितना तूफान क्यों न हो, समुद्र में चाहे जितना अन्धकार क्यों न छा गया हो मैं इस यन्त्र के द्वारा

दिशा का पता लगाकर अपने निर्दिष्ट स्थान पर पहुँच सकूँगा। इसी तरह जिस मनुष्य को पूरा आत्म-विश्वास है उसे इस बात का गुमान रहता है कि चाहे जितने मुसीबत के पहाड़ मेरे रास्ते में क्यों न आवें, पर मुझ में यह शक्ति है कि मैं उनमें अपना रास्ता बना सकूँगा।

दुनिया उस मनुष्य के लिए स्वयं रास्ता कर देती है, जो शक्ति-शाली, आत्म-विश्वासी और दृढ़ाग्रही है। जो इस बात को जानता है कि संसार में ऐसा कोई पदार्थ नहीं—ऐसी कोई विपत्ति नहीं जो मेरी शक्ति का सामना कर सके। कायर मनुष्य ही इनसे डर सकता है—रास्ते में इन्हें पाकर पथ-भ्रष्ट हो सकता है। पर मैं तो इन पर पूरी पूरी विजय पा सकता हूँ।

उत्तरदायित्व—जिम्मेदारी—अपने सिर लेने से मत घबराइए। इस बात का पक्का इरादा कर लीजिए कि जो उत्तरदायित्व हमारे सिर पड़ेगा, उसे हम दूसरे मनुष्यों से नहीं [illegible] जाएँगे। मेरी राय में यह एक बड़ी भूल है कि हम अपने [illegible]मान उत्तरदायित्व से यह ख्याल कर बरी होने की कोशिश करते हैं कि आगे हम योग्य बन कर ऐसे उत्तरदायित्व को अपने ऊपर ले लेंगे। मान लीजिए—आपके कंधे पर [illegible] है-[illegible] जिम्मेदारी का है, आप उसे लेने से घबराते हैं। आप चाहते हैं कि इसे सिर लेने की अभी नहीं—तो कहिए इससे आपको क्या [illegible] होगा? यदि आप उसे ग्रहण कर लें और [illegible] से [illegible] रहेंगे तो धीरे धीरे आपकी आदत से यह सब [illegible] जायगी और आपको उसकी [illegible] की कुछ [illegible] [illegible]ती। [illegible] की [illegible] न [illegible]। और इस [illegible]

आपकी ऊँचे पद को ग्रहण करने की योग्यता बढ़ जायगी। सहज स्वभाव से आप जबरदस्त जिम्मेदारी के काम को कर सकेंगे।

जो वस्तु आपके लिए परम हितकर है, चाहे वह कितनी ही कठिन एवं अप्राप्य क्यों न मालूम होती हो, आप उसे प्राप्त करने के लिए निश्चय कर लीजिए। जरूर वह आपको प्राप्त होगी। इस तरह के निश्चय से आपका मनुष्यत्व बढ़ेगा।

महानता की आकांक्षा करने से मत डरिए। खुले दिल से इस तरह की आकांक्षाएँ करते जाइए। जरूर आपमें वे शक्तियाँ विकसित होकर सहायता करेंगी, जिन की आपको स्वप्न में भी कल्पना न थी।

महानता की महत्वाकांक्षा करने से हमारी आत्मा की सर्वोत्कृष्ट शक्तियों का विकास होता है; वे जागृत हो जाती हैं।

आप अपने आपको हमेशा सौभाग्यशाली ख्याल कीजिए। ऐसा करने की आदत डाल लीजिए। फिर देखिए कि इसका क्या प्रभावशाली फल निकलता है। आप इस बात की आदत डाल लीजिए, जिससे आप जीवन के प्रत्येक अनुभव से श्रेष्ठता ही की आशा रख सकें। लोगों को आप इस बात का विश्वास करा दीजिए कि वे आपको सौभाग्यशाली समझें—उनका ख्याल हो जाय कि हर कार्य्य में आपको यश मिलेगा।

अमेरिका के भूतपूर्व प्रेसिडेन्ट थियोडर रूजवेस्ट की लोगों में ख्याति हो चुकी थी कि जिस काम को वह हाथ में लेते हैं, उसमें यश पाते हैं। इस तरह की ख्याति से इन महानुभावों को बड़ा ही लाभ हुआ। महाशय रूजवेस्ट की यह ख्याति

थी कि वे राज्य के मामले में बड़े ही कुशल हैं—अद्वितीय हैं। उन से बड़ी बड़ी आशाएँ की जा सकती हैं। वे चाहे जो कुछ करते हों—चाहे जिस मार्ग पर जा रहे हों पर लोगों का विश्वास रहता था कि वे अवश्य ही विजयी होंगे। इस तरह के आशा मय विचारों प्रभाव से महाशय रुजवेल्ट की कार्य्य-सम्पादन-शक्ति को बड़ी सहायता मिलती थी। उनकी इच्छा-शक्ति इस तरह की दिव्य सहायता पाने से खिल उठती थी। उन्हें विश्वास हो उठता था कि परम पिता जगदीश्वर ने महान् कार्य्य करने ही के लिए मुझे उत्पन्न किया है। सृष्टिकर्त्ता का उद्देश्य यह है कि मैं महान कार्य्य करूँ। देश की सुख, समृद्धि और सभ्यता के बढ़ाने में लग जाऊँ। मेरे ही हाथों यह कार्य्य होना है।

कहना होगा कि उनकी आत्म-श्रद्धा ने देश के विश्वास को अपनी ओर खींच लिया। उनकी सुकीर्ति की मनोहर सुगंध आज अमेरिका राष्ट्र के हृदय को आनन्द के हिलोरे गिला रही है। जितना तुम अपने इस आत्म-विश्वास को बढ़ा लोगे कि जो कुछ हम चाहते हैं, वह हम कर सकेंगे, उतनी तुम्हारी कार्य-कर योग्यता बढ़ती जायगी। आप बड़प्पन का ख्याल कीजिए, आप अवश्य बड़े होंगे।

कार्य्य और आशा

देखा जाता है कि बहुत से मनुष्य योग्यता के रहते हुए भी अपने सारे जीवन में बहुत ही कम काम कर सकते हैं; क्योंकि वे बड़ी बुरी तरह निराशाजक प्रेरणाओं के शिकार बन जाते हैं। जब वे किसी काम में हाथ डालते हैं, तभी से असफलता के चिन्ह उन्हें दीखने लग जाते हैं, लाचारी ही के विचार उनके मनमें ज्यादातर आने लगते हैं, इसीसे उनकी कार्य-कर शक्ति मारी जाती है।

मैं अभागा हूँ। परमात्मा ने मुझे भाग्य-हीन ही पैदा किया है—दैव मेरे विपरीत है—इस तरह की खराब प्रेरणाओं का जैसा भयङ्कर परिणाम हो जाता है, वैसा किसी दूसरी बातों से नहीं होता। हमें जानना चाहिए कि भाग्य हमारे मानस क्षेत्र में ही छिपा है। वह किसी तरह मनोक्षेत्र से बाहर नहीं रह सकता। हम ही हमारे भाग्य के कर्ता विधाता हैं। हम में यह शक्ति है कि हम अपने भाग्य पर पूरी तरह शासन कर सकते हैं।

हम देखते हैं कि एक ही गाँव में जहाँ बहुत से मनुष्य यह रोना रोया करते हैं कि हमारी परिस्थिति अनुकूल नहीं है, हमें किसी प्रकार की सुविधाएँ नहीं हैं, वहाँ वैसी ही अवस्थाओं के दूसरे मनुष्य उन्नति करते जाते हैं और दुनिया में अपना वजन बढ़ाते जाते हैं।

उस मनुष्य के लिए क्या किया जाय जिसका ख्याल ही ऐसा है कि मैं अभागा ही जन्मा हूँ। मुझे सफलता—विजय प्राप्त नहीं हो सकती। असफलता के विचार से सफलता का उत्पन्न होना उतना ही असम्भव है, जितना बबूल के काटों से गुलाब के पुष्प का निकलना।

जब मनुष्य गरीबी के—असफलता के—विचारों से बहुत हैरान हो जाता है; जब केवल ये ही विचार उसके मगज में घूमा करते हैं; तो उसके मन पर इन्हीं विचारों का सिक्का जम जाता है, जिसका परिणाम उसके लिए बहुत बुरा होता है। ये विचार उसके मनोरथों को सिद्ध नहीं होने देते।

हम अपने भाग्य पर बहुत आरोप लगाया करते हैं, जो कि वास्तव में हमारे ही विचारों का फल है। हम देखते हैं कि बहुत से लोग बड़ी योग्यता के न होने पर भी उन्नतिशील दिखाई देते हैं, जब कि हम योग्यता के होते हुए भी असफलता के बड़ी बुरी तरह शिकार बन जाते हैं। हम केवल यह सोच कर बैठ जाते हैं कि दैव उन्हें मदद कर रहा है, विधाता ने उनके भाग्य में सौभाग्य-शाली होना लिखा है, पर हमारे भाग्य वैसे तेज नहीं, दैव हमारे विपरीत है, क्या करें? वे इस बात को नहीं सोचते कि उनका भाग्यशाली होना और हमारा कमनसीब होना, यह सब अपने अपने विचारों का फल है।

हम यह नहीं जानते कि हम अपने विचारों का किस तरह संचालन करें। हम अपने विचारों पर बराबर अधिकार नहीं रखते। हम अपनी आशा पर अपनी महत्वाकांक्षाएँ पूरी करने के लिए ज़ोर नहीं देते। हमें चाहिए कि हम अपने

आपको दिव्य और अलौकिक प्रकार में देखें। हमें चाहिए कि हम अपने आपको सर्वोत्कृष्ट प्राणी मानें और यह दावा करते रहें कि अनन्त शक्ति—अनन्त वीर्य—हमारी आत्मा में मौजूद है। अपने आपको दिव्य मानने से आप मत डरिए, क्योंकि यदि जगत-कर्ता परमात्मा ने आपको बनाया है तो जरूर आप में उसकी दिव्य शक्ति—दिव्य गुण—मौजूद हैं। जरूर आपका ईश्वरीय शक्ति पर अधिकार है।

आकांक्षाओं के अनुकूल प्रयत्न करते रहना और आचरण करना, इस बात में सचमुच एक अजीब तरह की उपज-शक्ति भरी हुई है।

मसलन् यदि आप तन्दुरुस्त रहना चाहते हैं तो तन्दुरुस्ती के ख्याल को इफरात से अपने मन में आने दीजिए। उसके मार्ग में किसी तरह की रोक मत कीजिए। आप तन्दुरुस्ती का भाव रखिए, बातें तन्दुरुस्ती की कीजिए। दावा कीजिए इस बात का कि उस पर हमारा स्वाभाविक हक है।

यदि आप समृद्धिशाली होना चाहते हैं तो समृद्धि के विचारों को बहुतायत से अपने मनोमन्दिर में आने दीजिए। कभी इस बात को मत सोचिए कि समृद्धि के विपरीत गुण रखनेवाली कोई वस्तु हमारे मन में प्रवेश कर जायगी। अपने मानसिक भाव को—अपने आचरण को समृद्धि के अनुकूल बना लीजिए। आप समृद्धिशाली, उन्नतिशील मनुष्य सा बर्ताव कीजिए, उसके समान पोशाक पहनिए, उसके समान अपने विचारों को बना लीजिए। जरूर आपको सफलता प्राप्त होगी। समृद्धि के सब आपकी ओर खिंच आवेंगे।

जैसे बनना चाहो वैसे ही विचारों से हृदय को भर दो

यदि आप शूर वीर और बहादुर होना चाहते हैं तो आप निर्भयता के—बहादुरी के ख्यालों ही को अपने मन में आने दीजिए। निश्चय कर लीजिए कि हम किसी बात से न डरेंगे। कोई हमें डरपोक नहीं बना सकता। यदि आप डरपोक हैं, इस बात में आपको शङ्का होती है और आप इस तरह की कायरता को छोड़ना चाहते हैं तो अब इस बात का ख्याल कर लीजिए कि हम मनुष्य हैं, कायर जन्तु नहीं, हमें डर किस बात का? डर हमारे सामने आ नहीं सकता। हमारी रचना ही परमात्मा ने ऐसी की है कि उसमें भय के तत्व ही नहीं रखे हैं; हम दुनिया में महान साहसिक काम करने के लिए बनाये गये हैं। इस तरह के विचारों की रोजमर्रा पुनरावृत्ति कीजिए और फिर देखिए कि वीरता के कैसे कीमती जौहर आपकी आत्मा में पैदा होते हैं।

यदि आपको माता पिता यह कहें कि तुम मन्दबुद्धि हो, डरपोक हो तो इस बात से साफ इन्कार कीजिए। कभी ऐसी बातों का असर अपने पर मत होने दीजिए। हृदय में इस बात का विश्वास करते रहिए कि हम मन्दबुद्धि नहीं—हम कायर नहीं। हमारे अन्दर वह योग्यता है, वह साहसिकता है, जिससे हम बड़े-बड़े कार्य्य कर सकते हैं, दुनिया हमारे कामों को देखकर दंग रह जायगी।

इस निश्चय से कि जो हम चाहते हैं, हम वह कर सकेंगे, जितना आप अपने आत्म-विश्वास को बढ़ावेंगे, उतनी ही आपकी योग्यता बढ़ेगी।

लोग आपके यावत चाहे जो ख्याल करें पर आप इस विचार पर जमे रहिए कि जो कुछ आप करना चाहते हो, वह आप कर सकोगे, जो आप होना चाहते हो वह आप हो सकोगे।

आपको यह बात न भूलना चाहिए कि आत्म-प्रेरणा (Self-suggestion) में बड़ी शक्ति भरी हुई है। आप हमेशा इस तरह का आचरण रखिए। इस तरह से बर्तिए कि जिससे स्वयमेव आपकी मानसिक प्रेरणा विजय, वृद्धि, उन्नति और उच्चता के लिए स्फुरित हुआ करे। लोगों में आपकी वाह वाह हो जाना कि आप उन्नति के मार्ग पर बड़ी तेजी से अग्रसर हो रहे हैं—आप महापुरुष होते जा रहे हैं—समाज में वजन प्राप्त कर रहे हैं—क्या कुछ कम बात है ?

जब आप किसी मनुष्य से मिलते हैं, तो तत्काल आपके मानसिक भावों का प्रभाव उसपर पड़ने लगता है। यदि आप में कुछ प्रभाव भरा हुआ होगा तो वह उस पर पड़े बिना किसी तरह न रहेगा। यदि वह आप में यह बात देखेगा कि आपकी प्रवृत्ति उच्चता की ओर लग रही है—आप बड़े मनुष्य होने वाले हैं—दिन दिन आप उन्नति कर रहे हैं, तो उसका यह ख्याल जरूर हो जायगा कि आप होनहार हैं।

कभी आप अपने आपको नीच, दीन, दुःखी दरिद्री, ख्याल मत कीजिए। कभी यह बात मत मान बैठिए कि हम निर्बल, अकर्मण्य और रोगग्रस्त हैं। आप अपने को हमेशा पूर्ण और साङ्गोपाङ्ग ख्याल कीजिए। कभी आप इस विचार को मत फटकने दीजिए कि हमें अस

दुःख दरिद्रता और असफलता उस मनुष्य के पास कभी
फटक सकती, जिसने अपनी प्रकाशमय बाजू को देख लिया
जो दैवी तत्वों में तन्मय रहता है। यह तो उन्हीं के पल्ले
ी हैं जिन्होंने अपनी दैवी तत्वों में तन्मयता नहीं प्राप्त की
जिन्होंने अपनी शक्तियों का विकास नहीं किया है।
इस बात को जोर के साथ मानते रहिए कि संसार में
: लिए जगह है और हम उस पर अधिकार करेंगे। और
ी आत्मा को ऐसी शिक्षा दीजिए जिससे वह महान्
ा रखना सीखे। आप अपने चाल-चलन-आचार-विचार—
भी इस बात को मत प्रकट कीजिए दुनिया में हम क्षुद्र
ं ही के लिए बनाये गये हैं। आप अपनी प्रकृति को निश्च-
क रखने का मुहावरा डालिए—आप हमेशा सुख-समृद्धि
चारों के प्रवाह को अपने मन में बहाइए—जरूर ये
को संसार में योग्य स्थान दिलवाएँगे।
विचार ही शक्ति है। हम और हमारी अवस्थाएँ विचारों
ल हैं। हम अपने विचारों के बाहर नहीं जा सकते।
किसी महापुरुष ने कहा है—"मानवी कर्तव्य बस इस बात
मा गया है कि पहले यह जान लेना कि हम क्या होना
ते हैं और फिर निरन्तर उसी का विचार किया करना।"
पाल नामक सुप्रसिद्ध साधु ने शुद्ध विचार के तत्व को स-
समझ लिया था। वह इस बात को जान गया था कि जो
ार निरन्तर हमारे मन में रहते हैं, वे ही हमारे चरित्र को
ठित करते हैं—वे ही हमारी आत्मा को सुसंगठित करते हैं,
े उसका उत्तेरा बड़े अच्छे विचारों से भरा हुआ है।

यह बात है "जो कुछ सत्य है, जो कुछ प्रामाणिक है—
कुछ न्यायपूर्ण है—जो कुछ प्रेममय है अर्थात् जिसमें
और उच्चता विद्यमान है, उसी का विचार करो।"

"उसी का विचार करो" यह कहने से सेंटपाल
यह उद्देश नहीं है कि तुम उन बातों को मन में केवल इ
उधर घुमाया करो, पर उन पर अपनी स्थिति को कायम क
मनोमन्दिर में उनकी नींव जमा दो। तब तक उनका पीछा
छोड़ो जब तक कि ये तुम्हारी आत्मा में परिणत न हो जावें
ठीक तरह बैठ न जावें—जब तक कि वह तुम्हारी—आत्मा
एक विशेष अङ्ग न बन जावे। यदि हम बुरे विचार पर स्थि
रहेंगे, तो हम में बुराई ही पैदा होगी। यदि हमारी आ
प्रेरणायें हीन और अशुद्ध होंगी तो हम भी हीन बन जावें
सेण्ट पाल ने इस बात को अच्छी तरह जान लिया था कि जि
पदार्थों पर हम अपनी स्थिति कायम करते हैं, जिनका हम म
करते हैं, वही पदार्थ हमारी मानसिक माला में गुंथ जाते हैं।

मैं चाहे जो करूँ, पर मैं अपने विचारों के बाहर न
जा सकता। मैं अपने विचारों ही के वायुमण्डल में रहता हूँ
मेरे आदर्श मेरे सिर के आस पास हमेशा चक्कर लगाया कर
हैं—आत्म-प्रेरणाओं का मुझपर हमेशा असर हुआ करता है

यदि मेरे विचार संकीर्ण हैं तो मैं संकीर्ण-संसार के परिस
से बाहर नहीं जा सकता। यदि मेरे विचार दुष्ट, उदासीन औ
असहिष्णु हैं तो मैं कभी उदार और श्रेष्ठ संसार में नहीं र
सकता! मैं उसके सच्चे आनन्द को नहीं लूट सकता और मुझे
यह अधिकार नहीं है कि संकीर्ण विचारों के रखते हुए मैं यह

इसी के प्रभाव से बड़े बड़े बुद्धिमान् एवं प्रतिभा-सम्पन्न मनु॰ का जीवन मिट्टी में मिल गया है। इसी ने संसार में रक्त की नदियाँ वहाई—भाई भाई में तलवारें चलवाई—राष्ट्र के राष्ट्र गारद कर दिये। उन लोगों के हाथ से भी इस दुष्ट ने कैसे कैसे अत्याचार करवाये, जिसका मन इसके आक्रमण के पहले बड़ा ही शुद्ध और निर्मल था।

तुम उन विचारों को अपने मन से बाहर निकाल दो, जो तुम्हारे मन को बुरे मालूम होते हैं। क्या चिंतापूर्ण विचार, क्या दुष्ट विचार, क्या भयपूर्ण विचार ये सब तुम्हारी उपजशक्ति को पंगु बनानेवाले हैं।

छाती पर हाथ ठोक कर इस बात को कहो कि हम में योग्यता, बल और कार्यसम्पादन-शक्ति भरी हुई है। ये शक्तियाँ हमारी मानसिक-शक्ति को बड़ा ही अपूर्व लाभ पहुँचाने वाली हैं इसी तरह के विचार से—इसी तरह के आदर्श से—मनुष्य बलवान बनता है।

अपने जीवन के दुःखमय अनुभवों को भूल जाओ। कभी उन्हें याद मत करो; क्यों कि इससे तुम्हारी उपज शक्ति मारी जाती है—तुम्हारी प्रतिभा का विनाश होता है। तुम अपने जीवन के सुखमय अनुभवों को याद करो, इससे तुम्हारे मस्तिष्क की शक्ति खिल उठेगी। तुम्हारी प्रतिभा-शक्ति को अपूर्व प्रोत्साहन मिलेगा। परवाह मत करो इस बात की कि लोग तुम्हारे विषय में क्या ख्याल रखते हैं, तुम अपने मन में यह बात कहते रहो "मुझमें यह शक्ति है—यह योग्यता है—यह कार्य सम्पादन का बल है—कि मैं दुनिया में अपूर्वता प्रकट कर

कता हूँ। दूसरे बड़े लोगों के समान मैं भी हो सकता हूँ। सार में ऐसा कोइ पदार्थ नहीं है, जो मेरी मानसिक शक्ति को ा कर सके—जो मेरी कार्य संपादन-शक्ति का नाश कर सके। ; नया में अपनी अपूर्वता का संदेश फैलाउँगा। दुनिया में मैं स रोशनी का प्रकाश करूँगा जिससे कि वह अन्धकार में से नेकल जावे और प्रकाश की ओर उसकी गति हो जावे। ईश्वर मेरी बनावट ही में वह तत्व रक्खा है, जिससे मैं इन महान् ार्य्यों को कर सकूँगा। दूसरे मनुष्य जो आन्तरिक प्रकाश को काशित करने में हिचकते हैं, इसका कारण यह है कि उन्हें इस ात का विश्वास नहीं रहता कि अनन्त शक्ति—परमात्मा—के म अंश हैं—हम में अपूर्व योग्यता भरी हुई है—हमारी कार्य-पादन-शक्ति बहुत अद्भुत है, पर मुझे तो इस बात का कारण ही खाई नहीं पड़ा कि मैं दुनिया में अपना सन्देशा सुनाने के क्यों ोग्य नहीं हूँ?

जब आपको मालूम हो कि उदासी का परदा हम पर पड़ ाहता है, जब आपको ऐसा मालूम हो कि नीच विचार हमारे ास आना चाहते हैं, जब आपको ऐसा मालूम हो कि हमारा मन ाबू हो रहा है, आप नीचे लिखे अनुसार किया कीजिए।

आप एकदम काम करना बन्द कर दीजिये और घर से ाहर निकल कर किसी शान्त जगह में चले जाइए। हो सके ो किसी ऐसी जगह में चले जाइए जो शान्त और प्राकृतिक ौन्दर्य्य से विभूषित हो। वहाँ एकचित्त होकर इस बात का वेचार कीजिए कि अब मैं अपने मन से उन कुविचारों को

इसी के प्रभाव से बड़े बड़े बुद्धिमान् एवं प्रतिभा-सम्पन्न मनुष्यों का जीवन मिट्टी में मिल गया है। इसी ने संसार में रक्त की नदियाँ बहाई—भाई भाई में तलवारें चलवाई—राष्ट्र के राष्ट्र गारद कर दिये। उन लोगों के हाथ से भी इस दुष्ट ने कैसे कैसे अत्याचार करवाये, जिसका मन इसके आक्रमण के पहले बड़ा ही शुद्ध और निर्मल था।

तुम उन विचारों को अपने मन से बाहर निकाल दो, जो तुम्हारे मन को बुरे मालूम होते हैं। क्या चिंतापूर्ण विचार, क्या दुष्ट विचार, क्या भयपूर्ण विचार ये सब तुम्हारी उपजशक्ति को पंगु बनानेवाले हैं।

छाती पर हाथ ठोक कर इस बात को कहो कि हम में योग्यता, बल और कार्यसम्पादन-शक्ति भरी हुई है। ये शक्तियाँ हमारी मानसिक-शक्ति को बड़ा ही अपूर्व लाभ पहुँचाने वाले हैं इसी तरह के विचार से—इसी तरह के आदर्श से—मनुष्य बलवान बनता है।

अपने जीवन के दुःखमय अनुभवों को भूल जाओ। कभी उन्हें याद मत करो; क्यों कि इससे तुम्हारी उपज शक्ति मारी जाती है—तुम्हारी प्रतिभा का विनाश होता है। तुम अपने जीवन के सुखमय अनुभवों को याद करो, इससे तुम्हारे मस्तिष्क को शक्ति मिल उठेगी। तुम्हारी प्रतिभा-शक्ति को अपूर्व प्रोत्साहन मिलेगा। परवाह मत करो इस बात की कि लोग तुम्हारे विषय में क्या ख्याल रखते हैं, तुम अपने मन में यह बात कहते रहो "मुझमें वह शक्ति है—वह कार्य सम्पादन का बल है—कि मैं दुनिया

है। जब कभी उन्हें मालूम होता था कि मेरे हाथों से इच्छा-
नुसार काम नहीं हो रहा है, मेरी बुद्धि भ्रमित होती जाती है,
मेरी निर्णय-शक्ति का ह्रास हो रहा है, तब वे अकेले किसी
निर्जन, शांत और सुन्दर वन में चले जाया करते थे और
हृदयपूर्वक ये उद्गार निकालते थे।

"हे नवयुवक! अब तुम्हें उस मार्ग पर जाने की आवश्य-
कता है, जो उन्नति के द्वार तक पहुंच रहा हो। अभी कुछ
पहले तुम्हारे जीवन की मधुरता जा रही थी, तुम्हारा आदर्श
गिर रहा था। तुम अपनी गरीबी की हालत से बेपरवाह थे।
तुम कुछ भी अच्छा नहीं कर रहे थे। तुम यह नहीं जानते थे
कि इस तरह की निश्चेष्टता और आलस्य से तुम्हारी कार्य-
सम्पादिका शक्ति पर बड़ा ही गहरा घाव लगता है। अच्छे
अच्छे अवसरों को तुम हाथ से खो देते थे, क्योंकि तुम उन्नति
के पथ पर नहीं थे।"

"अब तुम्हें अपने आदर्शों को साफ करने की ज़रूरत है,
क्योंकि उन पर जंग जमता जा रहा है। तुम सुस्त होते जा रहे
हो। हर एक की आसानी तुम चाहने लगे हो। याद रक्खो कोई
तुम्हें उस आदमी को नहीं मानता जो अपनी शक्तियों को
व्यर्थ खोता है, अपने आदर्शों को गिरते देखता है, अपनी महत्वा-
कांक्षा को मुरझाते देखता है। पर हे नवयुवक! अब मैं तुम
को तब तक नहीं रक्खूंगा, जब तक कि तुम अपने ठीक रास्ते
पर न आ जाओ, क्योंकि मैं जानता हूं कि ऐसा किये बिना
तुम्हारा आज अपने ध्येय पर पहुंचना असम्भव है।

देश-निकाला देता हूँ जो कि मेरी मानसिक एकाग्रता में विघ्न डालते हैं और मेरे मन को ठिकाने नहीं रहने देते। उस समय आप केवल उन पदार्थों का जो सुन्दर आनन्दपूर्ण और एकाग्रता के सूचक हों, ध्यान कीजिए। ऐसी ही वस्तुओं का वहाँ मनन कीजिए। वहाँ आप यह निश्चय कर लीजिए कि अब हमारे मन में आनन्द-परिपूर्ण विचारों ही का प्रवाह बहेगा। उदासीनता के विचार मेरे पास फटकने तक न पावेंगे।

दूसरे शब्दों में यों कह सकते हैं कि आप किसी प्रशान्त स्थान में निश्चय कर लीजिए कि हम उन गुणों का विकास करेंगे जो सच्चे मनुष्यत्व के द्योतक हैं। इस बात को विश्वास पूर्वक मनन करते रहिए कि संसार में ऐसा कोई पदार्थ नहीं है जो उस महापुरुष को प्राप्त न हो, जिसने अपनी शक्तियों का पूर्ण रूप से विकास किया है। परमात्मा ने हमें इसलिए बनाया है कि हममें दिव्य शक्तियों का विकास हो—किसी तरह की कमी और अपूर्णता न रहे। इस तरह के दिव्य विचारों के समुद्र में अपने मन को हिलोरे देते हुए आप अपने मकान पर जाइए। खुली हवा में सानन्दित होकर विजय की सफलता के श्वासोच्छ्वास लीजिए और फिर अपने काम पर लौटिए और उस सफलता का मजा चखिए जो ऐसा करने से आपको प्राप्त होगी। मैं निश्चय-पूर्वक कहता हूँ कि आप अपने में दिव्य-शक्ति और नवजीवन का संचार होता हुआ देख कर आश्चर्यचकित हो जावेंगे।

मेरे एक मित्र हैं जिन्हें उपर्युक्त क्रिया से बड़ा लाभ पहुँचा

तुम में वह योग्यता है जिससे तुम वर्तमान समय से बहुत अच्छा काम कर सकते हो। आज रात को तुम इस दृढ़निश्चय से कार्य आरम्भ करो कि नित्य ही ज्यादा सफलता प्राप्त होगी तो तुम्हारे लिए विजयी होना कोई बड़ी बात नहीं। तुम्हारा जीवन विजय के लिए है। निश्चय कर लो कि आज का दिन तुम्हारे लिए विजय का दिन होगा। तुम अपने आपको कार्य में लगादो। अपने मानसिक जालों को बाहर निकाल कर फेंक दो, उसे बिलकुल साफ कर डालो और केवल अपने उद्देश्य का, अपने ध्येय का—मनन करो।

तुम अपने हाथ से एक भी अवसर मत जाने दो, धर कर पकड़ लो। उसका अच्छा उपयोग करो। जितना तुम उससे खींच सकते हो, खींच लो।

बहुत से मनुष्य रोया करते हैं कि क्या करें हम अच्छे नहीं हैं; पर वे यह नहीं जानते कि हमारी सफल से प्रकट होती है न कि हमारे ग्रहों से ! वही आदमी खाता है, जो अपने को कमजोर समझता है। वही आद है जो अपने को क्षुद्र और हीन मानता है—जो यह म कि संसार के सर्वोत्कृष्ट पदार्थ दूसरों के भाग्य में लिखे में नहीं। दुनिया उसी की रहती है, जो उस पर विज है। अच्छे पदार्थों के स्वामी वे ही हो सकते हैं जो शक्ति से उन्हें प्राप्त करते हैं।

जिस मनुष्य ने यह शक्ति प्राप्त कर ली है कि व मन को उन्हीं विचारों से भरे जो ऊँचे उठाने वाले हों, पूर्ण हों, आनन्दमय हों; वही संसार में बड़ी सफल सकता है।

लेए हुए घर के कोनो मे बैठे मक्खियां मारा करते हैं। दासीन विचारों को बड़े आदर के साथ—बड़े सम्मान के बुलाते रहते हैं—वे अपनी दरिद्रता और दुर्भाग्य ही का वार विचार किया करते हैं—वे जब देखो तब अपने कष्टों की एाओं की—बात छेड़ा करते हैं। हर मनुष्य से वे यही कहते हैं कि क्या करें हम कमनसीब हैं, ईश्वर ने हमारे भाग्य ख नहीं लिखा, हमारा भाग्य फूटा हुआ है, दैव हमारे पित है। उनकी मुख मुद्रा की ओर देखने से साफ मालूम होता है कि मानों उन पदार्थों से उन्होंने अपना गहरा संबन्ध लिया है, जो उनके जीवन की मधुरता का नाश कर रहे उनके उन्नति के मार्ग में कांटे बिछा रहे हैं। इस तरह वे हमेशा जान में इस तरह के घोर निराशामय विचारों की जड़ अपने में जमाते जाते हैं।

मैं एक मनुष्य को जानता हूँ जो कि उदासीन और निरा-नक विचारों की बलि पड़ चुका था। उसकी स्वाभाविक कुछ ऐसी हो गई थी कि जहां वह जाता था, वहां उदासी नेराशा के, वायुमण्डल को अपने साथ फैलाता जाता था। मनुष्य उसकी ओर देखता था, उसके चेहरे पर भी उदासी विना नहीं रह सकती थी। उसके औदासिन्य-परिपूर्ण मुद्रा ओर देखने से मालूम होता था मानों समस्त संसार का र, विपत्ति इसी के सिर आ पड़ी है। उसके सम्मुख हँसना र आनन्द की बातें करना मानों दूसरे मनुष्य के लिए भी न जान पड़ता था। चाहे जितने उन्माद-परिपूर्ण और नन्दमय होकर आप उसके सामने आइए, उसकी खिन्न मुद्रा

(६)

उदासीनता से हानि

जो मनुष्य खुशमिजाज है, जिसकी प्रकृति आनन्द है, जो हमेशा आनन्द-समुद्र में लहराता रहता भारी से भारी विपत्ति आ पड़ने पर भी जिसकी मुस्कुर बराबर बनी रहती है, घोरातिघोर दुःखों के आक्रमण करते भी जिसके मुख-मण्डल पर हास्यरेखा बराबर झलका करती है वह इस तरह की आनन्दमय प्रकृति से खुश मिजाज से केवल अपने आप ही को फायदा नहीं पहुँचाता है, पर उस मनुष्य को भी जीवन की मधुरता का अनुभव कराने में सहायक हो पड़ता है, जिसका धैर्य, आशा और भरोसा ही नष्ट हो गया है। क्या हम उस मनुष्य को बहादुर नहीं कह सकते—वीर की सम्माननीय उपाधि से विभूषित नहीं कर सकते जिसके मुख-मण्डल की हास्यरेखा उस समय भी नहीं मिटती जब उसके जीवन का हरएक पासा उलटा ही पड़ता रहता है। हर बात उसके विपरीत होने लगती है। ऐसे मनुष्य के लिए हम जरूर यह कह सकते हैं कि उसका निर्माण जड़ प्रकृति पर विजय पाने के लिए किया गया है; क्योंकि साधारण मनुष्य इस तरह की अलौकिक वीरता नहीं दिखा सकता।

अंग्रेजी के सुप्रसिद्ध मि० कार्लाइल महोदय का कथन है— "कुछ मनुष्य केवल दरिद्री होने की शक्ति ही में धनी होते हैं।"

और निर्जीव बातचीत आपके मन पर खिन्नता का परदा डाल देगी। जब कभी मैं उसके पास जाता हूँ, तब मुझे मालूम होने लगता है कि मानों मैं सूर्य के तेजोमय आकाश से निकल कर घोर अन्धकार की ओर जा रहा हूँ।

परम पिता परमात्मा ने इस सुमनोहर पृथ्वी पर हमें इस लिए उत्पन्न किया है कि हम हमेशा खुशमिजाज रहें—मस्त रहें आनन्द के समुद्र में लहराते रहें न कि उदास और खिन्नमुद्रायुक्त रहें।

महात्मा एमर्सन ने कहा है—"आनन्दी और उत्साही मुद्रा ही हमारी मानसिक उन्नति और सभ्यता की परमावधि है। सदा उस मनुष्य को ओर देखकर, जिसके मुख-मुद्रा पर अलौकिक प्रकाश चमक रहा है—अपूर्व शान्ति झलक रही है—दैवी आनन्द अपना प्रकाश फैला रहा है—हमारे मन में कैसे दिव्य भावों का उदय होता रहता है। ऐसे मनुष्य की ओर निहार कर स्वभाव से ही हमें मालूम होने लगता है कि मानों उसका परम तत्वों के साथ संबन्ध है—उसकी दिव्यता खिल रही है—परमात्मा से उसका निकटस्थ संबंध हो रहा है। जहाँ जहाँ वह जाता है, वहाँ स्वभाव ही से आनन्द, उत्साह और आशा की वर्षा करता जाता है। पर हाय! ऐसे मनुष्यों की संख्या बहुत कम होती है।

सभ्यता में उस मनुष्य के लिए जगह नहीं जो उदास, खिन्न और निराश है। कोई मनुष्य उसके साथ रहना नहीं चाहता। हर मनुष्य उसकी हवा बचाने की कोशिश करता है।

उदासी और निराश मन बीमारी को बढ़ाने में

ता है, क्योंकि वह हमारी उस शक्ति को नष्ट करता है, जो धिव्याधि को हमारी ओर आने से रोकती है।

आत्म-पतन और उदासीनता जैसी भयङ्कर चीज दूसरी ई नहीं।

अहा! जब एक आनन्दी और आशापूर्ण आत्मा, किसी ी जगह जाती है जहाँ उदासी, अनुत्साह, निराशा छाई हुई तब वह अपने मनोहर स्वभाव—आनन्द-प्रकृति और हास्य वहाँ आनन्द, आशा और उत्साह का मनोहर आभास ाता है। वहाँ बैठी हुई खिन्न मुद्राओं को इसके दर्शन मात्र अलौकिक सुख का अनुभव होने लगता है—उदासी की ह उनके मुख-मण्डल पर आनन्द और हास्य-भाव झलकने ाता है।

बहुत से मनुष्य विजयद्वार तक पहुँचने में असफल हो ते हैं, इसका कारण यह है कि वे अपने मनोविकारों को वश नहीं कर सकते। वे उनके गुलाम बने रहते हैं।

मनुष्य की यह एक स्वाभाविक प्रकृति है कि वह खिन्न ौर उदास मनुष्यों की संगति को टालना चाहता है, उसकी वृत्ति उन्हीं मनुष्यों की ओर झुकती है जो खुश मिजाज और ानन्दप्रिय होते हैं।

देखा गया है कि कुटुम्ब में केवल एक निराश और दुःखित नुष्य के होने से सारा का सारा कुटुम्ब दुःखी और निराश ालूम होने लगता है। ऐसा मनुष्य अपने साथ साथ दूसरों को ी दुःखी और निराश बनाने का अपराध अपने सिर लेता है।

और निर्जीव बातचीत आपके मन पर खिन्नता का परदा ड
देगी। जब कभी मैं उसके पास जाता हूँ, तब मुझे मालूम
लगता है कि मानों मैं सूर्य के तेजोमय आकाश से निकल
घोर अन्धकार की ओर जा रहा हूँ।

परम पिता परमात्मा ने इस सुमनोहर पृथ्वी पर हमें
लिए उत्पन्न किया है कि हम हमेशा खुशमिजाज रहें—मस्त
आनन्द के समुद्र में लहराते रहे न कि उदास और खिन्नमुद्रा
रहें।

महात्मा एमर्सन ने कहा है—"आनन्दी और उत्साही
ही हमारी मानसिक उन्नति और सभ्यता की परमावधि है। स
उस मनुष्य की ओर देखकर, जिसके मुख-मुद्रा पर अलौकि
प्रकाश चमक रहा है—अपूर्व शान्ति झलक रही है—
आनन्द अपना प्रकाश फैला रहा है—हमारे मन में कैसे दि
भावों का उदय होता रहता है। ऐसे मनुष्य की ओर निहार
स्वभाव से ही हमें मालूम होने लगता है कि मानो उसका प
तत्वों के साथ संबन्ध है—उसकी दिव्यता खिल रही है
परमात्मा से उसका निकटस्थ संबंध हो रहा है। जहाँ
जाता है, वहाँ स्वभाव ही से आनन्द, उत्सा
वर्षा करता जाता है। पर हाय! ऐसे
कम होती है।

सभ्यता में उस मनुष्य के लिए
और निराशा है। कोई मनुष्य
हर मनुष्य उसकी हवा बचाने
उदासी और निराशा मन

वह मनुष्य जो अपने मन का गुलाम बना हुआ रहता है,
नेता और प्रभावशाली पुरुष नहीं हो सकता। मैं एक बुद्धिमान
य का जानता हूँ, जिसके लिए मेरा विश्वास है कि यदि
अपने मनोविकारों के बलि न पड़ा होता तो दुनिया में
बड़े काम करता। उसका स्वभाव ही कुछ विचित्र ढंग का
जब उसे अच्छी लहर आ जाती थी, तब तो वह बड़ा
वादी बन जाता था और उन्नति की बातें करने लगता था।
जब आकस्मिक उद्विग्नता का आक्रमण उस पर हो जाता
तब वह अपने को एकदम गिरा लेता था—निराशा में डूबा
था—अपनी सब आशाओं और आधारों को खो देता था।

अनुत्साह हमारी निर्णय-शक्ति को मलिन करता है। भय
ताव में आकर मनुष्य चाहे जैसी मूर्खता का काम करने
ा है। किस मार्ग पर जाना, क्या करना इस बात को बताने
व बुद्धि जवाब दे दे—जब तुम बड़ी गड़बड़ी और भय में
ो, तब कुछ देर ठहर कर अपने चित्त को शान्त करो—
हो जाओ और फिर विचार करो, तुम्हें रास्ता अवश्य
ा।

जब तक आप किसी बात का ठीक निर्णय नहीं कर सकते,
तक कि आपके मन में भय, शङ्का और निराशा बनी हुई
व तक आपका मस्तिष्क भय और चिंता से परिपूर्ण है,
क किसी बात का निर्णय करने में मत लगिए। तुम
ी बातों को तब ही सोचो जब तुम्हारा मस्तिष्क ठण्डा और
हो। जब मन में डर रहता है, तब मानसिक शक्तियाँ

ऐसे मनुष्य को खुद तो आनन्द लूटना दूर रहा दूसरों के आनन्द में भी वह कंटक-रूप हो जाता है।

मुझे स्मरण है कि एक मनुष्य खिन्नता की बीमारी से बड़ी बुरी तरह पीड़ित था। जब एकाएक उसके सामने किसी आकस्मिक उद्वेग का आवरण आ जाता था, तब उसका चेहरा बिलकुल ही बदल जाता था। वह पहचाना ही न जा सकता था। घोर चिन्ता के चिन्ह उसके मुख पर दृष्टिगोचर होने लगते थे। ऐसे समय वह कोई काम नहीं कर सकता था उसके मित्र उससे हवा बचाने लगते थे। मानसिक बीमारी की घोर व्यथा उसके मुखमण्डल पर छाई रहती थी।

क्या यह कुछ कम हृदय-द्रावक बात है कि एक बलवान और शक्तिशाली मनुष्य, जो कि दुनिया में बड़े बड़े काम करने के लिए बनाया गया है—संसार में अद्भुत शक्ति का प्रचार करने के लिए जिसका जन्म हुआ है—वह इस तरह की निराशामय और औदासिन्य-परिपूर्ण स्थिति का गुलाम बना रहे जो हमारे जीवन-प्रकाश पर काला स्याह परदा डालती है। जो मनुष्य हजारों मनुष्यों का नेता बनने का सामर्थ्य रखता है—जो मनुष्य सैकड़ों मनुष्यों को किसी बड़े काम में लगा देने की शक्ति रखता है, उस मनुष्य का इन मानसिक भूतों के लिए पंजे में पड़ जाना, सचमुच कितनी खेद की बात है।

दुनिया में हमें ऐसे ऐसे मनुष्य दीख पड़ते हैं जिनकी महत्वाकांक्षा बहुत बड़ी हुई होने पर भी, जिन के हाथों से बहुत मामूली काम होते हैं। इसका कारण यही है कि वे खिन्न और निराश रहते हैं।

की बात है कि हम लोग आनन्द उत्साह और आशारूपी की किरणों को आने देने के लिए अपने मनोमन्दिर के द्वारों ख़ुले नहीं रखते। हम अपने मनोमन्दिर को केवल अन्ध- ही से पूर्णतया भर लेते हैं. इसीसे हमारी उदासीनता— ता—नष्ट नहीं होने पाती, संसार हमें अन्धकारमय दीखने । है।

मेरी राय में सब विद्याओं की शिरोमणि विद्या यह है कि अपने मन को साफ करना सीखें। मन को भद्दी वस्तुओं कर सुन्दर और सुमनोहर वस्तुओं की ओर जमाना— से हटा कर ऐक्य में उसे लगाना—मृत्यु के विचारों से कर दिव्य जीवन के रहस्य में उसे लगाना—बीमारी के ों से हटा कर आरोग्य के मीठे विचारों में उसे सुख- कराना, यह एक बहुत बड़ी बात है। ऐसा करना कोई काम नहीं, पर मनुष्य के लिए यह सम्भव जरूर है। रों को ठीक ठीक रूप देने की इसके लिए बड़ी आव जा है।

यदि तुम उन कुभावनाओं के लिए, जो तुम्हारी सुखशान्ति टने वाली हैं, अपने मनोमन्दिर को बन्द किये रक्खोगे, रे धीरे यह हालत हो जायगी कि इनका स्पर्श भी तुम्हारी न हो सकेगा।

यदि हम चाहते हैं कि हमारे मनोमन्दिर से अन्धकार जावे तो हमें चाहिए कि हम अपने मन को प्रकाश से रोव कर लें। यदि हम चाहते हैं कि हमारे मन से विरोध- निकल जाय, तो हमें चाहिए कि हम अपने मन क ऐक्य

बिखरी हुई रहती हैं और हम एकचित्त होकर किसी बात का ठीक निर्णय नहीं कर सकते।

बहुत से मनुष्य संसार में उन्नति नहीं कर सकते, इसका एक कारण यह भी है कि, वे महत्वपूर्ण बातों का तब विचार किया करते हैं, जब उनका मन भटकता हुआ रहता है और उसमें भय तथा शङ्का बनी रहती है।

उसी समय मनुष्य को अपने मन और मस्तिष्क को स्थिर और शान्त करने की विशेष आवश्यकता है, जब वह किसी आपद तथा गड़बड़ी में पड़ा हो। ऐसी दशा में जब हमें मालूम हो कि हम पर भय और आपद अधिकार जमा रहे हैं, तब हम किसी महत्वपूर्ण बात का निर्णय ही न करें। तुम पहले अपनी दशा को सुधार लो। इसका अच्छा उपाय यह है कि उस गड़बड़ी को अपने मन से निकाल कर स्थिर करो। अपने आप पर तुम अपना अधिकार कर लो—अपने मन को समतोल कर लो, तब तुम्हारा मस्तिष्क इस योग्य हो जायगा कि वह चाहे जिस बात का निर्णय ठीक तरह कर सकेगा। पर इस बात का सदा सर्वदा स्मरण रक्खो कि व्यथित और गड़बड़ में पड़े हुए मन से किसी महत्वपूर्ण बात का निर्णय मत करो।

परम पिता परमात्मा की यह इच्छा नहीं है कि हम मानवगण अपने मनोविकारों के गुलाम बने रहें, पर उसकी यह इच्छा है कि—हम अपने मन को अपने काबू में रक्खें—जो चाहें सो विचार उसमें आने दें—हम उस पर शासन—राज्य करें।

सुसंस्कृत मस्तिष्क के लिए यह बात बहुत सम्भव है कि वह उदासीनता—उद्विग्नता—के आक्रमण को एकदम रोक सके, पर

खेद की बात है कि हम लोग आनन्द उत्साह और आशारूपी सूर्य की किरणों को आने देने के लिए अपने मनोमन्दिर के द्वारों को खुले नहीं रखते। हम अपने मनोमन्दिर को केवल अन्धकार ही से पूर्णतया भर लेते हैं. इसीसे हमारी उदासीनता—उद्विग्नता—नष्ट नहीं होने पाती, संसार हमें अन्धकारमय दीखने लगता है।

मेरी राय में सब विद्याओं की शिरोमणि विद्या यह है कि हम अपने मन को साफ करना सीखें। मन को भद्दी वस्तुओं से हटाकर सुन्दर और सुमनोहर वस्तुओं की ओर जमाना—विरोध से हटा कर ऐक्य में उसे लगाना—मृत्यु के विचारों से हटा कर दिव्य जीवन के रहस्य में उसे लगाना—बीमारी के खयालों से हटा कर आरोग्य के मीठे विचारों में उसे सुख-स्नान कराना, यह एक बहुत बड़ी बात है। ऐसा करना कोई सहज काम नहीं, पर मनुष्य के लिए यह सम्भव जरूर है। विचारों को ठीक ठीक रूप देने की इसके लिए बड़ी आवश्यकता है।

यदि तुम उन कुभावनाओं के लिए, जो तुम्हारी सुखशान्ति को लूटने वाली हैं, अपने मनोमन्दिर को बन्द किये रक्खोगे, तो धीरे धीरे यह हालत हो जायगी कि इनका स्वर भी तुम्हारी ओर न हो सकेगा।

यदि हम चाहते हैं कि हमारे मनोमन्दिर से अन्धकार निकल जावे तो हमें चाहिए कि हम अपने मन को प्रकाश से प्रकाशित कर लें। यदि हम चाहते हैं कि हमारे मन से विरोध-भाव निकल जाय, तो हमें चाहिए कि हम अपने मन को ऐक्य

के विचारों से भर लें। यदि हम चाहते हैं कि हमारे
असत्य निकल जाय, तो हमें चाहिए कि हम अपने
सत्य के विचारों में परिपूर्ण कर लें। यदि हम चाह
हमारे मन से कुरूपता निकल जाय, तो हमें चाहिए
अपने मन को सौंदर्य के विचारों से परिपूर्ण कर लें
चाहते हैं कि हमारे मन से अपूर्णता निकल जाय
चाहिए कि हम अपने मन को पूर्णता के विचारों
परस्पर विरुद्ध विचार एक साथ ही मन पर कानू
सकते। इस से आप अपने हितैषी विचारों ही को अ
सत्य और सौंदर्य्य के विचारों ही को अपने म
नहीं लाते ?

हमें चाहिए कि अपने मन से अप्रीतिकर,
और मृत्यु के विचारों को हटाने का मुहाविरा कर लें
इन कुविचारों से बिलकुल साफ कर अपना कार्य
हमें चाहिए कि हम अपनी मनरूपी गैलरी से
मान, माया लोभ और द्वेष के विचारों को हटाकर
दया और सहानुभूतिपूर्ण विचारों को जगह दें।

अमेरिका के भूतपूर्व प्रेसिडेन्ट रूजवेल्ट एक ब
शाली और योग्य व्यक्ति समझे जाते हैं। संसार प
प्रभाव डालने की उनमें शक्ति है। पर किसी काम
से पहले वे अपने विवेक से पूछ लेते हैं कि मैं अ
या नहीं। "हाँ" का उत्तर मिलने पर ही वे अपने
हैं। क्योंकि वे इस बात को जानते हैं कि

रहो। हमेशा मग्न रहो। दुःख, चिंता, और शोक को भ
मन से भुला दो। प्रकृति के सौंदर्य को—ईश्वर की अपार लीला
को देखकर आनन्दित होते जाओ। जहाँ देखो वहाँ सुख ही के
स्वप्न देखो। विपत्ति में भी सुख ही को देखो, हमेशा खुशमिजाज
रहो। उदासी, दुःख चिंता, पर विजय पाने का सहज और
सरल उपाय यही है। आनन्द—अलौकिक आनन्द—स्वर्गीय
आनन्द—दैवी आनन्द के दिव्य प्रवाह में तन्मय रहो—
अपनी आत्मा को उसकी ओर अभिमुख करो। कभी मुँह च
हुआ मत रक्खो। हमेशा हास्य की मधुर रेखा से अपने मुख
मण्डल की दिव्यता बढ़ाते रहो। बस यह उदासीनता पर विजय
पाने का राजमार्ग है।

इस बात को हमेशा मानते रहने से, कि अनन्त जीवन हमारी एकता है, मैं और परम पिता एक ही हूँ; हमें अपूर्व धै आश्वासन और निश्चय प्राप्त होता है। हमारा विश्वास हो जा है कि हम आकस्मिकता और किस्मत के गुलाम नहीं हैं ए उनको संचालन करनेवाले हैं—हम उनके स्वामी हैं।

जितना हम दैवी तत्व से एकता का संबंध जोड़ेंगे—जि हम अपने परम पिता परमात्मा में तन्मय होवेंगे, उतना ही हमा जीवन शान्तिमय, आश्वासनपूर्ण और उत्पादकशक्ति-युक्त होगा

सेन्ट पाल महोदय कहते हैं-"मेरा विश्वास है कि न मृत न जीवन, न स्वर्गीय दूत, न सिद्धान्त, न शक्ति, न वर्तमा पदार्थ, न भविष्य में उत्पन्न होने वाले पदार्थ, न ऊँचाई, न गहरा मतलब यह कोई भी पदार्थ हमें ईश्वरीय प्रेम से जुदा नहीं क कर सकता।"

" तुम अपने आत्मा के सत्य को पहचानो, वह सत्य तुम्हें मुक्त कर देगा।"

सेन्ट पाल के उपरोक्त वचन का एक एक शब्द हमारी मनो-माला में ग्रथित करने योग्य है। सेन्ट पाल जैसा विश्वास रखने से हम भय, शङ्का, चिन्ता आदि के पंजे से अवश्य ही मुक्त हो जावेंगे।

जब मानव जाति को यह ज्ञान हो जायगा कि सर्व शक्तिमान् परमात्मा से उनकी एकता का सम्बन्ध है, तब उसके सब भय शङ्काएँ नष्ट हो जायँगी।

जहाँ मन को दैवी तत्व की थोड़ी भी झलक दीख गई। जहाँ उसे यह मालूम होने लगा कि अनन्त से मेरी एकता है;

फिर वह किसी चीज से न डरेगा, क्योंकि उसे इस बात का विश्वास हो जायगा कि सर्व शक्तिमान परमात्मा मेरे साथ है, फिर मुझे डर किस बात का है ?

जितने ही हम ईश्वर के परम तत्त्व के पास होंगे, उतने ही हम पदार्थों के अटूट भण्डार के पास होंगे । जब हमें अलौकिक परम शक्ति का अनुभव होने लगेगा; जब हमें उस शक्ति का ज्ञान हो जायगा जो हमारे हाड़माँस वाले शरीर के पीछे रही हुई है, जब हमें मालूम होने लगेगा कि ईश्वर के हम बहुत पास हैं, तब हमारी शक्ति में अवश्य ही एक प्रकार की दिव्यता आ जायगी

यदि हम शक्ति के आन्तरिक दैवी प्रवाह की ओर पूरे तौर से अपने मनोमन्दिर के द्वारों को खोल दें, तो हमारे जीवन में कितनी अलौकिक शक्तियों का विकास होगा, इसका अनुमान भी इस वक्त लगाना कठिन है ।

आज हम क्यों कमजोर और अकर्मण्य हो रहे हैं, इसका कारण यही है कि हम अपने कुविचार और असदाचरण के कारण आत्मा की इस अलौकिक शक्ति की ओर से अपने मनोमन्दिर के द्वारों को अपने हाथ से बन्द कर लेते हैं । जहाँ तक मनुष्य असदाचरण में प्रवृत्त है, वहाँ तक वह सच्ची शक्ति नहीं प्राप्त कर सकता ।

जब जब मनुष्य कोई बुरा काम करता है, असदाचरण में प्रवृत्त होता है, तब तब वह अपनी शक्ति के बल को घटा लेता है । इस तरह बहुत से मनुष्य न्याय और प्रेम से नाता तोड़ कर ईश्वर से भी अपना नाता तोड़ लेते हैं । प्रत्येक दुष्कृत्य हम

तार को तोड़ देता है, जो हमारे और ईश्वर के बीच में लगा हुआ है ।

जब जब हम बुरा काम करते हैं, जब जब हम सत्य से विचलित होते हैं, जब हम कभी नीचता और बेईमानी का काम करते हैं, तब तब हम सर्वशक्तिमान् परमात्मा की दिव्य सत्ता से अपने आपको अलग कर लेते हैं । इसका परिणाम यह होता है कि सब प्रकार के भय, शंकाएँ और सन्देह हम पर बुरी तरह अधिकार कर हमें अपना शिकार बना लेते हैं । ईश्वरीय सत्ता से अलग होने पर हमारी दशा उस निःसहाय बालक की सी हो जाया करती है, जो घोर अन्धकार में अकेला छोड़ दिया गया है और बिलखता हुआ इधर उधर बड़े दुःख से घूम रहा है ।

मानव जाति अब इस बात को जानने लगी है कि उसकी शक्ति, उसकी विजय, उसका सुख उसी परिमाण में होगा जिस परिमाण में कि वह सकल शक्ति का सागर—अखिल सुखों का भण्डार-परमात्मा से अपना सम्बन्ध जोड़ेगा ।

जितने दुःख, जितनी विपत्तियाँ हमें प्राप्त होती हैं, उसका कारण यही है कि अनन्त ऐश्वर्ययुक्त सर्वशक्तिमान परमात्मा की ओर हम भिन्न भाव रखते हैं ।

जिस समय हमें ऐसा मालूम होने लगता है कि सकल पदार्थों के उद्गम परमात्मा से हमारा सम्बन्ध टूट गया, उसी समय से भय और अनिश्चितता से हमारा मन व्याप्त हो जाता है । हमें ऐसा मालूम होने लगता है कि मानो हम निःसहाय हो गये हैं । हमें पद पद पर भय होने लगता है । कमजोरी

ारे शरीर की नस नस में फैल जाती है। भय, चिन्ता और
ंता इस बात के साक्षात् प्रमाण है कि सर्वशक्तिमान परमात्मा
हमारा नाता टूट गया—अनन्त जीवन से हमारा ऐक्य
न्ध न रहा और मूल सिद्धान्त से हमारा विरोध हो गया।
अनन्त शक्ति परमात्मा से जितना हम अपना सम्बन्ध जोड़ेंगे,
नी ही शक्ति हमें प्राप्त होगी क्योंकि शक्ति वहीं से आती है।
पूर्ण प्रेम भय का नाशक है क्योंकि पूर्ण प्रेम अनन्त जीवन
त्मा और हमारे बीच के भिन्न भाव को नाश करता है।
जब हम आध्यात्मिक जीवन का अनुभव करने लगते हैं—
हमें पूरी तौर से यह निश्चय होने लगता है कि ईश्वर से
रा फिर सम्बन्ध जुड़ रहा है, तब हमारी सब विपत्तियाँ
बर होने लगतीं हैं—हमारे पाप और बीमारियाँ, शान्त
लगतीं हैं।

जब हमारा ईश्वर के साथ इतना गहरा सम्बन्ध हो जाता
के चहुँ ओर हमें वही वही दीखे, तब हमारी कमजोरी,
र्णता, भीरुता, संदेह आपने आप हममें से निकल जाते हैं
हमें पूर्ण निर्भयता और शक्ति प्राप्त होती है, जिसका उद्गम
परमात्मा मे है।

मनुष्य ईश्वर से जितना अपना सम्बन्ध जोड़ेगा, उतना ही
अपनी आत्मा में जीवन, सत्य, सौन्दर्य के तत्वों का
म करेगा। उसकी आत्मा नव शक्ति—नव धैर्य के सञ्चार
री भरी होकर खिल उठेगी।

मनुष्य उतना ही महान् होगा जितना वह अपनी आत्मा
त्य, त्याग, दया, प्रेम और शक्ति का विकास करेगा, और

इन सबके मूल परमात्मा से अपना सम्बन्ध जोड़ेगा। वह मनुष्य कभी महान् नहीं हो सकता। जो केवल अपनी वर्तमान शक्ति ही पर निर्भर रहता है और दैवी तत्त्व का ज्ञान नहीं करता।

मनुष्य अपनी ठीक ठीक शक्ति को जब तक नहीं प्राप्त कर सकता, जब तक कि वह इस बात को मन, वचन और कार्य से न समझ ले कि विश्व के महान् तत्व का मैं एक अंश हूँ।

सत्य ही हम हैं। भूल हमारी आत्मा का स्वभाव नहीं; ऐक्य हमारी आत्मा का गुण है; प्रेम, न्याय, सत्य, सौन्दर्य के हम तत्त्व हैं; इस बात को हृदयपूर्वक मान लेने से हमें अपूर्व शान्ति का अनुभव होने लगता है; निर्मलता के हमें दर्शन होने लगते हैं; धैर्य हमें प्राप्त होता है। आत्मा आध्यात्मिक भवन पर बहुत ऊँची चढ़ जाती है।

जितने हम परम तत्त्व में पूर्ण तन्मय रहेंगे, उतना ही जीवन और स्वास्थ्य-प्रवाह हमें प्राप्त होगा, जिससे कि हमारी सब आधिव्याधि शान्त हो जायगी। यही अर्थात् ईश्वर के साथ ज्ञानपूर्वक सम्बन्ध जोड़ना ही सब प्रकार की चिकित्सा का—स्वास्थ्य का—सुख समृद्धि का—रहस्य है। ऐसा कोई स्थायी सुख संयोग नहीं, ऐसी कोई स्थायी तन्दुरुस्ती नहीं, ऐसा कोई सच्चा सुख नहीं जो अनन्त जीवन के बाहर हो। यदि हम ज्ञानपूर्वक अनन्त जीवन के दिव्य प्रवाह में अपने शारीरिक और मानसिक दिव्य सुख को ठीक तरह स्थिर रख सकें तो यही मानव जाति के कल्याण का परम रहस्य है।

इस तरह की आत्म-स्थिति हो जाने पर दुःख हम पर अधिकार न चला सकेगी। फिर हमें इस बात का अनुभव हो

नहीं होगा कि बुढ़ापा क्या चीज है, क्योंकि दिन प्रति दिन बूढ़े होने के बजाय हम में अधिकाधिक यौवन का दिव्य प्रवाह बहने लगेंगे। दिन प्रति दिन हमारे शरीर में यौवन के जोशीले खून का प्रवाह ज्यादा जोर से बहने लगेंगे। दिन प्रति दिन हम कल्याण मार्ग की ओर ज्यादा जोर से पैर उठाने लगेंगे।

— —

(८)

प्रेम की शिक्षा

थोड़े ही दिनों पूर्व न्यूयार्क में एक प्रदर्शनी हुई थी, जिसमें एक घोड़े ने बड़े ही अद्भुत काम कर दिखाये थे। उस घोड़े के अद्भुत कामों ने दर्शकों को एकदम आश्चर्य में डाल दिया था। उसके स्वामी का कथन है कि इसके कोई पांच ही वर्ष पहले इस घोड़े में बुरी आदतें पड़ी हुई थीं। वह बहुत ही भटकता था—लात मारता था और काटता भी था। अब उसने अपनी पूर्व आदतों को छोड़ दिया है। अब वह तुरंत हुक्म माननेवाला, नम्र हो गया है। अब वह पदार्थों की गिनती कर सकता है, बहुत से शब्दों का उच्चारण कर सकता है और उनके अर्थ भी बता सकता है।

सचमुच यह घोड़ा प्रायः हर चीज को सीखने योग्य मालूम पड़ता था। पाँच वर्ष के दयापूर्ण शिक्षण ने इसके स्वभाव को एकदम पलट दिया। अच्छे बर्ताव से घोड़ों जैसे जानवरों के स्वभाव पर भी बड़ा ही अद्भुत प्रभाव होता है। चाबुक मारने तथा धमकाने से उतना किसी प्रकार का सुधार नहीं हो सकता। उलटी इनसे उसकी आदतें खराब होती हैं। इस घोड़े का पालक कहता है कि इन पाँच वर्षों में मैंने एक भी चाबुक उसे

मैं एक स्त्री को जानता हूँ जो कई बच्चों की माता थी। वह कभी अपने बच्चों को मारती पीटती न थी। लोग उसे कहते थे कि तुम अपने बच्चों को बिगाड़ दोगी। तुम उनको सुधार न कर सकोगी क्योंकि प्यार से बच्चे बिगड़ जाते हैं। पर पीछे उन्हीं लोगों को यह देखकर कि उन लड़कों के चरित्र ऊँचे हो गये हैं, अचम्भित होना पड़ा। उन लड़कों में मनुष्यत्व का सच्चा आदर्श देख कर उन्हें अपनी पूर्व भूल पर पश्चात्ताप करना पड़ा। उनके स्वभाव के अपूर्व विकास को देख कर उन्हें यह बात ठीक जँचने लगी कि प्रेमपूर्ण बर्ताव ही से वास्तव में बच्चों का पालन पोषण किया जाना चाहिए।

प्रेम ही सब की अद्भुत चिकित्सा है-प्रेम ही जीवनप्रद है। प्रेम ही जीवन है, प्रेम ही हमारी व्यथाओं को शमन करनेवाला है-प्रेम ही जीवन को वास्तविक आनन्द का देनेवाला है।

हम लोगों को ये बातें कब सिखाई जायँगी कि आरोग्य का मूल तत्व प्रेम ही है। प्रेम ही आरोग्य के निदान—परमात्मा से हमारा मेल कराता है। जहाँ प्रेम का सुखद साम्राज्य है वहाँ काम, क्रोध, द्वेष, लोभादि दुर्गुण तो फटकने भी नहीं प्रेम ही सुख और आनंद है।

म ही सर्वोत्कृष्ट शान्ति
करता है प्रेम ही
महान् व्याधि की
ईर्षा का
है,

करते रहना बहुत ही बुरा है। बच्चों के कोमल म[...]
तरह की हीनता और निर्बलतासूचक बातों का बहुत[...]
असर पड़ता है। बच्चों को उनके ऐबों और कमज[...]
याद दिलाने के बजाय यदि उनका मन श्रेष्ठता, सौंद[...]
के विचारों से भरा जावे तो मेरी राय में बड़ा ही [...]
लाभ हो। बच्चों के मन में प्रेम, सहानुभूति, [...]
उच्चता की प्रेरणाएँ करते रहने से थोड़े ही स[...]
का मन एक अद्भुत प्रकार के दिव्य प्रकाश से[...]
उठेगा। उसके मन की दशा कुछ ऐसी विचित्र [...]
बुरे तत्व फिर उसके पास फटकने तक न प[...]
उसका मन दिव्य प्रकाश से सौंदर्य से, दैवी प्रेम [...]
लब भर जायगा कि बुराई के तत्व उसके साम[...]
भ्रष्ट हो जावेंगे।

बच्चे के आत्म विश्वास को हमेशा हरा[...]
कोशिश करना चाहिए। हमेशा उसे प्रोत्सा[...]
चाहिए। उसको यह विश्वास करा देना चाहिय[...]
पुत्र है; अतएव उसके अनन्त ऐश्वर्य, अनन्त [...]
अधिकारी है।

बहुत से लड़के —खासकर वे जो कि स्व[...]
मन वाले हैं—डरपोक और शंकाशील हैं, [...]
लगते हैं कि शायद हममें बुद्धि की न्यूनता है [...]
अपनी योग्यता पर भी विश्वास नहीं रहता [...]
अनुत्साहित तथा निराश हो जाते हैं। अतए[...]
[...] को नष्ट करना—उसके मन पर निरा[...]

बड़ा ही भयंकर पाप है; क्यों कि आशाजनक शब्दों की तरह निराशाजनक शब्द भी बच्चे के कोमल मन पर अपना अधिकार जमा लेते हैं, जिसका कुफल बच्चों को आजन्म भोगना पड़ता है।

बड़े ही दुःख की बात है कि बहुत से माता-पिता इस बात को नहीं जानते कि बच्चे का मन कितना कोमल होता है और निराशा तथा उपहासजनक वचनों का उनके मन पर कितना बुरा प्रभाव होकर उनका सर्वनाश हो जाता है। बच्चों को तो शाबाशी, प्रशंसा और उत्साह ही की आवश्यकता है। इन्हीं से उनका जीवन उन्नतिशील हो सकता है। यही उनके लिए पुष्टिकर औषधि का काम देते हैं। हमेशा उन्हें भला-बुरा कहते रहने से—दोष देते रहने से—उनके स्वभाव पर बुरा असर होता है। उनकी प्रकृति बिगड़ जाती है। मेरी समझ में बच्चों के सामने हमेशा उनके दोष निकालते रहना—हमेशा उन्हें धमकाते रहना, उन्हें यह दुर्वचन कहते रहना कि तुम नालायक हो, बुद्धिहीन हो, भाग्यहीन हो, संसार में कभी तुम तरक्की नहीं कर सकते—भारी दुष्टता है।

बच्चे को नित्यप्रति यह कह कर कि तू मूर्ख है—मन्दबुद्धि है—सुस्त है—बेकाम है—तू कोई काम नहीं कर सकता—तुममें न बुद्धि है, न शारीरिक पराक्रम ही है। इससे तू कुछ नहीं कर सकता। इस तरह के पोचे और सत्वहीन विचारों से माता-पिता सहज ही में बच्चे की निर्माण शक्ति को कितनी नष्ट कर देते हैं—उसके उत्पन्न-शक्तियुक्त मन को कितना बेकाम कर देते हैं। दुर्भाग्य से यह बात ठीक तरह आज-कल के माता-पिता नहीं जानते।

मैं एक लड़के को जानता हूँ, जिसमें स्वाभाविक योग्यता अच्छी है पर जो बड़े ही कोमल मन का और डरपोक है। यही कारण है कि उसकी उन्नति की गति बहुत धीमी है। उसके माता-पिता और शिक्षक ने यह कह कर कि वह मूर्ख और मन्द-बुद्धि है, उसके प्रकाशमान भविष्य को नष्ट भ्रष्ट कर दिया। यदि इस लड़के की जरा भी प्रशंसा और वाहवाही की जाती, इसे जरा भी उत्साह दिया जाता, तो भविष्य में यह बहुत बड़ा आदमी बनता, क्योंकि बड़ा आदमी बनने के लिए जिस सामग्री की दरकार होती है, वह उसमें भरी हुई थी। प अपने माता-पिता तथा शिक्षक से ऐसे ही ऐसे पोच विचारों निरन्तर सुनते रहने के कारण उसका यह विश्वास हो गया कि मेरी बुद्धि उज्ज्वल नहीं—मेरी ज्यादा तरक्की हो नहीं सकती।

अब यह बात हम लोगों को मालूम होने लगी है कि उत्स और प्रशंसा से बच्चा जैसा सुधरता है, वैसा धमकाने मारने पीटने से नहीं सुधरता। उत्साह और शाबासी देने बच्चा आश्चर्यजनक उन्नति करता हुआ मालूम होने लगता हर्ष की बात है कि कोई कोई माता-पिता अब इस महान् हि तत्व को समझने लगे हैं, पर भारत के दुर्भाग्य से ऐसे म पिताओं की संख्या उँगली पर गिनने लायक भी नहीं है।

हम देखते हैं कि विद्यार्थीगण अपने उन शिक्षकों के चाहे जो करने को तैयार हो जाते हैं, जो शिक्षक विचारशील और खुशमिजाज होते हैं। ऐसे शिक्षक विद्यार्थी के बीच का बर्ताव अच्छा रहता है। हमारी सम विद्यार्थी और अध्यापक के बीच में किसी तरह की कुभाव

होनी चाहिए। होनी चाहिए केवल सद्भावना, जिससे कि अध्यापक को भी इस बात का यश मिल जावे कि इसने विद्यार्थियों के जीवन को ठीक सुधार दिया और विद्यार्थियों का भावी जीवन सुखमय बना दिया।

बहुत से माता-पिता अपने बच्चों के स्वेच्छाचार से बहुत तङ्ग आ जाते हैं, पर वे यह नहीं जानते कि यह बात शीघ्र मिटाई जा सकती है। जवानी के जोश में प्राय ऐसा हो जाया करता है। इस समय उनमें जीवन और उत्साह-शक्ति भरपूर भरी हुई रहती है, जिससे वे शांत नहीं रह सकते। इधर दौड़ना उधर कूदना आदि कई तरह के फरफन्द ही वे किया करते हैं। बिना हाथ पांव हिलाए उनसे बैठा नहीं जाता। पर हाँ, इस बात की माता-पिता को विशेष सावधानी रखनी चाहिए कि इस तरह फरफंद करते करते उनकी प्रवृत्ति कहीं दुष्कृत्यों में न चली जावे। मेरी समझ में माता-पिता प्रेमपूर्ण बर्ताव से उन्हें अपने वश में ठीक तरह ला सकते हैं।

अपने बच्चों को आदर्श मनुष्य बनाने का प्रयत्न कीजिए, उन्हें पशु मत बनाइए। उनपर प्रेम कीजिए। अपने घर को अपनी पूरी शक्ति खर्च करके खूब आनन्दमय बनाइए और अपने बच्चों को ऐसी स्वतन्त्रता दे दीजिए जिसमें किसी तरह की बुराई पैदा न हो और वे अपना मानसिक विकास कर सकें। आप खेल कूद में आनन्द क्रिया में अपने बच्चों का उत्साह बढ़ाइए। उनके आनन्द में बाधक मत होइए। बहुत से माता-पिता स्वास्थ्य कारी खेल खेलने में, आनन्द क्रीड़ा करने से उन्हें

रोक कर उनके बचपन के आनन्द को बहुत बुरी तरह नष्ट
देते हैं—उनके आनन्दमय बचपन को बिगाड़ देते हैं।

बड़े दुःख की बात है कि हजारों माता-पिता अपने ब
के साथ बहुत ही सख्ती का बर्ताव करते हैं—उन्हें बुरी त
धमकाते और भला बुरा कहते रहते हैं, इससे बेचारे वे को
हृदय बालक बहुत खिन्न और उदास रहा करते हैं। इस
परिणाम यह होता है कि उनका मानसिक विकास खिलने
रुक जाता है, वे आजन्म सकुचाए हुए ही रह जाते हैं।

प्रत्येक माता चाहे इस बात को जानती हो या न जान
हो, पर वह अपने बच्चों को अपनी आत्म-प्रेरणा के प्रभावों
प्रवाहित करती रहती है। बच्चों के पालन-पोषण में इस शक्ति
प्रभाव हुए बिना रह नहीं सकता। जब बच्चा किसी कारण
रोने लगता है तब वह बड़े प्यार से उसके चुम्मा लेने लगती
और पुचकार कर कहने लगती है "मेरे लड़के! चुप हो; ते
दर्द अच्छा हो गया है"। तो प्रेमपूर्ण आश्वासन से बच्चा अपने दुः
को भूल जाता है—उसे भारी तसल्ली हो जाती है। माता जब
प्रेम से अपने बच्चे पर हाथ फेरने लगती है, तब उसका असर
बच्चे के हृदय तक पहुँच कर उसके सारे शरीर में आनन्द उत्पन्न
कर देता है। हम देखते हैं कि बच्चे की छोटी मोटी तकलीफें तो
केवल माता के प्रेमपूर्ण आश्वासन से और हाथ फेर कर उसे
पुचकारने मात्र से दूर हो जाती हैं।

यह बात सही है कि प्रेरणाशक्ति के द्वारा बच्चों की उन
शक्तियों का विकास किया जा सकता है; जिन पर कि स्वास्थ्य,
सफलता और सुख निर्भर है। हममें से कुछ लोग इस बात को

वश्य ही जानते होंगे कि हमारे मानसिक भावों पर—हमारे
ों पर, हमारे आशा—भरोसे पर, हमारी सम्पादन शक्ति का
। निर्भर है। यदि बच्चे के कोमल मन पर शुरू ही से आनन्दी
र आशामय विचारों का प्रवाह चला जायगा, तो उनका
ा जीवन बड़ा ही आनन्दमय और आशापूर्ण हो जायगा।
ता अनुत्साह को अपने पास न फटकने देंगे।

जिन लोगों का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता, अवश्य ही उनके
न में स्वास्थ्यहीनता के विचार भरे होंगे। यह बड़े ही आश्च-
र्य की बात है कि बच्चों के मन में माता-पिता तथा अड़ोस
र के लोग अज्ञानता के कारण दुख दर्द आधि-व्याधि के
र बड़ी बुरी तरह भर देते हैं। वे उन्हें कहते रहते हैं कि
मनुष्य-शरीर तो दुःख दर्द व्याधि का घर ही है। बस ये
। बच्चों के दिल में जड़ जमा लेते हैं और इनका कुफल
न्म इन बेचारों को भोगना पड़ता है। बीमारी इसी कारण
क हाथ धोकर उनके पीछे पड़ी रहती है, जब तक कि मृत्यु
ठा न ले जाय।

रचा बीमारी की जितनी बातें सुनेगा, उतना ही बीमारी का
से बना रहेगा। धीरे धीरे उसका यह विश्वास हो जाता
र मेरे भाग्य में बीमारी ही बदी है—मैं इससे कभी
रा नहीं पा सकता। बस इसी कुविश्वास के कारण उसे
जीवन निरानन्दमय और शून्य सा प्रतीत होने लगता है।
मय को वह हमेशा कोसा करता है।

हीं बातों को ध्यान में रखते हुए हर माता-पिता को चाहिए
च्चे के कोमल मन में शुरू ही से सुस्वास्थ्य और हर्ष-

सम्पन्न विचारों को भरा करें। उन्हें यह बात समझा देवें। स्वास्थ्य ही स्थायी पदार्थ है। बीमारी हमारी भूल का परिणा मात्र है—हमारे बेमेल का नतीजा मात्र है। उसके मन में वि देना चाहिए कि सुस्वास्थ्य, समृद्धि, पूर्णता पर तेरा जन्मसि अधिकार है। आधिव्याधि, दुःख, दरिद्रता, मानवस्वमात्र अनुकूल नहीं। उसे ज्ञान करा देना चाहिए कि ईश्वर ने आधि व्याधि, दुःख, दरिद्रता पैदा नहीं की—उसकी यह मनशा नर्ह कि हम बीमारी भोगें। सुस्वास्थ्य लाभ करने के लिए—सुख भोगने के लिए आनन्द में मग्न रहने के लिए ईश्वर ने हमें बनाया है यह बात उन्हें समझा देना चाहिए।

बच्चे हर बात पर झट विश्वास कर लेते हैं। उनके माता-पिता बन्धुवर्ग और अड़ोस पड़ोस के लोग जो बातें कहते हैं, उन पर वे विश्वास कर लेते हैं। यहाँ तक कि हँसी में भी उनसे जो बातें कही जाय उसे मानने को भी वे तैयार हो जाते हैं। इन बातों का अच्छा या बुरा प्रभाव उनकी आत्मा में जम जाता है जो उनके भावी जीवन में प्रकट होता है।

बच्चों को झूठा भय नहीं दिखाना चाहिए

बहुत से अज्ञानी और अविवेकी माता-पिता बच्चों को कई प्रकार के डर बता कर उन पर शासन जमाने की कोशिश कर है। "हौआ आया, वह तेरे कान काट लेगा" आदि बातें क उन्हें डराते हैं; जिससे कि वे रोते हुए चुप हो जावें, तथा मस्त करते हुए रुक जावें। पर इस प्रकार के माता-पिता इस बात क साफ भूल जाते हैं कि ऐसा करने से बच्चों का हम बड़ा अहि कर रहे हैं, और उन्हें भीरु तथा डरपोक बनाने का पाप अपने

र ले रहे हैं। इस तरह की भयावनी बातों से बच्चों का सत्या-
श करता है। हम देखते हैं कि बहुत से माता-पिता रात को
न रोवें इस ख्याल से उन्हें अफीम इत्यादि विषैले पदार्थ
श करते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि उनके मानसिक
घम पर बड़ा जबरदस्त धक्का पहुँचता है और वे मन्दबुद्धि हो
ते हैं। जो मातापिता अपने लड़कों को बुद्धिमान् और प्रतिभा-
ली बनाया चाहते हैं; उन्हें चाहिए कि वे अपने लड़कों
अफीम आदि मादक पदार्थ कभी न खिलाया करें।

यदि यह भी मान लिया जाय कि भय दिखाने से बच्चों का
ाप नुकसान नहीं होता, तो भी उन्हें डराना बुरा ही है; क्योंकि
ा देना किसी तरह अच्छा नहीं कहा जा सकता। यदि
ा-पिता के लिए कोई सब से अच्छी बात है, तो वह यह
के वे अपने बच्चों के मन को आत्म-विश्वास से भर दें अपने
चों पर विश्वास करें। अनुभव से यह बात जानी गई है, कि
प बच्चे का एक दफा विश्वास हटा दिया जाता है उसका
ास फिर उसके मन में सहज ही जड़ नहीं जमा सकता।
ा-पिता और बच्चे के बीच में कोई भेद न होना चाहिए।
ा-पिता को चाहिए कि वे अपने बच्चों के प्रति साफ और
दिल से बर्ताव करें। वे इस बात की पूरी चिन्ता रक्खें कि
ीं बच्चे के दिल को व्यर्थ ही न दुखावें।

जब बच्चा बड़ा होता है और वह देखता है कि जिन पर मैं
तरह विश्वास करता था और जिन्हें मैं ईश्वर-तुल्य समझता
वे वर्षों से हर तरह मुझे धोखा दे रहे हैं तब उसके दिल को
नी चोट पहुँचती है—इसका ख्याल भी कभी आपने किया है?

माता-पिताओं को यह बात हमेशा ध्यान में रखनी चाहिए कि हर प्रकार की क्लेशजनक बातें जो बच्चे के सामने कही जाती हैं-हर प्रकार का मिथ्या भय जो बच्चे के कोमल मन में भर दिया जाता है तथा जैसे भाव माता-पिता उसके प्रति रखते हैं और जैसा उसके प्रति बर्ताव करते हैं; ये सब बातें उसके मन में उसी तरह जम जाती हैं और उसके भावी जीवन में प्रकट होती हैं जैसे फोनोग्राफ की चूड़ी में उतारा हुआ गाना जैसा का तैसा गायनरूप से प्रकट होता है।

जब लड़का भयभीत हो रहा हो, तब तुम उसे कभी मत मारो, न पीटो। जिस तरह व्यर्थ ही बहुत से माता-पिता अपने बच्चों को मारा पीटा करते हैं, उस तरह से मारना सचमुच उनके प्रति दुष्टता का बर्ताव करना है। जरा इस भयंकरता को सोचिए तो सही कि इधर तो बच्चा मारे भय के चिल्ला रहा है और उधर पिता गुस्सा होकर बेंत लिये हुए उसे पीटने को तैयार खड़ा हुआ है। इसका बच्चे पर बहुत ही बुरा परिणाम होता है। बहुत से बच्चे माता पिता तथा शिक्षक की इस दुष्टता को कभी नहीं भूलते और बदला लेने की फिक्र में रहते हैं।

बहुत से माता-पिता बच्चे को उसके स्वभाव के विपरीत धन्धे में पटक कर उसके उन्नति-पथ पर बड़ी बुरी तरह कांटे बिछा देते हैं। वे उसे ऐसे विषय का अभ्यास करवाना चाहते हैं, जिसे करने का उसका दिल नहीं चाहता; जिसके लिए वह अपने आपको अयोग्य समझता है। जैसे बच्चे का दिल डाक्टरी के अध्ययन में लगता हो और उसे कानून का अभ्यास करने में

मजबूर करना। इसका परिणाम यह होता है कि उस बच्चे का प्रकाशमान भविष्य अन्धकारमय हो जाता है और अपने स्वभाव से विपरीत विषय में वह अपनी प्रतिभा का विकास नहीं कर सकता। अतएव माता-पिताओं को चाहिए कि जिस विषय की ओर बच्चे का दिल जाता है उसी विषय को अध्ययन करने की उसे आज्ञा दें।

माता-पिताओं को यह बात ध्यान में रखना चाहिए कि बच्चों की स्वाभाविक गति में बाधा उपस्थित करना, मानो उनकी कार्य-संपादन-शक्ति को नष्ट करना है। ऐसे बहुत से मनुष्य देखे जाते हैं, जो बहुत से गुणों से युक्त हैं, पर किसी तरह की कमजोरी तथा कमी के कारण वे अपनी योग्यतानुसार कार्य नहीं कर सकते, और इसका कारण यही है कि बचपन में इनकी ये कमजोरियाँ और कमतरताएँ नहीं निकाली गईं जो कि उस समय सहज साध्य थीं। केवल योग्यता का होना काफी नहीं, वरन् उस योग्यता को उपयोग करने की शक्ति का होना भी उसके साथ साथ आवश्यक है।

यदि बच्चों को निश्चयात्मक और उपजशक्ति को बढ़ाने की शिक्षा दी जावे तो मेरी समझ में यह उनके लिए बहुत मौलिक और महत्त्वपूर्ण होगी। बच्चों को सिखाना चाहिए कि वे अपने मन को सर्वोच्च उपज शक्ति की ओर कैसे लगा सकते हैं?

बच्चों को यह शिक्षा देना बहुत जरूरी है कि वे अपने जीवन में सुख, शान्ति और सफलता कैसे प्राप्त कर सकते हैं—वे कैसे उन्नति पर पहुँच सकते हैं? वे अपनी आत्मा की दिव्य-शक्तियों को किस तरह प्रकाशित कर सकते हैं?

माता-पिताओं को यह बात हमेशा ध्यान में रखनी चा
कि हर प्रकार की क्लेशजनक बातें जो बच्चे के सामने क
जाती हैं–हर प्रकार का मिथ्या भय जो बच्चे के कोमल मन
भर दिया जाता है तथा जैसे भाव माता-पिता उसके प्रति रख
हैं और जैसा उसके प्रति बर्ताव करते हैं; ये सब बातें उस
मन में उसी तरह जम जाती हैं और उसके भावी जीवन में
प्रकट होती हैं जैसे फोनोग्राफ की चूड़ी में उतारा हुआ गाना
जैसा का तैसा गायनरूप में प्रकट होता है।

जब लड़का भयभीत हो रहा हो, तब तुम उसे कभी मत
मारो, न पीटो। जिस तरह व्यर्थ ही बहुत से माता-पिता अपने
बच्चों को मारा पीटा करते हैं, उस तरह से मारना सचमुच
उनके प्रति दुष्टता का बर्ताव करना है। जरा इस भयंकरता
को सोचिए तो सही कि इधर तो बच्चा मारे भय के चिल्ला
रहा है और उधर पिता गुस्सा होकर बेंत लिये हुए उसे

जबूर करना। इसका परिणाम यह होता है कि उस बच्चे का
भविष्य भविष्य अन्धकारमय हो जाता है और अपने स्वभाव
विपरीत विषय में वह अपनी प्रतिभा का विकास नहीं कर
कता। अतएव माता-पिताओं को चाहिए कि जिस विषय की
ओर बच्चे का दिल जाता है उसी विषय को अध्ययन करने की
से आज्ञा दें।

माता-पिताओं को यह बात ध्यान में रखना चाहिए कि
च्चों की स्वाभाविक गति में बाधा उपस्थित करना, मानो
नकी कार्य-संपादन शक्ति को नष्ट करना है। ऐसे बहुत से
नुष्य देखे जाते हैं, जो बहुत से गुणों से युक्त हैं, पर किसी
रह की कमजोरी तथा कमी के कारण वे अपनी योग्यतानुसार
ार्य नहीं कर सकते, और इसका कारण यही है कि बचपन में
नकी ये कमजोरियाँ और कमतरताएँ नहीं निकाली गईं जो कि
स समय सहज साध्य थीं। केवल योग्यता का होना काफी नहीं,
न उस योग्यता को उपयोग करने की शक्ति का होना भी
सके साथ साथ आवश्यक है।

यदि बच्चों को निश्चयात्मक और इच्छाशक्ति को बढ़ाने की
ाला दी जावे तो मेरी समझ में यह उनके लिए बहुत मौलिक
और महत्त्वपूर्ण होगी। बच्चों को सिखाना चाहिए कि वे अपने
न को सर्वोच्च उपज शक्ति की ओर कैसे लगा सकते हैं?

बच्चों को यह शिक्षा देना बहुत ज़रूरी है कि वे अपने जीवन
में सुख, शान्ति और [illegible] प्राप्त कर सकें [illegible]
[illegible]

यह समय शीघ्र ही आने वाला है—वह प्रभात शीघ्र ही ने वाली है, जब कि ऐसी शिक्षाओं से नवयुवक विभूषित किये गे जिससे कि वे अपनी योग्यता का बखूबी उपयोग कर सकें र अपने ज्ञान का हर समय उपयोग कर सकें और सर्व साधा- में बिना किसी हिचकिचाहट से अपने मन्तव्यों को साहस- क प्रकाशित कर सकें। आत्म-संयम और आत्म-विश्वास का पाठ पढ़ाया जायगा। भविष्य में जो शिक्षा दी जावेगी उस सार यही होगा कि जो कुछ विद्यार्थी जानता है, उसका वह चाहे तब प्रकाश कर सके—अपनी विद्या का इच्छानुसार ोग कर सके।

हम देखते हैं बहुत से विश्वविद्यालय के उपाधिधारी ग्रेजूएट से विषयों में वैसे ही कमजोर और गतिहीन निकलते हैं, जैसे ालेज में प्रवेश करने के समय थे। वह शिक्षा किस काम की में लड़कों को अपनी शक्तियों का—अपनी परिस्थिति का ी होना न सिखाया जावे, जिसमें लड़कों को यह न बताया कि अपनी विद्याबुद्धि का काम पड़ने पर फौरन उपयोग कैसे ा जा सक्ता है।

कालेज का वह ग्रेजूएट जो डरपोक है, शंकाशील है—जो नक में या दूसरे किसी स्थान में काम पड़ने पर अपनी शिक्षा- का प्रकाश नहीं कर सकता, कभी महत्व प्राप्त नहीं कर ता, कभी समाज में उसका वज़न पैदा नहीं हो सकता। पड़ने पर जिस ज्ञान का उपयोग न हो सके, वह ज्ञान किस ा का?

वह समय आ रहा है जब कि हर बच्चे को अपने ज्ञान में

आज कल के कालेजों की कुशिक्षा

देखा जाता है कि बहुतसे विद्यार्थीगण अपने मगज़ को विद्या से भरपूर भर कर स्कूल तथा कॉलेज से निकलते हैं, पर उनमें आत्मिक योग्यता तथा आत्म-विश्वास कुछ भी नहीं होता। वे अब भी उसी तरह भीरु, शंकाशील, हतोत्साही रहते हैं, जैसे कालेज में भर्ती होने के समय में थे।

अब आप ही कहिए कि लड़के को विद्या में धुरन्धर करके संसार में भेजने से कैसे लाभ हो सकता है, जब कि उसमें यह शक्ति नहीं है कि वह अपने आत्म-विश्वास और निश्चय को ठीक ठीक काम में ला सके। उसमें तो वह कार्य-संपादन-शक्ति बल और उत्साह नहीं है, जो सफलता की कुंजी है।

मेरी राय में स्कूल तथा कालेज के लिए यह बड़े शर्म की बात है कि उसमें से ऐसे नवयुवक निकलें, जो छाती पर हाथ ठोक कर साहसपूर्वक इस बात को नहीं कह सकते कि हमारी आत्माएँ हमारी हैं और उनमें आत्म-विश्वास और निश्चय की मात्रा कुछ भी नहीं है। हमारे कालेजों से प्रतिवर्ष ऐसे हज़ारों लड़के निकलते हैं कि जिनका शिक्षण अब भी वैसा ही रहता है, जैसा कालेज में भर्ती होने के पहले था। हम देखते हैं कि बहुतसे कालेज के ग्रेजूएट उस दफा खिसियाने लगते हैं, जब उन्हें पब्लिक में व्याख्यान देने के लिए कहा जाता है। मनुष्यों की मण्डली में उठकर बोलना उनके लिए कठिन हो जाता है। दो सौ चार सौ मनुष्यों की मण्डली में वे किसी प्रस्ताव को नहीं पढ़ सकते, पढ़ना तो दूर रहा उसका अनुमोदन भी नहीं कर सकते।

यह समय शीघ्र ही आने वाला है—वह प्रभात शीघ्र ही
गने वाली है, जब कि ऐसी शिक्षाओं से नवयुवक विभूषित किये
ावेंगे जिसमे कि वे अपनी योग्यता का बखूबी उपयोग कर सकें
ौर अपने ज्ञान का हर समय उपयोग कर सके और सर्व साधा-
ण में बिना किसी हिचकिचाहट से अपने मन्तव्यों को साहस-
ूर्वक प्रकाशित कर सकें। आत्म-संयम और आत्म-विश्वास का
न्हें पाठ पढ़ाया जायगा। भविष्य में जो शिक्षा दी जावेगी उस
ा सार यही होगा कि जो कुछ विद्यार्थी जानता है, उसका वह
ब चाहे तब प्रकाश कर सके—अपनी विद्या का इच्छानुसार
पयोग कर सके।

हम देखते हैं बहुत से विश्वविद्यालय के उपाधिधारी ग्रेजुएट
हुत से विषयों में वैसे ही कमजोर और गतिहीन निकलते हैं, जैसे
कालेज में प्रवेश करने के समय थे। वह शिक्षा किस काम की
समें लड़कों को अपनी शक्तियों का—अपनी परिस्थिति का
ामी होना न सिखाया जावे; जिसमें लड़कों को यह न बताया
वे कि अपनी विद्याबुद्धि का काम पड़ने पर फ़ौरन उपयोग कैसे
या जा सकता है।

कालेज का वह ग्रेजुएट जो डरपोक है, शंकाशील है—जो
ैतिक में या दूसरे किसी स्थान में काम पड़ने पर अपनी विद्या-
द्धि का प्रकाश नहीं कर सकता, कभी महत्व प्राप्त नहीं कर
कता, कभी समाज में उसका वज़न पैदा नहीं हो सकता।
म पड़ने पर जिस ज्ञान का उपयोग न हो सके, वह ज्ञान किस
म का?

यह समय आ रहा है जब कि हर बच्चे को अपने घर में

विश्वास करना—अपनी योग्यता पर भरोसा रखना सिखाया जायगा। मेरी समझ में यह बात उसकी शिक्षा का प्रधान अंग होगी क्योंकि जब वह अपने आप में पूर्ण विश्वास करने लगेगा तब वह किसी प्रकार की कमजोरी को पास फटकने न देगा।

बच्चे के मन में इस दिव्य विचार को जमा देना चाहिए कि दयासागर परमात्मा ने उसे संसार में किसी खास उद्देश्य की पूर्ति के लिए भेजा है और उसके हाथ से जरूर उस उद्देश्य की पूर्ति होगी।

हर नवयुवक को सिखाना चाहिए कि संसार में वह उस महान् पद पर आसीन होगा जिस पर संसार के महान् पुरुष हुए हैं। उसे सिखाना चाहिए कि वह ईश्वर का अंश है; सब दैवी शक्तियाँ उसमें भरी हुई हैं; अतएव वह कभी किसी भी दशा में असफल नहीं हो सकता। उसे सिखाना चाहिए कि तुम्हारी आत्मा में वह दिव्यता मौजूद है जो संसार को अलौकिक प्रकार से प्रकाशमान कर सकती है। उसे सिखाना चाहिए कि संसार में वह अपने आप को महत्वपूर्ण समझे। इस तरह की शिक्षा से मैं निश्चय-पूर्वक कहता हूँ कि उसका आत्म-सम्मान बढ़ेगा—उसका मानसिक और शारीरिक विकास होगा और उसका जीवन दिव्यता से परिपूर्ण हो कर सुखपूर्ण, तथा शान्ति-पूर्ण सफलता का अनुभव करेगा।

विश्वास करना—अपनी योग्यता पर भरोसा रखना सिखा जायगा। मेरी समझ में यह बात उसकी शिक्षा का प्रधान अं होगी क्योंकि जब वह अपने आप मे पूर्ण विश्वास करने लगे तब वह किसी प्रकार की कमज़ोरी को पास फटकने न देगा।

बच्चे के मन में इस दिव्य विचार को जमा देना चाहिए कि दयासागर परमात्मा ने उसे संसार में किसी खास उद्देश्य की पूर्ति के लिए भेजा है और उसके हाथ से ज़रूर उस उद्देश्य की पूर्ति होगी।

हर नवयुवक को सिखाना चाहिए कि संसार में वह उस महान् पद पर आसीन होगा जिस पर संसार के महान् पुरुष हुए हैं। उसे सिखाना चाहिए कि वह ईश्वर का अंश है; सब दैवी शक्तियाँ उसमें भरी हुई हैं; अतएव यह कभी किसी भी दशा में असफल नहीं हो सकता। उसे सिखाना चाहिए कि तुम्हारी आत्मा मे वह दिव्यता मौजूद है जो संसार को अलौकिक प्रकार से

अपनी शक्ति को खोते जाते हैं और लगे हाथ ही इस बात पर आश्चर्य करने लगते हैं कि हमारी शक्तियाँ क्यों क्षीण हुई जा रही हैं। हम अपनी शक्तियों को इस तरह दूषित और क्षीण कर अपने आप अपने पैरों में कुल्हाड़ी मारते हैं। जहाँ कहीं हमें दीर्घ-जीवन दिखाई दे समझ लेना चाहिए कि जरूर यह जीवन आत्म-संयम द्वारा बिताया जा रहा है।

जैसा कि हमारा ध्यान पैसा कमाने की ओर रहता है वैसा ही ध्यान यदि हम अपने यौवन और बल को बनाए रखने में रखें तो हमारा यौवन और बल दिन बदिन क्षीण होने के बजाय दिन दूना रात चौगुना हरा भरा और प्रफुल्लित रहेगा।

मनुष्य की दशा उस घड़ी के समान है, जो यदि ठीक रीति से रक्खी जावे तो सौ वर्ष तक काम दे सकती है और यदि लापरवाही से रखी जावे तो बहुत जल्दी बिगड़ जाती है।

यह देखकर सचमुच बड़ा आश्चर्य होता है कि हम सब लोग जीवन पर इतना प्रेम करते हैं, उससे गहरे चिपके हुए रहते हैं, पर हम उसे बुरी रहन-सहन और बुरे आचार-विचार के कारण नष्ट भी करते जा रहे हैं। हमारे जीवन के बहुत से अमूल्य दिन इसी तरह नष्ट होते जा रहे हैं।

जब तक हम बुढ़ापे ही के ख्याल में गर्क रहेंगे, बुढ़ापे ही की कल्पनाओं में गोते लगाते रहेंगे बुढ़ापे ही के स्वप्न देखते रहेंगे, तब तक हम बूढ़े ही होते जावेंगे। हमारे विचार, हमारी कल्पनाएँ, हमारी प्रकृति और अभिलाषाओं के विरुद्ध ठीक वैसे ही काम करने लगेंगे जैसे असफलता का भय और संशय हमारे धन कमाने के प्रयत्न के विरुद्ध काम करने लगते हैं।

हमारा मानसिक आदर्श इस बात को बता देता है कि हमारे जीवन में यौवन की इमारत बन रही है या बुढ़ापे की। हरएक मनुष्य में एक स्वाभाविक शक्ति भरी हुई है, जिससे कि वह जीवन को बढ़ा सके—अपनी आयु को दीर्घ कर सके, पर इसके लिए आवश्यक है कि पहले वह मानसिक तत्व को भली भाँति समझ ले।

जो मनुष्य यह कहा करता है कि अब हमारे गिरते हुए दिन हैं—अब हमारा शरीर दिन दिन क्षीण ही होगा—बुढ़ापे के कारण हमारा बल घटेगा, उसके लिए पूर्ण स्वास्थ्य हृष्ट-पुष्टता प्राप्त करना एकदम असम्भव है।

मन ही अपने लिए जीवन का रास्ता बनाता है और मृत्यु का रास्ता भी मन ही में तैयार होता है। विचार [illegible] की सीमा को निश्चित कर देते हैं।

बहुत से मनुष्य इस बात को नहीं जानते कि [illegible] सिक भाव ही में वह कार्योत्पादक शक्ति है, जो [illegible] त्पादक फलों को उत्पन्न करती है। जब जब [illegible]

उसकी प्राप्ति के लिए यत्न किया करें तो बुढ़ापा हमसे अवश्य ही दूर रहा करेगा।

प्रेन्टिस मलफोर्ड नामक लेखक कहते हैं कि यदि तुम तीस या पैंतीस वर्ष ही की उम्र में बुढ़ापे के स्वप्न देखने लगो, तो पचास तथा पचपन बरस की उम्र में तुम पूर्ण वृद्ध हो जाओगे। तुम्हारे शरीर में झुर्रियाँ पड़ जायँगी शरीर की कार्य कारिणी शक्ति चली जायगी। इसका कारण यह है कि तुम्हारे बुढ़ापे के विचार तुम्हारे यौवन को निकाल कर उसका स्थान बुढ़ापे को दे देंगे। यदि तुम यह देखते रहोगे कि हमारा शरीर क्षीण हुआ जा रहा है, तो वह अधिकाधिक क्षीण होगा। वे मनुष्य जो अपने मनको यौवन के विचारों से हराभरा रखते हैं, उनके शरीर पर यौवन साफ झलकने लगता है। बहुत से मनुष्य साठ ही वर्ष की उम्र की अवस्था में बूढ़े दीखने लग जाते हैं, इसका कारण यही है कि उनका शुरू ही से यह विचार रहा है कि साठ वर्ष की अवस्था बुढ़ापा है।

मानव समाज के मन में यह एक भारी भ्रम जम रहा है कि पचास पचपन वर्ष की उम्र के बाद मनुष्य की ढलती दशा का आरम्भ हो जाता है। इस उम्र के बाद उसकी शारीरिक और मानसिक शक्तियाँ नष्ट होने लगती हैं। बड़े ही शोक का विषय है कि मनुष्य जो कि ईश्वर का सर्वश्रेष्ठ और सर्वोत्कृष्ट पुत्र है, उसकी ढलती हुई अवस्था का प्रारम्भ पचास वर्ष ही की उम्र में हो जावे। ऐसी उम्र के बाद तो उसके शरीर और मन की शक्ति बढ़ना चाहिए।

के   ऐसे प्रकाश या उसकी आन्तरिक दिव्य ज्योति के चमकने का
समय तीस वर्ष से शुरू होता है। क्यों कभी परमात्मा
की मर्जी हो सकती है कि हम लोग पचास साठ वर्ष की उम्र में
ढलती अवस्था पर पहुँच जावे, जब कि हमारे पूर्ण यौवन का
प्रारम्भ ही तीस वर्ष से शुरू होता है। आप प्राणि-संसार की
ओर दृष्टि डालिए, तथा वनस्पति संसार की ओर नजर फेंकिए
तो आपको मालूम होगा कि किसी जानवर को जीवन प्राप्त करने
में जितना समय लगता है, उससे वह चौगुना जीता है। वनस्पति
का भी यही हाल है। उसको पूरी तरह फलने फूलने को जितना
समय लगता है उससे तिगुने समय में वह मुर्झाती नहीं। जब
जानवरों और वनस्पति का यह हाल है तो मनुष्य के लिए यह
असम्भव है कि उसके पूर्ण यौवन खिलने को जितना समय लगे
उससे वह चौगुना न जी सके। अवश्य ही हम लोग अपनी
शक्ति और बल को कमसे कम उस समय तक बराबर रख
सकते हैं, जब तक कि हमारी उम्र अस्सी के उस पार न चली
जावे।

सर हरमन वेबर नामक सुप्रसिद्ध अंगरेज डाक्टर कहते हैं
कि मनुष्य मजे में सौ वर्ष जीता रह सकता है।

कवि स्टेडमन का कथन है—"मनुष्य सत्तर वर्ष की उम्र ही
को क्यों पूरा समझते हैं? वे यदि स्वास्थ्य और बल को
प्राप्त करें तो क्या पाँच सौ वर्ष तक नहीं जी सकते? क्या वे
नहीं चाहते कि पचास वर्ष तक हम सुख पूर्वक प्रवास करते
रहें, पचास वर्ष तक नये नये अविष्कारों को आविष्कृत करते रहें;
पचास वर्ष तक किसी राजनीतिज्ञ के पद पर काम करें, पचास

वर्ष तक डाक्टरी का काम करें पचास वर्ष तक नये नये ग्रन्थ लिखें और शेष में दुनिया के दूसरे दूसरे काम करे।

मनुष्य तब तक बूढ़ा नहीं होता जब तक कि उसके जीवन में मधुरता और उत्साह बना रहता है, जब तक कि उसके हृदय में महत्वाकांक्षा बनी रहती है—जब तक कि उस के खून में कार्य-शक्ति का प्रवाह बहता रहता है।

मनुष्य की उम्र चाहे कम ही क्यों न हो, पर यदि यौवन के विचार उसके मन से निकल गये हैं—उसका उत्साह ढीला पड़ गया है—उसका कार्य-कर बल कमजोर हो गया है, तो उसे बूढ़ा ही समझना चाहिए।

इस कल्पना से कि अमुक उम्र के बाद मनुष्य की ढलती अवस्था का आरम्भ हो जाता है—उसकी इच्छाएँ मन्द होने लगती है—इसने मानव समाज का बड़ा नाश किया है।

हम अपने आप को बूढ़े समझने लगते हैं। हमारे विचार भी ऐसे ही हो जाते हैं। इसका फल यह होता है कि बुढ़ापा हमें जल्दी जल्दी घेरने लगता है। तब तक हम बूढ़े ही होते जावेंगे जब तक कि हम अपने बुढ़ापे के विचारों को यौवन के—स्वास्थ्य के-हृष्ट-पुष्टता के—उत्साह के-विचारों में न परिणित कर दें।

"हम एक दिन अवश्य ही बूढ़े होंगे" इस कल्पना ने मानव समाज के मन में बुरी तरह जड़ जमा ली है। यही कारण है कि बहुत से मनुष्यों के मुख तथा शरीर पर शीघ्र ही बुढ़ापे के चिन्ह दीखने लगते हैं।

जब हम यह विश्वास करने लगेंगे कि जीवन का मुख्य तत्व ईश्वरीय तत्व से प्रकट हुआ है, अतएव उस तत्व पर समय का

लिखी है। उक्त मिती के दो तीन दिन पूर्व से वह अपनी मृत्यु की तैयारी करने लगा। उसकी सब मनोवृत्तियाँ मृत्यु की ओर खिंच गईं। आश्चर्य इस बात का है कि वह अभागा उसी दिन मर भी गया। पाठकगण! क्या आप इसका कारण समझे? उसके मृत्यु-सम्बन्धी विचारों ही ने उसका घात किया—उसके इस दुर्विश्वास ने ही मृत्यु-मुख में उसे ढकेला। उस ज्योतिषी ने उसकी जन्मपत्री में यह लिख कर कि वह अमुक दिन मर जायगा, उसकी मृत्यु होने में सहायता दी।

--

लागत मूल्य पर हिन्दी पुस्तक प्रकाशित कर

सेठ घनश्यामदासजी बिड़ला, सेठ जमनालाल जी बजाज द्वारा स्थापित

भारतवर्ष की एक मात्र सार्वजनिक संस्था

सस्ता-साहित्य-मण्डल

अजमेर की

पुस्तकों का सूचीपत्र

मण्डल के स्थायी ग्राहक बनकर सब पुस्तक

पौने मूल्य में मंगा सकते हैं

(५) नई पुस्तकें प्रकाशित होने पर उन्हें भेजने के पंद्रह दि
ग्राहकों के पास पुस्तकों के नाम विवरण, मूल्य आदि की
भेज दी जाती है। पन्द्रह दिन बाद पोस्टों कॉलम से वी॰
द्वारा पुस्तकें ग्राहकों के पास भेज दी जाती हैं।*

(६) मण्डल से ग्राहक नम्बर की सूचना मिलते ही अपने यहां की
मैं या पुस्तकों पर बाहर सुन्दर लिख लेना चाहिए। पत्रव्यवहार
समय, यह नम्बर जरूर लिख भेजना चाहिए। बिना ग्राहक
लिखे यदि कोई सज्जन पुस्तकों का आर्डर भेज देंगे और हमारे य
से मूल्य में पुस्तकें नहीं जायँगी तो उसके जिम्मेदार हम न हैं

आवश्यक सूचनाएँ

(१) वी॰ पी॰ द्वारा पुस्तकें मंगाकर लौटा देने से हमारी बड़ी
होती है। एक तो पुस्तकें वापस आने में खराब हो जाती हैं, दूसरे पोस्टेज
व्यर्थ में होती है। इसलिए कृपा कर पहले से ही सोच समझ कर पुस्
मंगाइए। देशभाई के नाते इस संस्था की हानि आप ही की हानि है

(२) ग्राहकों को अपना नाम, गाँव, पोस्ट, और ज़िला तथा अधिक
मंगानेवालों को अपने स्टेशन का नाम तथा रेलवे लाइन का नाम खूब सा
साफ लिख भेजना चाहिए।

(३) रेल द्वारा पुस्तकें मँगानी हों तो आर्डर के मूल्य के चौथाई रुप
पेशगी भेजना चाहिए। अन्यथा पुस्तक नहीं भेजी जावेगी। इसी तरह दस या इस
अधिक मूल्यकी पुस्तकें मँगानेवालोंको तीनचार रुपये पेशगी भेजना चाहिए

(४) किसी वी॰ पी॰ में हिसाब संबंधी या और किसी तरह की कोई
भूल जान पड़े, तो उसे लौटाना न चाहिए। वी॰ पी॰ छुड़ा कर हमें लि
भेजें। भूल तुरन्त ठीक कर दी जावेगी।

निवेदक—जीतमल लूणिया मन्त्री, सस्ता-मंडल, अजमेर।

---

* नई पुस्तकों में से यदि कोई एक दो पुस्तक न लेनी हो अथवा और कोई
पुस्तक साथ में मंगानी हो तो सूचना-पत्र मिलते ही हमें लिख देना चाहिए।
पंद्रह दिन के अन्दर कोई सूचना न मिलने पर ... वी॰ पी॰ द्वारा
भेज दी जाती हैं।

(८) तामिल-वेद—(ले० अछूतसंत ऋषि तिरुवल्लुवर) मू० ले० श्रीचक्रवर्ती राजगोपालाचार्य—अनु० श्री क्षेमानन्द राहत

"दक्षिण में इस ग्रन्थ का आदर वेदों के समान है। वहाँ यह पांचवां वेद कहलाता है। इसमें धर्म और नीति के ऐसे मूल सिद्धान्तों का उपदेश किया गया है जिससे मनुष्य के जीवन का दिन रात काम पड़ता है। पुस्तक की रचनाशैली बड़ी सरल और बोधगम्य है" (सरस्वती) पृष्ठ २४८ मूल्य ॥=)

(९) शैतान की लकड़ी—(अर्थात् भारत में व्यसन और व्यभिचार का दौरदौरा) सारा समाज व्यसन और व्यभिचार में आकण्ठ फंसा हुआ है। समाज की हालत देखकर आपका दिल दहल जायगा। व्यसनों में हम करोड़ों रुपये बरबाद कर रहे हैं और व्यभिचार तो हमारे जीवन-सत्व को ही नष्ट कर रहा है। इसे मंगाकर पढ़िए और अपने आपको तथा बालकों को इन बुराइयों से बचाने की कोशिश कीजिए। पृष्ठ ३६५ मूल्य ॥।=) इसके लेखक हैं श्री वैजनाथ महोदय बी० ए०। पुस्तक में कई चित्र भी हैं।

(१०) अन्धेरे में उजाला—(टालस्टाय का उत्कृष्ट नाटक) सर्वस्व त्याग देशसेवा व आत्मोन्नति करना ही जीवन का सार है, यही इस नाटक विषय है। पृष्ठ लगभग १६० मूल्य ।≡)

(११) सामाजिक कुरीतियाँ—(ले० महात्मा टॉलस्टॉय) टालस्टॉय लेखों ने और ग्रन्थों ने रूस और यूरोप के पढ़े-लिखे लोगों में महान् क्रांति उत्पन्न कर दी है। भारतीय पाठकों के लिए भी यह बहुत उपयोगी है। पृ० २८० मूल्य ॥≡)

(१२) तरंगित हृदय—(ले० पं० देवशर्मा विद्यालंकार) मू० ले० पं० पद्मसिंह शर्मा—एक प्रतिभाशाली हृदय संसार का अवलोकन करता है और उसमें विचारों की अद्भुत और स्फूर्तिजनक तरंगें—विचारों की तरंगें—उठती हैं, यह उन्हीं का संग्रह है। पृष्ठ १७६ मू० ॥) हिंदी संसार ने इसकी बड़ी प्रशंसा की है।

(१३) भारत के स्त्रीरत्न—(दो भाग) प्राचीन भारत के प्रायः हर धर्मों और सभी जातियों की आदर्श-पतिव्रता, वीर, विदुषी और भक्त लगभग ६० महिलाओं के ओजस्विनी भाषा में लिखे गये जीवन चरित्र। प्रथम भाग पृष्ठ ४१० मूल्य १) दूसरा भाग पृष्ठ ३२८ मूल्य ॥।-)

(१४) कन्याशिक्षा—बालिकाओं के लिए। पृष्ठ ९४ मू० ।) द्वितियावृत्ति

(२५) आत्म-कथा—[म० गांधीजी के 'सत्य ना प्रयोगो' अ
'आत्म-कथा' का हिन्दी अनुवाद] अनुवादक पं० हरिभाऊ उपाध्याय। इस प्र
रत्न का परिचय देना व्यर्थ है। पृष्ठ ४१६ प्रचार के लिये मूल्य केवल
रक्खा गया है। अंग्रेजी में इस पुस्तक का मूल्य ५) है। यह प्रथम खण्ड

(२६) स्वामीजी (श्रद्धानन्द) का बलिदान और हमारा कर्त
अर्थात् हिन्दू-मुस्लिम समस्या—ले० पंडित हरिभाऊ उपाध्याय—आज
समस्या ने देश को जितना परेशान कर रक्खा है उतना और किसी ने न
इस पुस्तक में निष्पक्ष भाव से सभी पहलुओं पर विचार किया गया
पृष्ठ १२५ मूल्य ।-) दूसरी बार छपी है।

(२७)शिवाजी की योग्यता—(ले० गोपालदामोदरतामस्कर एम. ए
भारत में स्वराज्य स्थापना करने वाले इस वीर महापुरुष के जीवन रहस्य
बड़े अच्छे ढंग से समझाया गया है। पृष्ठ १२१ मूल्य ।=) तीसरी बार छपी है

(२८) यूरोप का सम्पूर्ण इतिहास—(तीन भागों में) यूरोप का इतिहा
स्वाधीनता का तथा जागृत जातियों की प्रगति का इतिहास है। राज्यों की स्थ
पुथल के वर्णन के साथ ही इस पुस्तक में यह भी दिखलाया गया है कि भा
रतीय लोगों को उन घटनाओं से क्या शिक्षा लेनी चाहिए और अपने देश क
किस तरह स्वतंत्र करना चाहिए। पृष्ठ ८२० मू० २)

(२९) समाज-विज्ञान—शुरू से लेकर अबतक मानव-समाज किस त
प्रगति करता गया उसका यह इतिहास है। धर्म, राजसत्ता, नीति, सामाजि
रीतिरिवाज, वैवाहिक पद्धतियां आदि विषयोंपर भारतीय और पश्चिमी लेख
और विचारकों के विचार लिखकर लेखक ने अपने विचार भी प्रकट किये है
हिन्दी में इस विषय की यह पहलीही मौलिक पुस्तक है। पृष्ठ ५८० मूल्य १

(३०) हमारे ज़माने की गुलामी—(टाल्सटाय) इसमें आधुनि
सभ्यता, सरकारें और यन्त्रयुग की भयंकर टीका और समाज को उसकी गुलाम
से बचाने के उपाय बताये गये हैं। पृष्ठ १०० मल्य ।)

(३१) खद्दर का सम्पत्ति शास्त्र—(श्री रिचार्ड ग्रेग की "Econo
mics of Khaddar" का हिन्दी अनुवाद) अनु० श्रीरामदास गौड़ एम० ए
यह वही पुस्तक है जिसकी महात्मा गांधी जी ने, लाजपतराय जी ने
देश के अन्य विचारशील लोगों ने प्रत्येक भारतवासी को पढ़ने की सिफारिश
की है। पृष्ठ संख्या लगभग ३२४ मूल्य ॥।=)

(३८) स्वाधीनता के सिद्धान्त—(ले० टेरेन्स मैक्स्विनी) प्रत्येक ...
...ीय विद्यार्थी के पास यह पुस्तक होनी चाहिए। संसार में इस पुस्तक का ...
...ादर है। पृष्ठ १०८ मूल्य ॥)

(३९) जब अंग्रेज़ नहीं आये थे?—उस समय भारतवर्ष की कै...
...उत्तम दशा थी यह अंग्रेजी शासन की ओर से छिपाई हुई कमेटी की ही रिपो...
...है। प्रत्येक भारतवासी के जानने की चीज़ है। पृष्ठ १०० मूल्य ।)

(४०) महान् मातृत्वकी ओर—स्त्री-जीवन के प्रारम्भिक कठिनाइ...
...का दिग्दर्शन कराती हुई गार्हस्थ्य जीवन का जिम्मेदारियों को दिखलाती हुई
...अपने जीवन को पवित्र और सुखमय बनाने वाली स्त्रियों के लिए बड़ी ही सुन्द...
...पुस्तक है। पृष्ठ २८० मूल्य ॥।=)

(४१) हिन्दी मराठी कोष—(रचयिता श्री पुंडलीक) राष्ट्र-भाषा प्र...
...के कार्य-क्रम में इस कोष का एक विशेष स्थान है। हिन्दी पढ़ने वाले प्रत्येक म...
...राष्ट्रीय भाई के लिए यह बड़े काम की चीज है। मराठी भाषा के थोड़े बहु...
...जानकार हिन्दी भाषी भी इससे बहुत लाभ उठा सकते हैं। इस कोष में हि...
...भाषा के मुहावरों का भी एक छोटासा कोष है। पृष्ठ ३०२(बड़े साइज़ के) मू० १

अन्य उपयोगी पुस्तकें—मंडल के ग्राहक बन जाने ...

नीचे लिखी पुस्तकें भी पौनी कीमत में मिलेंगी।

(१) भारत के हिन्दू सम्राट् (भू० लेखक रा० ब० गौरीशं...
...हीराचंद ओझा) प्राचीन काल में सम्पूर्ण भारत पर शासन करने वाले सम्र...
...चन्द्रगुप्त, बिन्दुसार, अशोक, कनिष्क, समुद्रगुप्त, कुमारगुप्त, स्कन्दगुप्त हर्षवर्...
...आदि अनेकों सम्राटों का प्रमाणपूर्ण इतिहास है। मूल्य १॥) राज-संस्करण का २

(२) भगवान महावीर—महात्मा बुद्ध के समकालीन भगवान म...
...वीर का यह सबसे बड़ा, उत्तम और प्रामाणिक जीवन चरित्र प्रकाशित हुआ है।
...इसे पढ़ने से चित्त में पवित्रता का झरना बहने लगता है। बड़ी ही सुन्दर पु...
...है। सजिल्द मूल्य ४॥) आर्ट पेपर पर छपा हुआ राजसंस्करण का मूल्य ...

(३) सूर्य-ग्रहण—शिवाजी के समय का ऐतिहासिक उपन्यास—अ...
...बाबू रामचन्द्र वर्मा मूल्य २॥) मूल लेखक पं० हरिनारायण आपटे एम०

(४) पौराणिक कथायें—इसमें भिन्न भिन्न पुराणों से संकलित प्रा...
...भारत के महापुरुषों तथा सती देवियों के जीवन की विशेष विशेष घटनाओं ...
...[illegible] ... ४२५ पृष्ठों की सजिल्द पुस्तक का मूल्य २॥॥